साहित्य

वेमना

नार्ल वेंकटेश्वर राव

H
891.48213
V 549 V

भारतीय
साहित्य के

H
891.48213
V 549 V

वेमना जनता के कवि, स्वतन्त्रता और समता के दार्शनिक, उदग्र संत और अनेक दृष्टियों से अद्वितीय थे। मध्ययुग के कबीर, नानक, चैतन्य आदि दूसरे महान् सन्तों की अपेक्षा यद्यपि वे अल्पज्ञात थे, फिर भी उनकी शिक्षा की आज भी समसामयिक सार्थकता है; क्योंकि वे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा मानवता के बंधुत्व के स्वप्नदृष्टा थे। इस पुस्तिका के लेखक श्री नार्ल वेंकटेश्वर राव एक प्रतिष्ठित पत्रकार तथा तेलुगु और अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध लेखक हैं। उन्होंने इस रचना में वेमना के बहुमुखी व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू को स्पष्टता से अंकित किया है।

२.५०

CATALOGUED

वेमना

भारतीय साहित्य के निर्माता

वेमना

लेखक :

नार्ल वेंकटेश्वरराव

अनुवादक :

ए० रमेश चौधरी

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

Vemana : Hindi translation by A. Ramesh Chaudhary of the English monograph by V. R. Narla. Sahitya Akademi, New Delhi, 1971. Price Rs, 2.50.

Library IIAS, Shimla
H 891.48213 V 549 V
00054681

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 54681
Date 8.7.76

H
891.48213
V549 V

प्रथम संस्करण : १९७१ 1971

8\12

© साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

मूल्य : दो रुपये पचास पैसे

मुद्रक : भारती प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा-दिल्ली-३२

अपने अगाध स्नेह के प्रतीक
के रूप में :
के० एल० प्रसाद को

अनुक्रम

प्राक्कथन	६
वे मरने के लिए नहीं जनमे	१३
गाथाओं की गोद में	२१
मन्द और अनिश्चित प्रदीप	२६
वे मनुष्य थे	३६
अन्धकार की दुहरी रात	४२
कवि बोल उठा	४७
प्रकृति का दार्शनिक	५६
सच्चा और विरला प्रतिभाशाली	६५
अनुवाद	७१
सन्दर्भ-ग्रन्थों की सूची	७६
शब्द-संग्रह और टिप्पणियाँ	८२

प्राक्कथन

जब मैंने साहित्य अकादेमी के लिए यह पुस्तिका लिखना स्वीकार किया था, तब मुझे भय था कि यह काम कष्टसाध्य होगा। और मेरा भय ठीक निकला। तेलुगु में निस्सन्देह वेमना के बारे में कई पुस्तकें हैं, पर उनमें से अधिकांश में कपोल-कल्पित बातों को, प्रामाणिक तथ्यों के रूप में स्वीकार किया गया है। तेलुगु में वेमना की एक ही आलोचनात्मक जीवनी है—अंग्रेजी में तो है ही नहीं; और वह भी सन्तोषजनक नहीं है। उसके लेखक ने तथ्यों पर अपने निष्कर्ष साथ दिए हैं। उसमें और भी दोष हैं। स्रोत-सामग्री की सूची में उसने पिछली पीढ़ी के प्रमुख लेखक चिलकमूर्ति लक्ष्मीनरसिंहम् की वेमना पर लिखी गई पुस्तक का उल्लेख किया है। समय और शक्ति काफ़ी व्यर्थ जाने के बाद मुझे पता लगा कि जिस पुस्तक का वे ज़िक्र कर रहे हैं, वह पुस्तक न होकर गाथाओं की एक बड़ी पुस्तक का छोटा-सा अध्याय था, जिसमें वेमना के बारे में प्रचलित गाथाओं का पिष्टपेषण किया गया था। एक और बात से भी मुझे उसके कारण काफ़ी कष्ट हुआ। वे अपनी जीवनी में कहीं किसी 'मेक्लीन' को उद्धृत करते हैं। कई महीनों की पूछ-ताछ के बाद मुझे मालूम हुआ कि सुनी-सुनाई बातों पर, जिसका उन्होंने उद्धरण दिया था, वे 'मेक्लीन' न होकर, मेजर आर० एम० मेकडानल्ड थे, जिन्होंने १८६६ में वेमना पर एक निबन्ध प्रकाशित किया था।

एक और तेलुगु-लेखक भी, जो अपने को इतिहासकार बताते हैं, काफ़ी भ्रामक सिद्ध हुए। एक पुस्तिका में, जिसे उन्होंने कुछ मास पूर्व प्रकाशित किया, उन्होंने कहा है कि सर विलियम जेम्स ने वेमना को 'भारत का प्लेटो' बताया है। उनके इस कथन की प्रामाणिकता पाने के लिए मैं नई दिल्ली-स्थित पार्लियामेण्ट लाइब्रेरी में जोन्स की सम्पूर्ण कृतियों के पन्नों को व्यर्थ पलटता रहा। ऐसा करना लाज़मी हो गया था; क्योंकि उसमें कोई अनुक्रमणिका नहीं दी गई थी। तब मैंने कलकत्ता की नेशनल लाइब्रेरी और उसी नगर में स्थित एशियाटिक सोसाइटी

को भी लिखा और उनके कृपा-पत्रों से ज्ञात हुआ कि सर विलियम ने वेमना का नहीं, व्यास का ज़िक्र किया था।

स्पष्ट है, वेमना पर जो पुस्तकें तेलुगु में लिखी गई हैं, उनमें काफ़ी त्रुटियाँ हैं। यदि उनमें अपवाद है तो श्री रालपल्ली अनन्तकृष्ण शर्मा की पुस्तक 'लैक्चर्स ऑन वेमना'। परन्तु उनकी यह व्याख्यानमाला कोई चालीस वर्ष पहले प्रकाशित हुई थी। तब से इसमें कोई नई चीज़ नहीं जोड़ी गई है। अंग्रेजी में वेमना के बारे में जो कुछ उपलब्ध है, काफ़ी उपयोगी है, पर वह आसानी से उपलब्ध नहीं है। उदाहरण के लिए सी० आर० रेड्डी की वार्ता टेप पर ही प्राप्त है। मद्रास आकाशवाणी के मित्र श्री दाशरथी की मदद के बग़ैर मुझे उसकी प्रतिलिपि न मिल पाती।

जब मैंने वेमना के बारे में सामग्री इकट्ठी कर ली, तो उसमें बहुत-सी अप्रामाणिक थी, विरोधाभास से भरपूर; कि उसको व्यवस्थित करना बड़ा कठिन काम हो गया। यह स्पष्टतः स्वीकार कर लेना चाहिए कि जहाँ तक वेमना की जीवनी का सम्बन्ध है इस समय कोई निश्चित जानकारी नहीं है, न वह जानी ही जा सकती है। और उसके बारे में अन्य जो सामग्री है, वह भी विवादास्पद है। उसके पद्यों की टेक—'विश्वदाभिराम विनुर वेमा'—भी विवाद का विषय है। यद्यपि इसका साधारणतया स्वीकृत अर्थ है—"संसार को आनन्दित करने वाले, हे वेम, सुन!" बीसियों विद्वान् हैं जो भिन्न-भिन्न रूप से इसका अन्वय करके अपनी इच्छानुसार भिन्न-भिन्न अर्थ बताते हैं। मैंने अपनी तरफ़ से भरसक कोशिश की है कि निष्पक्ष और वस्तुपरक रहूँ। मैं अपनी इस कोशिश में कितना कामयाब रहा, इसका फैसला अपने पाठकों पर छोड़ रहा हूँ।

श्री दाशरथी की सहायता का ज़िक्र मैंने पहले ही किया है। और भी कई हैं, जिन्होंने इस प्रबन्ध के लिए सामग्री जुटाने में मेरी मदद की है। इस सम्बन्ध में 'वाणी' के सहायक सम्पादक श्री डॉ० आञ्जनेयलु, यू० एस० आई० एस० के श्री बी० एम० आर० कृष्ण, मद्रास के फ़्रीडम प्रेस के मालिक श्री बालसुन्दरम्, नूज़वीड के श्री एम० आर० अप्पाराव एम० एल० ए०, वेटपालेम सारस्वत निकेतन के श्री ए० श्रीनिवास राव, हैदराबाद के प्रो० एन० वेंकट राव, और घण्टसाला के जी० वी० सुब्रय्या का विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ।

श्री डी० आञ्जनेयलु ने विलियम हावर्ड केम्पबेल के लेख की टंकित प्रतिलिपि प्राप्त करने के अतिरिक्त इस पाण्डुलिपि के प्रथम चार अध्यायों को भी पढ़ा और कई उपयोगी सुझाव दिये। इसी तरह तिरुपति के श्री रालपल्ली अनन्तकृष्ण शर्मा और श्री ए० जानकी राम का भी मैं कृतज्ञ हूँ। विजयवाड़ा की 'आन्ध्र-

ज्योति' के मेरे मित्र और सहयोगी श्री एन० राममोहन राव ने इस कार्य में हर तरह से मेरी मदद की। इसी प्रकार 'आन्ध्र ज्योति' के ही श्री एम० वी० सुब्बाराव ने भी मेरी सहायता की। मैं इन सबके प्रति कृतज्ञ हूँ।

अन्त में मुझे वेमना का ऋण स्वीकार करना होगा। उनसे प्रेरित होकर मैंने अभी तक आटलवेदी छन्द में, जिसे उनके हाथों परिपूर्णता मिली, करीव छः सौ पद्य लिखे हैं। इस प्रवन्ध द्वारा मैंने उस ऋण के कुछ अंश को चुकाने का यत्न किया है।

—नार्ल वेंकटेश्वर राव

वे मरने के लिए नहीं जनमे

तुम मरने के लिए नहीं जनमे थे—**कीट्स**

हर कसौटी से वेमना महान् कवि हैं—जनमान्यता की दृष्टि से वे तेलुगु के प्राचीन, मध्ययुगीन एवं आधुनिक कवियों में श्रेष्ठ और महानतम हैं। कोई भी—मधुभाषी पोतना उससे आधे भी लोकप्रिय नहीं हैं। वेमना जन-साधारण में राजकुमार-से हैं, वे उनको उन्हींके मुहावरे में सम्बोधित करते हैं और अपना हृदय उसके समक्ष रख देते हैं। जन साधारण कभी-कभी भले ही उनकी कटु वाणी से भुँझलाये, पर वे जानते हैं कि उसके इरादे अच्छे हैं और वे उनको और भी प्यार करने लगते हैं। यदि वे उनको कवि के रूप में प्यार करते हैं, तो दार्शनिक और सन्त के रूप में उनका आदर भी करते हैं। अपनी बात और साफ़ करने के लिए या किसी सत्य या नीति पर वल देने के लिए वे उनको प्रायः उद्धृत भी करते हैं। यह आश्चर्य की वात नहीं है कि एक पाश्चात्य विद्वान् जी० ए० ग्रियर्सन ने, जिन्होंने अपना सारा जीवन भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य के अध्ययन में लगा दिया था, वेमना के वारे में कहा है, "तेलुगु लेखकों में वेमना सवसे अधिक जनप्रिय है, शायद ही ऐसा कोई मुहावरा या कहावत हो, जिसके वे जनक न समझे जाते हों।"

वेमना की लोकप्रियता आन्ध्र के जन साधारण तक ही सीमित नहीं है, वह समीपवर्ती प्रान्तों में भी व्याप्त है। वहुत पहले ही उनके कुछ पद्य तमिल और कन्नड में अनूदित हुए थे। वे कदाचित् पहले कवि नहीं हैं, जिनकी रचनाओं का अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ हो। पर निश्चय ही और कोई कवि ऐसा नहीं है, जिसका इतनी भाषाओं में इतना अनुवाद हुआ हो।

परन्तु तेलुगु-साहित्य-संसार में, वर्तमान शताब्दी के दूसरे दशक तक, वेमना सर्वथा उपेक्षित रहे। तव तक तेलुगु के किसी भी कवि, लेखक, विद्वान्, आलोचक

या साहित्य के इतिहासकार ने वेमना का कहीं जिक्र नहीं किया था, आकस्मिक रूप से या तिरस्कार के तौर पर भी नहीं। तेलुगु साहित्य के दो आदिकालीन इतिहासकार—गुरजाडा श्री राममूर्ति व कन्दकूर वीरेशलिंगम् ने अपने साहित्य के इतिहासों में वेमना को स्थान नहीं दिया। 'आन्ध्र कवुलु चरित्रमु'—(आन्ध्र कवियों की जीवनियाँ), जो श्री राममूर्ति की पुस्तक से भिन्न है और अधिक विस्तृत एवं वहु-समावेशक है और जिसका प्रकाशन १८९९ में हुआ था, उसमें वहुत-से छोटे-मोटे और अज्ञात कवियों का तो वर्णन है, पर वेमना का नहीं; और इसी पुस्तक के (१९१७) द्वितीय संस्करण में और भी वहुत-से कवि जोड़ दिये गए हैं, पर उसमें भी वेमना का वहिष्कार है।

श्री राममूर्ति और वीरेशलिंगम् से भी पहले—१८२९ में चावलि वेंकट स्वामी ने—'वायोग्राफ़िकल स्केचेस ऑफ़ डेक्कन पोयट्स' प्रकाशित किया। उसमें उन्हींके शब्दों में, "दक्षिण के भिन्न-भिन्न प्रान्तों के प्राचीन व आधुनिक प्रसिद्ध कवियों का वृत्तान्त, प्रामाणिक सामग्री के आधार पर दिया गया है।" और यह पुस्तक, जो सम्भवत: किसी भारतीय द्वारा अंग्रेजी में लिखी गई पहली पुस्तक है, तेलुगु कवियों के साथ पक्षपात करती है। इसमें कुल मिलाकर १०८ कवियों का वृत्तान्त है, जिसमें ४७ तेलुगु के हैं, पर इन कवियों में भी वेमना का कहीं नाम नहीं है।

यदि उनकी उपेक्षा इसलिए हुई होती कि उनकी भाषा अप्रचलित थी, या कठिन या क्लिष्ट थी, या उनके विचार अनुचित या पुराने थे, तो भी एक वात होती। पर सत्य ठीक इसके विपरीत है। उनकी भाषा शुद्ध और प्रांजल है, शैली में प्रवाह और स्पष्टता है। उनकी उपमाएँ भी हमेशा उचित, साहसिक और सत्यता से पूर्ण हैं—विद्युत् की तरह जो सारे क्षितिज को सहसा प्रकाशित कर देती हैं। और उनके विचार अपने समय से ही आगे नहीं, वल्कि वर्तमान युग से भी आगे हैं। उनकी कविता में, जैसा कि श्रेष्ठ और सच्ची कविता में होना चाहिए, कुछ ऐसे मौलिक भाव हैं जो अत्यन्त उल्लेखनीय हैं। किंग जेम्स की वाइविल ने, और शेक्सपीयर ने मिलकर अंग्रेजी भाषा को हजारों मुहावरे और उक्तियाँ दी हैं। तेलुगु भाषा भी इस सम्वन्ध में वेमना की ऋणी है। उन्होंने इस भाषा को एक नई धारा, नई शक्ति और सर्वथा नवीन आयाम दिया है। तव फिर साहित्यकारों ने, पीढ़ी-दर-पीढ़ी वेमना को उपेक्षा और तिरस्कार की दृष्टि से क्यों देखा? यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसका स्पष्ट उत्तर देना होगा।

वेमना ने वेद और वैदिक वलियों का, पुराण और उनके काल्पनिक नायकों का, धर्मशास्त्र और उनके सामाजिक न्याय के असमान स्तर का—यही नहीं

सभी धार्मिक ग्रन्थों का, जिनका स्रोत आध्यात्मिक प्रेरणा है या जिनको अकाट्य समझा गया है, उपहास किया है। वे पूर्णतः मूर्तिभंजक हैं, हर तरह की मूर्ति-पूजा के विरुद्ध हैं, वे उनके प्रति भी असहिष्णु हैं जो इसको युक्तियुक्त बताने की चेष्टा करते हैं। वे एक सामाजिक विद्रोही हैं, जो लगातार जात-पाँत के समर्थकों के साथ युद्ध करते रहे। अस्पृश्यता, मनुष्य का मनुष्य के प्रति अक्षम्य अपराध है—इसलिए वे हमेशा इसका विरोध करते रहे। इस कारण वे धार्मिक सनातन पन्थियों की दृष्टि में पाखण्डी और अविश्वासी ही रहे, जिनका नाम तक लेना उन्होंने पाप समझा।

वेमना यद्यपि शिव-भक्त थे, पर उन्होंने लिंग-धारण, व्रतों का पालन, रात्रि-जागरण और तीर्थ-यात्राओं की निन्दा की है। इन कर्म-काण्डों की उनकी निन्दा इतनी प्रबल है कि लिंगधारियों को उन्होंने पाखंडी तक कहा है। अतः प्राचीन शैव लेखक उनसे क्रुद्ध रहे, उनकी उपेक्षा का जो षड्यंत्र-सा चल रहा था, वे भी उसमें शामिल हो गए।

वेमना शूद्र थे। तेलुगु-काव्य-शास्त्र के प्रमाण पुरुष अप्प कवि के नियमानुसार बिना किसी कारण या परीक्षा के शूद्र की कविता अस्वीकार्य समझी जानी चाहिए। उच्च वर्णियों को शूद्रों के प्रति इस कदर घृणा थी कि जब मद्रास सिविल सर्विस के चार्ल्स फिलिप ब्राउन ने १८२९ में—'वर्सेस ऑफ़ वेमना : मौरेल, रिलिजस एण्ड सेटरिकल'—वेमना के नैतिक, धार्मिक और व्यंग्यात्मक पद्य—नामक पुस्तक की ५०० प्रतियों का संस्करण प्रकाशित किया तो ४५० प्रतियाँ रहस्यपूर्ण ढंग से गायब कर दी गईं और बाकी प्रतियाँ सम्पादक को उपहार के रूप में दे दी गईं। दस वर्ष बाद ब्राउन को इसका पता लगा कि जिस कॉलेज-बोर्ड के लिए वह पुस्तक प्रकाशित की गई थी, उसके उच्चवर्णीय पंडितों ने बची हुई प्रतियों को फाड़कर कॉलेज-पुस्तकालय के कबाड़खाने में डलवा दिया था। वेमना के प्रति उनकी घृणा इतनी प्रबल और अटल रही कि मद्रास स्टाफ कोर के मेजर आर० एम० मेकडोनल्ड ने १८६६ में 'मद्रास जर्नल ऑफ़ लिटरेचर एण्ड साइंस' में विस्तार से इस पर टिप्पणी लिखी, जिसका पूर्ण उद्धरण इस प्रकार है :

> डॉ० पोप का कथन है कि वेमना की कृतियाँ तेलुगुभाषियों में बहुत लोकप्रिय हैं और यह लोकप्रियता, मेरा विश्वास है शूद्रों तक ही सीमित है और हिन्दू धर्म के सच्चे अनुयायी, उनके प्रति भी वे ही भावनाएँ रखते हैं, जो ईसाई धर्मोपदेशक कोलेन्सो के प्रति रखते हैं। वेमना की कविताओं को जब सरकारी स्कूलों में पाठ्य-पुस्तक के रूप में रखा गया तो यह भावना और भी प्रबल हुई। अध्यापकों और विद्यार्थियों ने भी पाठ्य-पुस्तक की

भरसक उपेक्षा की। कई तरह के वहाने किये गए, और कहीं-कहीं, इसे पाठ्य-पुस्तक वनाया जाना स्थगित भी करना पड़ा। कहीं-कहीं अध्यापकों ने कुछ पद्य यह कहकर नहीं पढ़ाए कि उनमें उनके धार्मिक विश्वासों पर प्रहार किया गया है। विशेषत: ब्राह्मण इस लेखक को अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते हैं और यह घोषित करते हैं कि इनकी शैली व वस्तु दोनों ही भ्रष्ट हैं।

इसके तीस वर्ष वाद भी यह स्थिति नहीं सुधरी। क्योंकि एक मिशनरी विलियम हावर्ड केम्पवेल ने १८९८ में 'मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज-मेगजीन' में लिखा—"ब्राह्मण हमेशा वेमना की सूक्तियों के विरोधी रहे हैं और अब भी उनकी कृतियों को घृणा की दृष्टि देखते हैं।"

पंडित शब्द के संकीर्ण अर्थ में वेमना पंडित नहीं हैं। पर जैसा कि पहले कहा जा चुका है वे लोकभापा में प्रवीण हैं, वे प्रत्येक शब्द का सूक्ष्म अर्थ तो जानते ही हैं कभी-कभी शब्दों में नये अर्थ की प्रतिष्ठा भी करते हैं और पुराने शब्दों को नये अर्थ देते हैं। उनमें नये मुहावरे और कहावतें गढ़ने की भी प्रतिभा है और वे जव मूड में होते हैं, तो छोटे-छोटे शब्दों में सूक्तियों, उक्तियों, नीति-सिद्धान्तों और प्रवचनों के अंवार लगा देते हैं। पर तेलुगु के विद्या-दम्भियों के लिए यह पर्याप्त नहीं है। उनकी दृष्टि में वे ही व्यक्ति कवि की श्रेणी में परि-गणित हो सकते हैं जिनको 'अमरकोश' व अन्य 'शब्दकोश' जवानी याद हों, जो व्याकरण और पिंगल के अनुसार लिखते हों, जो क्लिप्ट संस्कृत के समासों का उपयोग करते हों, या जो अलंकार-शास्त्र को वगल में रखकर घिसी-पिटी उप-माओं और उत्प्रेक्षाओं का प्रयोग करते हों—एक शब्द में यदि कहा जाय तो जो पारम्परिक रूप से, पारस्परिक विपयों पर, परम्परा के अनुसार लिखते हों वे ही कवि उन्हें ग्राह्य हैं। अन्य व्यक्ति, भले ही वे प्रतिभा और वुद्धि के धनी हों, विचार और अभिव्यक्ति में मौलिक हों, उपेक्षित होते हैं।

वेमना न राजाओं का सम्मान करते हैं, न राजकवियों का ही। उनकी दृष्टि में चार चुटकी आटे के लिए आश्रयदाताओं के मनोरंजन के लिए कविता करना कवि-वृत्ति का ही अपमान करना है। उनका विश्वास है, वही व्यक्ति सच्चा कवि है, जो पूर्णत: स्वतन्त्र और अप्रतिवद्ध है और जिसके पास शाश्वत सन्देश है। पाण्डित्य और विद्वत्ता कोरे आभूषण-मात्र हैं, यदि उनका जीवन एवं मृत्यु की चरम वास्तविकताओं का आभास देने और मानवता के कल्याण में उपयोग न हो। चूंकि अभी तक प्राय: सभी कवि और पंडित किसी-न-किसी राजसभा से सम्वन्धित थे, सत्तारूढ़, सम्पन्न व्यक्तियों की कृपा की लालसा रखते थे, अत: वेमना के विचार, जो उनकी दृष्टि में धृष्टता-भरे थे, अमान्य और असह्य थे।

इसीलिए साहित्य के शस्त्रागार के सबसे अधिक कारगर शस्त्र—मूक उपेक्षा, अपमान से उन्होंने वेमना की हत्या करनी चाही। पर वीरेशलिंगम्-जैसे समाज और धर्म-सुधारक क्यों इस दूषित दल में जा मिले? हो सकता है कि वेमना के तथाकथित पद्यों की अश्लीलता और अशुद्धता ने उनको विकर्षित किया हो। ये पद्य प्रायः वेमना के निन्दकों और दूषकों द्वारा ही उन पर थोपे गए हैं।

वेमना यद्यपि तेलुगु के साहित्यिक प्रतिष्ठान के लिए हमेशा पहेली बने रहे, पर हर पाश्चात्य चिन्तक और लेखक, जो उनकी कृति से परिचित हुआ, उनसे प्रभावित भी हुआ। इनमें सर्वप्रथम थे जे० ए० डुवोइस। उन्होंने अपनी पुस्तक—'हिन्दू मेनर्स, कस्टम्स एण्ड सेरिमनीस' में जिसका अंग्रेजी संस्करण १८७१ में प्रकाशित हुआ, उन भारतीय कवियों का जिक्र किया है जिन्होंने 'दार्शनिक दृष्टिकोण' से लिखा है। वे कहते हैं :

> उनमें वेमना वहुत प्रसिद्ध हैं। हमें वताया गया है कि ये दार्शनिक, जाति के 'रेड्डी' थे और कडपा जिले में पैदा हुए थे। उनकी मृत्यु सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में हुई। उनकी कृतियाँ, जिनके कुछ उद्धरण मैंने देखे हैं, वहुत ही विलक्षण हैं। उनमें विलक्षणता और मौलिकता है।

मद्रास सिविल सर्विस के सदस्य चार्ल्स फिलिप ब्राउन, जिनका हमने अन्यत्र उल्लेख किया है, वेमना के साहित्य से घनिष्ठ रूप से परिचित थे। पर वे बौद्धिक साहित्यकार की अपेक्षा भाषा-शास्त्री अधिक थे और वेमना के प्रति उनका परिप्रेक्ष्य भाषागत ही था। जैसा कि उन्होंने स्वयं लिखा है, उन्होंने वेमना को तभी पढ़ा जब वे एक ऐसे कवि की खोज में थे, "जिसकी रचनाएँ भाषा के विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयोगी हों, जिसकी शैली सरल हो और विवेच्य विषय विस्तृत हो।" इस सीमित परिप्रेक्ष्य के अनुसार उनके विचार से वेमना का यूरोपियन प्रतिरूप था एक छोटा-मोटा ग्रीक कवि—लूसियन। ब्राउन ने लिखा है : "इस लेखक का तेलुगु में वही स्थान है, जो लूसियन का ग्रीक में—ऐसा परिचित लेखक, जो प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, जो पुरातन रूप से न शास्त्रीय है न काव्यमय ही।" स्पष्ट है कि ब्राउन ने वेमना के काव्य में तेलुगु की प्राथमिक पुस्तक के लिए उपयोगिता से अधिक कुछ नहीं पाया।

किन्तु ब्राउन के प्रति अनुदार होना उचित नहीं है, क्योंकि वेमना के पद्यों के पहले संग्रहकर्ता, सम्पादक, मुद्रक व प्रकाशक वे ही थे। अंग्रेजी और लेटिन में वे उसके प्रथम अनुवादक भी थे। उन्होंने अपने अध्यवसाय और परिश्रम से उन शक्तियों को वढ़ावा दिया, जिन्होंने कालान्तर में तेलुगु के साहित्य के प्रतिष्ठान को वेमना की उपेक्षा नहीं करने दी।

ब्राउन ने अपनी पुस्तक—"दि वर्सेस ऑफ़ वेमना : मोरल, रिलीजियस एण्ड सेटेरिकल' की भूमिका में उन कठिनाइयों का ज़िक्र किया है जिनका उनको वेमना के पद्यों के एकीकरण में सामना करना पड़ा। उसका प्रासंगिक अंश इस प्रकार है :

> जब भाषा का अध्ययन प्रारम्भ किया जाता है तो हम स्वभावत: उन कृतियों की तलाश करते हैं जो उस भाषा के बोलने वालों में लोकप्रिय होती हैं और जो इतनी सरल शैली में हों कि विदेशी भी उनको आसानी से समझ सकें। मैंने जब १८२४ में तेलुगु के बारे में यह गवेषणा की तो मेरा उन पद्यों से परिचय हुआ जो यहाँ संग्रहीत हैं। वेमा यावे मना की बहुत-सी पाण्डुलिपियाँ मेरे हाथ में आईं, उनको मैंने अपने अवकाश के समय पढ़ा और अनुवाद किया। उनमें वर्तनी की, छन्द की, अर्थ की बहुत-सी गलतियाँ थीं, कोई भी दो प्रतियाँ एक-सी न थीं। उनमें दो सौ से आठ सौ तक उक्तियाँ थीं। मुसलिपट में, जहाँ मैं नियुक्त था, कुछ प्रतियाँ इकट्ठी करने के बाद मैंने और प्रतियाँ विशाखापट्टनम, नेल्लूर, गुण्टूर और मद्रास में प्राप्त कीं। तब मैंने एक अनुक्रमणिका बनवाई, जिसमें नौ अध्याय ऐसे थे, जिनमें पद्य उतनी ही संख्या के पाण्डुलिपियों में थे। इस प्रकार मैं उनको संग्रहीत कर सका। मैंने देखा कि पद्यों की संख्या २५०० थी, जो बाद में तुलना किये जाने पर २००० से अधिक निकली।
>
> इसके बाद यह आवश्यक महसूस हुआ कि इन पद्यों को एक निश्चित क्रम में रखा जाय। हर लिपिकार ने अपनी इच्छानुसार पद्यों को चुना था और क्रमबद्धता पर ध्यान नहीं दिया गया था। मैंने उनका पाँच शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजन किया—धार्मिक, नैतिक, व्यंग्यात्मक, रहस्यवादी व प्रकीर्ण।

वेमना के यूरोपियन प्रशंसकों में इनके बाद डॉ० जी० यू० पोप और मेजर मेकडानल्ड आते हैं। पहले ने एबी डुबेस की पुस्तक—'हिन्दू मेनर्स, कस्टम्स एण्ड सेरिमोनीस' के एक संस्करण में लिखा है कि "वेमना के पद्यों के माधुर्य और लय की कोई बराबरी नहीं कर सकता।" और दूसरे की सम्मति में—"तेलुगु साहित्य-क्षेत्र में सम्भवत: सिवाय वेमना के ऐसा कोई और लेखक नहीं है जिसकी कृतियों से यूरोपियन आकर्षित हुए हों।"

वेमना की कृतियों का द्वितीय अंग्रेजी अनुवादक भी चार्ल्स था,—चार्ल्स ई गोवर। शायद इनको अनुवादक कहना उचित नहीं है, जैसा कि गोवर ने स्वयं कहा है कि चार्ल्स फिलिप ब्राउन के गद्य-अनुवाद ही उनके छन्दोबद्ध अनुवाद

के आधार थे। उन्होंने वेमना की प्रशंसा 'शुद्ध युक्तिवादी प्रवल अद्वैती व नितान्त ग्राम्य' आदि शब्दों में की है। परन्तु उन्होंने अपने मूल्यांकन में वेमना को "नैतिक अनुभूति और कवित्व की शक्ति में", तिरुवल्वर की श्रेणी से बहुत नीचे पाया है। यह मूल्यांकन ठीक है कि नहीं शायद विषयान्तर हो पर इस सम्वन्ध में एक वात उल्लेखनीय है—जब विंसेण्ट स्मिथ ने अपनी पुस्तक—'ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया' में वर्ण-व्यवस्था की निन्दा में किसी भारतीय लेखक का उद्धरण देना चाहा तो उन्होंने वेमना के चार पद्य, १८७१ में प्रकाशित गोवर की पुस्तक "दि फोकसांग्स ऑफ साउथ इंडिया' से ही लिये।

विलियम एच० केम्पबेल वेमना के—ब्राऊन और गोवर दोनों से ही अधिक महत्त्वपूर्ण और अच्छे मूल्यांकनकार थे। 'मद्रास क्रिश्चियन कालेज मेगजीन' में प्रकाशित अपने लेख में उन्होंने कहा :

> वेमना निस्सन्देह लोककवि हैं। उन्होंने पंडितों के लिए नहीं लिखा, उन्होंने लिखा सीधे-सादे अशिक्षित ग्राम्यवासियों के लिए। उनकी लोकप्रियता का उनकी सरल एवं प्रभावशाली शैली उतनी ही आधार है, जितनी कि उनकी उत्तम सूक्तियाँ। वह साहित्यिक यश के बारे में लापरवाह थे, उन्होंने शास्त्रीय कविता के मानदण्डों की भी परवाह नहीं की और उन्होंने ऐसा करके अपनी बुद्धिमत्ता ही दिखाई। भारत में शास्त्रीय कविता कभी भी लोकप्रिय नहीं हो सकती, क्योंकि जन-साधारण के लिए यह सर्वथा दुर्वोध है। वेमना की लोकप्रियता का कारण उनका सधा व्यंग्य है। मनुष्यों की दुर्बलताओं और मूर्खताओं के अंकन में वेमना की नज़र पैनी है और वे इनकी विसंगतियों और नीचता को भी बखूवी चित्रित कर सके। वेमना केवल, मुख्यतः व्यंग्य कवि ही न थे, वे वस्तुतः एक ऐसे सुधारक थे जिनका महान् लक्ष्य था—अपने देशवासियों का सुधार। और उन्होंने इस लक्ष्य-पूर्ति में किसी और वात की परवाह भी नहीं की। विश्व के वारे में वेमना के विचार अन्य भारतीय चिन्तकों से भिन्न हैं। उनके विचार प्रधानतः अनेकेश्वरवादी न होकर एकेश्वरवादी अधिक हैं। उन्होंने महान् दिव्य शक्ति और व्यक्ति की आत्मा में विलक्षण भेद किया और मानवीय संकल्प-शक्ति को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। उनकी राय में मनुष्य उस दिव्य शक्ति के हाथ का निःसहाय खिलौना न था। उन्होंने कोरी शारीरिक तपस्या की इस तरह के कड़े शब्दों में निंदा की है कि वे क्लिफ़ व लूथर भी उन पर गर्व करते थे।

एक तरफ़ वेमना का साहित्यिक यश इतना वढ़ता जा रहा है और दूसरी

तरफ़ भारत में सामाजिक, धार्मिक व नैतिक वातावरण इस तरह वदल रहा है कि तेलुगु साहित्य के उच्च पुरोहित अव वेमना को तिरस्कार, उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देख सकते। जिस साहित्यिक आलोचना की पुस्तक ने उनके दुर्भेद्य दुर्ग पर सवसे अधिक वारूदी प्रहार किया उस पुस्तक का नाम है 'कवित्व तत्त्व-विचारम्' और उसके लेखक हैं डॉ०सी०आर० रेड्डी। इसका प्रकाशन १९१४ में हुआ। छोटी उम्र में पिता के दिग्दर्शन में श्री रेड्डी तेलुगु के शास्त्रों से परिचित हो गए थे। वाद में उनकी शिक्षा मद्रास और कैम्ब्रिज में हुई, जहाँ उन्होंने पाश्चात्य साहित्य का अध्ययन किया। जन्मतः वे वहुत ही वुद्धिमान् और सूझ-वूझ के व्यक्ति थे। शिक्षा और स्वभाव से उनका दृष्टिकोण आधुनिक था। साहित्यिक आलोचना की इस पुस्तक में उन्होंने अपनी प्रतिभा का भली भाँति उपयोग किया। इस पुस्तक का प्रकाशन वम के विस्फोट की तरह था, जिसने वहुत-से दुराग्रह और दुर्धारणाएँ उड़ा दीं, और यह आज भी तेलुगु के आलोचना-क्षेत्र में कालजयी पुस्तक है। इस युग-प्रवर्त्तक पुस्तक में आन्ध्र के सवसे उत्तम और मौलिक कवियों में से वेमना को मुख्य माना गया है। यही नहीं सृजनात्मक कल्पना में, व्यंग्य और हास्य में, मौलिकता में, अभिव्यक्ति की निर्भयता में, अन्धविश्वासों के खण्डन में और पाखंड के अनावरण में तेलुगु साहित्य में उन्होंने वेमना को सर्वश्रेष्ठ कवि वताया है।

जव इस प्रकार उनके दुर्ग में दरारें पड़ गईं, तो तेलुगु साहित्य के महापंडितों को यह स्वीकार करना पड़ा कि वेमना के स्वर में इतनी मधुरता और सामर्थ्य है कि उसे अनसुना नहीं किया जा सकता। उनका सन्देश इतना महत्त्वपूर्ण और व्यापक है कि उसको भी नहीं दवाया जा सकता। उनका व्यक्तित्व इतना प्रेरक एवं सक्रिय है कि उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। यदि उनको धार्मिक हठधर्मी, सामाजिक दुरभिमानता और मिथ्या साहित्यिक मूल्यों ने अन्धा न वना दिया होता तो वे पहले ही स्वीकार कर लेते कि वेमना अमर हैं। शब्द और व्यक्तित्व की शक्ति के अतिरिक्त उनकी शक्ति का एक और स्रोत था जिसने उनको अनश्वर वनाया। वह था अपने जीवन-काल में ही एक गाथा वन जाना।

गाथाओं की गोद में

पुरानी गाथाओं की गोद में सो रहा है——**कीट्स**

वेमना, जो अपने जीवन-काल में ही एक पौराणिक पुरुष से बन गए थे, आज उनके बारे में कितनी ही कथाएँ प्रचलित हैं। वह कई दृष्टियों से असाधारण थे, व्यवहार में असाधारण, पोशाक या इसकी अनुपस्थिति में असाधारण, स्वभाव और प्रवचन में असाधारण आदि-आदि। वास्तव में उनकी असाधारणता भी इतनी असाधारण थी कि कई ने उनको महात्मा कहा तो कई ने कपटी साधु और पागल भी। किसी भी युग में, कहीं भी, इस तरह के पुरुषों के बारे में जल्दी ही कितनी ही किंवदन्तियाँ चल पड़ती हैं। एक श्रद्धालु समाज में, जिसमें सम्प्रेषण के साधन नितान्त सीमित रहे थे, इस तरह वे हर तरह की कथाओं का केन्द्र बन गए। उनमें कई तो बहुत ही निरर्थक, असम्भव और असभ्यतापूर्ण थीं।

वेमना के शिष्यों के लिए, जो उनकी गुरु और भगवान् के रूप में पूजा करते हैं, इन कथाओं का वेमना ही वास्तविक वेमना है, जो उनके लिए हिमालय से कम वास्तविक और पवित्र नहीं है। उनके लिए, इन दन्तकथाओं के मध्य ऐतिहासिक वेमना को ढूँढ़ने का प्रयत्न धृष्टता ही है और धर्मोल्लंघन भी। उनके शिष्य ही नहीं, लाखों और लोगों का भी यही विश्वास है। जब कि वेमना की तेलुगु में एक ही आलोचनात्मक जीवनी है, किन्तु दर्जनों ऐसी जीवनियाँ हैं, जो इन कथाओं से प्रारम्भ और समाप्त होती हैं। सी० रामकृष्ण राव द्वारा लिखित अंग्रेजी में उनकी जो जीवनी है उसमें भी इन कथाओं की लड़ी ही है। वेमना के जीवनी-लेखकों में मुसलिपट्टम के आर० पूर्णाचार्युलु का नाम अग्रगण्यों में है। वे जिला-पुलिस-कार्यालय में क्लर्क थे, वे शिक्षा में तो अकिंचन थे ही, धन आदि की दृष्टि से और भी दीन थे, किन्तु वेमना के प्रति अपनी श्रद्धा में वे बहुत सम्पन्न थे। ब्राऊन के कार्य को आगे बढ़ाने के उत्साह में, उन्होंने वेमना की पाण्डुलिपियों को

54681

इकट्ठा करने के लिए सारा देश छान डाला। उन्होंने वेमना के सैकड़ों ऐसे पद्यों को लिपिबद्ध किया जो मौखिक ही प्रचलित थे। कवि के जीवन के बारे में अपने विश्वास के अनुसार उन्होंने तथ्य संग्रहीत किये। कई वर्षों के अथक परिश्रम के बाद १९१३ में उन्होंने वेमना के पद्यों का सबसे बड़ा संग्रह प्रकाशित किया। इसमें कुल मिलाकर ४,०३५ पद्य थे। उन्होंने वेमना की जीवनी भी लिखी, जिसमें कवि के बहुत-से काल्पनिक चित्र भी थे। इन चित्रों में, जिन पर उनको अभिमान था, व्यास के शब्दों में वेमना को 'पुरुष वृषभ' दिखाया गया है।

पूर्णाचार्युलु की 'वेमनायोगेन्द्र चरितमु'—(वेमना योगेन्द्र की जीवनी) उनकी और जीवनियों की तरह सुपाठ्य है, बशर्ते हम अपनी तार्किक शक्ति को सुला दें और कथाओं के धूमिल प्रकाश के संसार में विचरने लगें। अब हम उस कथा-संसार में प्रवेश करें और वेमना को उस दृष्टि से देखें, जिस दृष्टि से उनके शिष्य और भक्त उनको देखते हैं। पर हम यह स्मरण रखें कि अब हम जिस अविश्वसनीय संसार में प्रवेश कर रहे हैं, उसमें हमें समय और स्थल की दृष्टि से बहुत दूर जाना होगा, तभी हमारा इसके केन्द्रीय व्यक्ति से साक्षात्कार हो सकेगा।

बहुत पहले एक आदमी तीर्थयात्रा पर निकला। उसका नाम था वेमा। वह वैश्य था (या कोमटी)। तेलुगु में उन्हें वैश्य को कहा जाता है, और जिस तीर्थ के लिए वह निकला था, वह था श्रीशैलं। यह करनूल जिले में एक पहाड़ी है, जो आज भी वनावृत है और इसकी ढलान में, वक्रगामी कृष्णा है। पहाड़ी की चोटी पर एक पुराना मन्दिर है, जिसमें शिव मल्लिकार्जुन के रूप में विराजमान हैं। शिवरात्रि के दिन, जब कि शिव की विशेष रूप से पूजा की जाती है, यहाँ हजारों भक्त हर साल आते हैं। वहाँ दिन-भर उपवास करते हैं और रात्रि-जागरण भी। वे कृष्णा की नीली धारा में स्नान करते हैं, मस्तक और कन्धों पर विभूति लगाते हैं, शंख बजाते हैं, ढोल-घड़ियाल बजाते हैं, नाचते-गाते हैं, और प्रार्थना करते हैं। तेरहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में एक ऐसा यात्री कोमटी वेमा था।

शिवरात्रि के अगले दिन और यात्री तो घर चले गए, पर कोमटी वेमा न गया। उसको लुके-छिपे मन्दिर के आस-पास घूमता देख मन्दिर के पुजारियों को सन्देह हुआ और उन्होंने उसे मन्दिर छोड़कर जाने के लिए कहा। "मुझे क्यों भगाते हो? मैं शिव का सच्चा भक्त हूँ और भगवान् की पूजा करके उनकी कृपा पाना चाहता हूँ," उसने कहा। पुजारी मान गए, और उन्होंने उसे वहाँ रहने दिया, पर उसे आगाह किया कि वह मन्दिर के पास की उत्तर की झाड़ियों के पास न जाय—"वहाँ साँप हैं, और जंगली जानवर भी फिरते हैं," उन्होंने कहा।

कोमटी वेमा ने इसके ठीक विपरीत किया। उनके आगाह करने में उसने एक इशारा देखा। वह मौका मिलते ही उस वर्जित क्षेत्र में गया। कहीं वह वापिसी में रास्ता न भूल जाय, इसलिए जैसे-जैसे वह आगे जंगल में चलता गया, वह सरसों के बीज डालता गया, जो वह साथ ले आया था। बहुत घूमने-फिरने के बाद, कई खतरों का सामना करने के बाद, वह 'पारसवेदी' ताल के पास आया और वह इसे ढूँढने के लिए ही श्री शैल की यात्रा पर आया था। यह परखने के लिए कि ताल का जल 'पारस' था या नहीं उसने उसमें एक लोहे का सींखचा डुबोया—और आश्चर्य से देखा कि वह तुरंत सोना बन गया। उसने खुशी-खुशी में उस जल के दो घड़े भर लिए और जिस रास्ते वह सरसों के बीज फेंकता आया था, उससे ही वह वापस लौट गया।

मन्दिर और उसके पुजारियों की नज़र बचाकर, लम्बे रास्ते से जल्दी-जल्दी चलता हुआ वह अनुमकोंडा गाँव पहुँचा। उस समय सूर्यास्त हो चुका था, और अँधेरा घिरने लगा था। दोन्ति अलिय रेड्डी नाम के एक किसान के यहाँ रात बिताने के लिए उसने आश्रय माँगा कई स्थानों पर उसको डोन्दी अलडा रेड्डी भी कहा गया है)। रेड्डी ने उसे अपनी पशुशाला में रहने के लिए कहा। वेमा ने हलों के पीछे वे घड़े छिपा दिए और अपनी जाति के लोगों की तलाश में निकला ताकि उनके यहाँ खाना खा सके। जब कोमटी वेमा इस प्रकार बाहर गया हुआ था, रेड्डी पशुओं को दाना देने के लिए पशुशाला में गया और उसे अचरज हुआ कि वहाँ कोई चीज सोने की तरह चमक रही थी। जब पास जाकर उसने जाँचा-परखा तो देखता क्या है कि हल का एक हिस्सा पारसवेदी से छू रहा था और वह सोने का हो गया था। अलिय रेड्डी उन घड़ों को तुरन्त अपने घर में ले गया, पशुओं को बाहर छोड़ दिया और पशुशाला की झोंपड़ी को आग लगा दी। जब आग के कारण आकाश लाल होने लगा तो कोमटी वेमा भागा-भागा आया। उसने उन घड़ों को बचाने के लिए क्या नहीं किया—वह आग में जा कूदा और स्वयं जलकर खत्म हो गया।

अलिय रेड्डी चूँकि चतुर और होशियार आदमी था, इसलिए उसने तुरंत अमीर बन जाने का दिखावा नहीं किया। वह धीरे-धीरे सावधानी से पारसवेदी का उपयोग करता गया। उसके उपयोग द्वारा प्राप्त धन से उसने बहुत-से घर खरीदे, खेत खरीदे, और नई-नई नस्ल के पशु खरीदे। पर सम्पन्नता के साथ उसके दुःख भी बढ़ते गए। कोमटी वेमा ने, जो भूत बन गया था, उस पर बहुत-सी आपत्तियाँ ढाईं। अलिय रेड्डी के लड़के एक के बाद एक बीमार हुए और गुज़र गए। अलिय रेड्डी बड़ा दुखी था। उसका केवल प्रोलय नाम का लड़का

जीवित रह गया था। अगर वह भी मर जाता तो परिवार की सम्पन्नता का कोई वारिस न रहता, न कोई अपने पुरखों का श्राद्ध ही करता। उसका दुःख इस कारण और भी वढ़ गया कि उसके दुःख में हिस्सा वँटाने वाला कोई न था, न वह अपना भेद ही किसी को वता सकता था।

जव एक रात अलिय रेड्डी सोने गया तो उसे डर लगा कि उसकी मृत्यु के दिन नज़दीक आ गए। उसे ठीक तरह नींद नहीं आई, और उस उखड़ी-उखड़ी नींद में उसने एक सपना देखा। उसे भयंकर रूप में कोमटी वेमा दिखाई दिया। अलिय रेड्डी उसके पैरों पर गिर पड़ा, रो-रोकर उसने उससे क्षमा माँगी। उसने उससे प्रार्थना की, 'मुझे वताइए भी कि आपको सन्तुष्ट करने के लिए मैं क्या करूँ?' कोमटी वेमा जरा पिघला, उसने उसको माफ़ करने के लिए दो शर्तें रखीं—एक शर्त यह थी कि अलिय रेड्डी, कोमटी वेमा की एक सोने की मूर्ति की प्रतिष्ठा करे और उसकी कुल देवता की तरह पूजा करे। दूसरी शर्त यह थी कि उसके परिवार के सभी सदस्य आज से अपने साथ कोमटी वेमा नाम जोड़ें। यदि इन दो शर्तों का ठीक तरह पालन हुआ तो उसका परिवार फलेगा-फूलेगा, एक दिन वह आयगा कि जव यह राजवंश वन जायगा और पूरे सौ वर्ष तक राज्य करेगा। अलिय रेड्डी फौरन इन शर्तों को मान गया। अगले दिन ही उसने सुनारों से एक सोने की प्रतिमा वनाने के लिए कहा। कुछ दिनों वाद उसने उचित विधि-विधान के साथ अपने परिवार के मन्दिर में उसकी प्रतिष्ठा करवाई। और उसने अपने लड़के का नाम प्रोलय रेड्डी से प्रोलय वेमा रेड्डी भी रख दिया।

तव से कोमटी वेमा के भूत ने अलिय रेड्डी को सताना वन्द कर दिया। उसके वाद उसके दो लड़के हुए, जिनका नाम उसने अनवोटा वेमा रेड्डी, और अनुवेमा रेड्डी रखा। वह फिर सुखी हो गया। उसने सोचा कि यह अच्छा होगा यदि वह पुरानी जगह छोड़कर कहीं और जा वसे। वह १३२३ में, गुन्दूर या गुण्टूर जिले के एक छोटे-से गाँव कोण्डवीडू में अपने परिवार और अपने दो वहु-मूल्य घड़ों के साथ चला गया।

कोण्डवीडू में वसने के एक-दो वर्ष वाद अलिय रेड्डी मर गया। अपनी मृत्यु से पहले वह यह देखकर प्रसन्न था कि उसका लड़का प्रोलय वेमा भावी राजा था। पारस वेदी के द्वारा उसने वहुत-सा सोना वनाया, उसकी मदद से प्रोलय ने कोण्डवीडू का दुर्ग वनवाया, सेना इकट्ठी की और आस-पास के क्षेत्र को जीत लिया। काकतीय साम्राज्य के पतन का पूरा लाभ उठाते हुए उसने १३२८ में अपने को स्वतन्त्र राजा घोषित कर दिया।

वारह वर्ष वाद, जव प्रोलय वेमा की मृत्यु हो गई तो उसके अनन्तर उसका

भाई अनवेटा वेमा रेड्डी राजगद्दी पर बैठा। वह बड़ा साहसी और शूरवीर था। उसने बहुत-से युद्ध किये और अपने राज्य का दुगुना विस्तार कर लिया। पर इन युद्धों के कारण उसका खजाना खाली हो गया। और हालत यह थी कि वह अपने भाई की तरह पारस वेदी का उपयोग भी न कर सकता था, क्योंकि वह बहुमूल्य द्रव्य समाप्त हो चुका था। फिर भी भाग्य ने उसका साथ दिया।

एक योगी ने, जो जादू-टोने में बहुत प्रवीण था, एक निश्चित स्थल पर बलि देनी शुरू की। एक यज्ञ शुरू किया। इस यज्ञ की सफलता के लिए मनुष्य की बलि आवश्यक थी। वह एक गरीब गडरिए को इधर-उधर के सब्ज बाग दिखा-कर, फुसलाकर यज्ञ-कुंड के पास ले गया और उसने उसको आग में धकेल देना चाहा—इस सिलसिले में दोनों में झगड़ा हुआ। गडरिया तो बचकर भाग गया, पर योगी स्वयं आग में जा गिरा और राख हो गया। कुतूहलवश अगले दिन वह गडरिया उसी जगह आया जहाँ से वह बाल-बाल बच निकला था। उसे अपनी आँखों पर ही विश्वास न हुआ जब उसने अग्नि-कुंड में सोने की दो आदमकद मूर्तियाँ देखीं। वह जैसे-तैसे शाम तक इन्तज़ार करता रहा और जब अँधेरा हो गया तो वह अपनी पत्नी और बच्चों को लाया और उनकी मदद से उन दो मूर्तियों को वह अपने झोंपड़ी में ले गया। मूर्तियों में से छोटे-छोटे टुकड़े तराश-कर उसने बेचे और इस तरह प्राप्त धन से उसने और भेड़-बकरियाँ खरीदीं। धनी होने के अन्य तरीकों से भी उसने अपने को धनवान बना लिया। गडरिये के यकायक धनी हो जाने की खबर अनवोटा के कान में पड़ी और उसने अपने आद-मियों को गडरिये की झोंपड़ी की तलाशी लेने के लिए भेजा। वहाँ उन्होंने सोने की मूर्तियाँ देखीं और वे उन्हें उठाकर ले गए। इसके बाद अनवोटा वेमा को धन की कमी न रही।

तीस वर्ष की लम्बी अवधि तक राज्य करने के बाद अनवोटा वेमा की १३७० में मृत्यु हो गई। उसका लड़का कुमारगिरि उस समय नाबालिग था, इसलिए स्वर्गीय राजा के भाई अना वेमा ने बारह वर्ष तक राज्य किया। तदनन्तर कुमारगिरि वेमा राजगद्दी पर बैठा। उसके लिए सबसे बड़ा गौरव यह था कि वह कवि वेमना का पिता था। उसकी रानी मल्लमा का जेमना तीसरा और सबसे छोटा लड़का था। दो भाइयों के नाम थे, अनवोटा द्वितीय, या पेद कोमटि वेमा और राच वेमा। दोनों भाइयों का एक के बाद एक का राज्या-भिषेक हुआ, प्रथम का १३९६ में और दूसरे का १४२४ में। और यह वंश समाप्त हो गया, जब राच वेमा की उसके एक सेनानी ने हत्या कर दी। कोमटि वेमा के भूत की भविष्यवाणी के अनुसार अलिय रेड्डी का वंश ठीक सौ वर्ष तक

सत्तारूढ़ रहा—१३२८ से १४२८ तक।

वेमना चूँकि छोटा था और चुस्त भी, इसलिए वेमना के माँ-बाप ने उसको अपने लाड-प्यार से खराब कर दिया। जब वह किशोर था तो वह बड़ा जिद्दी और मनमौजी था और जब बड़ा हुआ तो स्त्रीगामी हो गया। आवारा हो गया। यह सोचकर कि विवाह उसका जीवन सुधार देगा, उसके माँ-बाप ने विवाह के लिए आग्रह किया, पर वह न माना। जितने भी सम्बन्ध उन्होंने सुझाए कोई-न-कोई बहाना करके उसने उन्हें ठुकरा दिया। उसने उनको बुढ़ापे में बहुत तंग किया, और जब वे गुज़र गए तो उनका रहा-सहा नियन्त्रण भी उस पर से जाता रहा। उसके दोनों भाई भी उसको काबू में न रख सके। यदि किसी के प्रति उसके हृदय में आदर था तो वह थी नरसमाम्बा, राच वेमा की रानी। और उसके प्रभाव ने ही इस व्यभिचारी को कवि और दार्शनिक बना दिया।

इस परिवर्तन के कुछ समय पूर्व वह एक देवदासी (पेशेवर वेश्या) के साथ रहा करता था। वह उससे बहुत पैसा चूस रही थी। वह उस पर इस तरह फ़िदा हुआ हुआ था, कि जो वह कहती, वही करता। पर जब उसने एक दिन वेमना से अपनी भाभी नरसमाम्बा के सब जवाहरात लाकर देने के लिए कहा, तो उसे सूझा नहीं कि क्या करे—न वह देवदासी से ही इन्कार कर सकता था, न भाभी के पास जाकर उनसे माँग ही सकता था। दो-चार दिन के लिए वह महल में रूठकर बैठा रहा, उसने खाने-पीने से भी इन्कार कर दिया। रानी नरसमाम्बा ने पूछ-ताछ करके मालूम कर लिया कि वह क्यों रूठा हुआ है और उसने सिवाय एक नथ के अपने सभी शाही जवाहरात वेमना को दे दिए। वेमना तुरंत उनको देवदासी के पास ले गया। वह ताड़ गई कि उन गहनों में नथ नहीं है। उसने वेमना को वह भी लाने के लिए कहा। नरसमाम्बा ने उसे वह दे तो दी, पर कुछ शर्तें रखीं—नथ को वह सीधे देवदासी को न देकर, शयन कक्ष के दरवाजे की देहरी के नीचे रखे और देवदासी से कहे कि वह उसे पीछे मुड़कर अपने ओठों से ले। यह करतब करने से पहले वह अपने को नंगा करे, और वेमना लगातार उसको देखता रहे। क्योंकि वेश्याओं को नृत्य सीखते समय यह सब सिखाया जाता था, इसलिए देवदासी ने आसानी से यह कर दिया पर उसके नग्न शरीर और सिकुड़े हुए मांस को देखकर वेमना के मन में घृणा पैदा हुई और उसने तभी प्रतिज्ञा की कि वह फिर कभी एन्द्रिक विलास में नहीं फँसेगा—वह विलास छोड़ देगा। वेमना के लिए यह धक्का इतना जबरदस्त था कि वह निस्तेज-सा हो गया, उदास और दुखी रहने लगा। उसकी उदासी दूर करने के लिए रानी नरसमाम्बा ने जौहरियों के शाही कारखाने में निरीक्षण करने का आदेश दिया।

भाभी के प्रति आदरवश उसने यह कार्य सहर्ष स्वीकार कर लिया। उसने देखा कि एक अभिराम नामक सुनार रोज देरी से काम पर आया करता था। वेमना ने उसको कई बार डाँटा और कहा कि वह देरी से न आया करे, पर वह न माना। जब उससे पूछा गया कि वह देरी से क्यों आता रहा है तो उसने कहा कि धर्मकाण्ड उसके लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है, इसलिए उसका देरी से आना, अगर हमेशा के लिए नहीं तो कुछ दिनों के लिए माफ़ कर दिया जाय। एक छोटे-मोटे कारीगर की यह विनीत उद्दंडता देखकर वेमना की उत्सुकता जगी और उसने सोचा कि आखिर बात क्या है, वह जानकर रहेगा। अगले दिन सवेरे उसने अभिराम का पीछा किया, वह कुछ फल और दूध लेकर एक गुफ़ा में गया। पेड़ के पीछे से छिपकर उसने देखा कि वह चढ़ावा उसने एक योगी के चरणों में रख दिया था। काफ़ी समय बाद उस योगी ने, जिसका नाम लम्बिका शिवयोगी था, अपनी आँखें खोलीं और कहा—"मैं तुम्हारी भक्ति से सन्तुष्ट हूँ, मैं कल यहाँ से जा रहा हूँ उषा काल से कुछ पूर्व तुम यहाँ आओ, मैं तुम्हें कुछ आध्यात्मिक रहस्यों की शिक्षा दूँगा और तुम्हें कुछ मानवेतर शक्तियाँ दूँगा।" यह सुनते ही वेमना तुरंत अपने महल चला गया और उसने निश्चय कर लिया कि अगले दिन प्रातःकाल, अभिराम नहीं बल्कि वह सिद्धियाँ प्राप्त करेगा।

वह नरसमाम्बा के पास गया। और उससे कहा कि वे कारण न पूछें, पर वे राजा से कहकर, अभिराम को सारी रात शाही कारखाने में गहने बनाने के काम पर रखें और कहें कि रानी को गहने की सख्त जरूरत है। राजाज्ञा दे दी गई। और अभिराम को योगी के पास जाने से रोक दिया गया। जब अभिराम की जगह वेमना, प्रातःकाल निश्चित समय पर गुफ़ा के पास गया तो लम्बिका योगी को आश्चर्य हुआ। उसके चरणों पर पड़कर वेमना ने कहा, "महायोगी...क्योंकि अभिराम स्वयं नहीं आ सका है, उसने मुझे अपनी जगह भेजा है।" योगी उसकी गंभीरता और शालीनता से प्रभावित हुआ और उसने कहा, "बेचारा वह ज़िन्दगी का सुअवसर खो बैठा, वत्स तुम भाग्यशाली हो, आगे बढ़ो और दीक्षित होओ!" क्षण-भर में वेमना पूरा योगी बन गया और वह गुफ़ा से सीधे अभिराम के पास गया। उसके समक्ष साष्टांग नमन करके उसने उससे क्षमा माँगी। पश्चात्ताप के आँसू उसकी आँखों से झरने लगे। उसने कहा, "मैंने जो तुम्हारी क्षति की है, उसके बदले मैं तुमको अमर कर दूँगा।" इसी आश्वासन की परिपूर्ति के लिए उसने अपने पद्यों में 'अभिराम' टेक को प्रविष्ट किया।

योगी बनने के बाद वेमना ने बहुत-सी सिद्धियाँ और चमत्कार प्रदर्शित किए। उसने खरबूजों की फसल लगाई और जिन खरबूजों को उसने अपने

शिष्यों को दिया उनमें सोने के वीज थे और जो वाग से चुरा लिए गए थे, उनमें कीड़े भरे थे। कभी-कभी वह अपने निमन्त्रकों के घरों में मल-मूत्र विसर्जित कर देता। अगर घृणा करके उसको वे भगा देते तो उनका घर सदा के लिए गन्दगी से भरा रहता और अगर वे कहते कि सन्त ने वचपने में यह सव कर दिया है तो वह मल-मूत्र सोना हो जाता। अगर भक्ति पूर्वक उसका मूत्र लिया जाता, तो वह भी सोना हो जाता।

हमारा तार्किक मन, निद्रा में भी, मल-मूत्र की दुर्गन्ध नहीं सह सकता। अव हमें लाचार होकर दन्तकथाओं के इस संसार से वाहर आना होगा।

मन्द और अनिश्चित प्रदीप

आज अन्धकार, मन्द और अनिश्चित दीपों द्वारा दीप्त है
—ए० जी० गार्डनर

कथाओं के थोथेपन को ढाँपने के लिए ही इतिहास का आवरण दिया जाता है, पर यह आवरण बहुत झीना होता है और उसका थोथापन स्पष्ट दीखता है। वेमना से सम्बद्ध दन्तकथाएँ इसका दृष्टान्त हैं। उनमें ऐतिहासिक तिथियाँ दी गई हैं, उसको राजवंशों के साथ जोड़ा गया है, पर क्षण-भर के लिए भी वे आलोचना की कसौटी पर खरी नहीं उतर सकतीं।

रेड्डियों में आज भी, 'वेमा' या 'वेमना' साधारण नाम नहीं है। रेड्डी वंश के सभी सदस्य, जिन्होंने तटवर्ती आन्ध्र के अधिकांश भाग पर राज्य किया, 'वेमा' हैं। कवि का नाम भी यही था, इसलिए वह भी इस राजवंश का सदस्य रहा होगा। अगर वह नहीं भी था, तो उसका सम्बन्ध इस वंश के साथ जोड़ देने से उसे राजकुमार का स्थान दिया जा सकता था। नाम की समानता के कारण, इस तरह के सम्बन्धों को सतही 'ऐतिहासिक' सम्भावनाएँ मिल जाती हैं। इस अनुमान को और भी पुष्टि मिलती है, जब हम यह देखते हैं कि रेड्डी राजाओं में कई प्रसिद्ध कवि, विद्वान् और भाष्यकार भी थे।

किन्तु रेड्डी राजाओं के नाम के साथ यह 'कोमटी' शब्द कैसे जुड़ा ? कोमटी, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, तेलुगु में वैश्य को कहा जाता है—वर्ण-व्यवस्था में तीसरे वर्ण को। पर रेड्डी चतुर्थ वर्ण के हैं, यानि शूद्र। तब रेड्डी के एक वैश्य हो जाने की इस विसंगति की व्याख्या कैसे की जा सकती है ? कैसे एक अज्ञात साधारण रेड्डी परिवार के पास इतनी सम्पन्नता और शक्ति आ गई ? दन्तकथाओं ने इन प्रश्नों का उत्तर कोमटी वेमा और उसके पारसवेदी के दो घड़ों से बड़ी सफाई से दे दिया।

पर हाल में किये गए ऐतिहासिक और साहित्यिक अनुसन्धानों ने यह निरूपित किया है कि रेड्डी राजाओं के वंश का नाम दोन्ति नहीं, दासती था। प्रोलय वेमा से पहले उसके पिता का नाम वेमा था। प्रोलय वेमा की राजधानी कोण्डवीड न होकर अद्दंकि थी। अनवोटा वेमा, जो प्रोलय के बाद राजगद्दी पर बैठा और जिसने अद्दंकि से जाकर कोण्डवीडु में राजधानी बनाई, वह प्रोलया वेमा का भाई न होकर पुत्र था। कोमटी वेमा, जिसने कुमारगिरि के बाद राज्य किया, उसका लड़का न होकर चचेरा भाई था। और अन्त में राच वेमा, जो इस वंश का अन्तिम राजा था वह कोमटी वेमा का भाई नहीं, पुत्र था। पर यह सवाल उठाया जा सकता है कि क्या इस सबसे यह सिद्ध किया जा सकता है कि वेमना राजकुमार नहीं था? उत्तर स्पष्ट है, कथाओं के अनुसार वेमना, राजा कुमारगिरि वेमा का तीसरा और आखिरी लड़का था। परन्तु इस राजा के तीन लड़के न थे, एक ही लड़का था, और वह भी किशोरावस्था में मर गया था।

कथाओं को खण्डित कर देना सरल है, परन्तु वेमना की जीवनी के लिए प्रामाणिक सामग्री एकत्रित करना कठिन ही नहीं असम्भव भी है। सर्वप्रथम सी० पी० ब्राऊन ने इस दिशा में पहला प्रयत्न किया। आज से अधिक अनुकूल परिस्थितियों में, गम्भीर प्रयत्नों के बावजूद, वे अधिक कुछ न कर पाए, यद्यपि उन्होंने यह कार्य आज से डेढ़ सौ वर्ष पहले किया था। इस प्रकार वे वेमना के समय से, आज की अपेक्षा कहीं अधिक समीप थे। 'दि वर्सेस ऑफ वेमना : मोरल, रिलीजियस एण्ड सेटेरिकल' की भूमिका में, जिसका प्रकाशन अंग्रेजी अनुवाद और टिप्पणी के साथ १८२९ में हुआ, वे लिखते हैं :

> वे जन्म से किसान थे। कई लोगों का कहना है कि वे कन्सल (कर्नूल) के नायक अनवेमा रेड्डी के परिवार से सम्बद्ध थे और कवि के भाई कभी गण्डिकोट दुर्ग के सेनाधिकारी थे। कई उन्हें कर्नूल—कन्दलस के क्रिश्चिपाद का बताते हैं और कई गुन्टूर के इनकोण्डा का। और मैंने यह भी सुना है कि वे कडपा जिले के चितवेल ग्राम में वे पैदा हुए थे। मैंने इन सभी जगहों पर पूछ-ताछ की, परन्तु मुझे कोई जानकारी नहीं मिली। उनकी भाषा के कुछ अंशों से ऐसा लगता है कि वह तेलंगाना के दक्षिण-पश्चिमी प्रदेश के निवासी थे। जहाँ यह ग्राम स्थित हैं और यह अनुमान है कि वे सत्रहवीं सदी के प्रारम्भ में जीवित रहे होंगे।

अनुवाद की एक और बड़ी पुस्तक में, जिसका ब्राउन ने संकलन तो किया था

पर प्रकाशित नहीं किया था,[1] उनका मत कुछ और निश्चित है। इसमें वे कहते हैं कि वेमना गण्डीकोटा के आस-पास पैदा हुए थे। उनकी कृतियों के अन्तर्साक्ष्य से ब्राउन यह भी स्थापित करते हैं कि वेमना ने सत्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में लिखा और वे अठारहवीं सदी के आरंभ तक जीवित रहे। हम यहाँ देखते हैं कि वेमना के काल के वारे में ब्राउन की राय में कुछ परिवर्तन आ गया है।

किन्तु ब्राउन कुछ निश्चित नहीं कर पाए और कहा है कि वेमना पन्द्रहवीं सदी के थे। १८३९ में उन्होंने 'वेमना : मोरल, रिलीजियस एण्ड सेटेरिकल' का द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया। इसकी प्रतियाँ अप्राप्य हैं। वे आन्ध्र में न किसी सार्वजनिक पुस्तकालय में उपलब्ध हैं, न पुस्तक-संग्रहों में ही। पर हमें इसके कुछ विवरण मेजर मेकडानल्ड की पुस्तक मिलते हैं। मेकडानल्ड कहता है, "इस संस्करण में अनुवाद और टिप्पणियाँ तो छोड़ दी गई हैं, पर धार्मिक और नैतिक अध्यायों में वहुत-कुछ जोड़ा गया है।" जव कि प्रथम संस्करण में ६९३ पद्य थे, द्वितीय में ११६३ पद्य हैं। हम पुन: मेकडानल्ड को उद्धृत करते हैं, "यह ब्राऊन का कहना है कि जन विश्वास के अनुसार वेमना की कृतियाँ ठीक चार शताब्दी पुरानी हैं, वह यह भी कहता है कि यदि जंगम की बात मान ली जाय तो वह तेलुगु के 'वसव पुराण' के लेखक के समकालीन हैं।" इस तरह उनका काल और पीछे हट जाता है। ब्राउन की प्रथम स्थापना के अनुसार, "वेमना, बेकन और शेक्सपीयर के समकालीन हैं और दूसरी के अनुसार चोसर के।" पर मेकडानल्ड दोनों ही स्थापनाओं से सहमत नहीं हैं, वह अपने स्वतन्त्र अनुसंधान के बल पर कहता है कि वेमना सत्रहवीं सदी के मध्य में पैदे हुए थे।

वेमना के काल के वारे में गोवर का भी अपना मत है :

> "चूंकि वेमना की कृतियों में कहीं इस्लाम का जिक्र नहीं है, मुसलमानों के शासन का ज़िक्र नहीं है, शैली और सामग्री की दृष्टि से उसमें और दसवीं सदी के तमिल कवियों में वहुत साम्य है, इससे यह धारणा वनती है कि वेमना का जीवन-काल वारहवीं सदी के बाद का नहीं है।"

यदि गोवर ने ब्राउन की पुस्तक 'वर्सेस ऑफ वेमना' का दूसरा संस्करण देखा होता तो वे अपने मत के लिए ब्राउन के समर्थन का भी दावा करते। जो भी हो, मगर यह गलत है कि वेमना ने इस्लाम, मुसलमानी शासन का कहीं ज़िक्र नहीं किया है। वेमना के पद्यों में कम-से-कम तीन ऐसे उल्लेख हैं, जिनमें मुसलमानों के प्रति संकेत हैं।

---

१. यह १९६७ में आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी, हैदरावाद द्वारा प्रकाशित किया गया। इसमें अंग्रेजी अनुवाद सहित १२१५ पद्य हैं।

केम्पवेल और मेकडानल्ड की धारणाएँ गोवर की-सी न होकर, भी उनमें करीव-करीव एक-जैसी है, यद्यपि केम्पवल की धारणा कुछ कम स्पष्ट है। उनकी धारणा के अनुसार वेमना का समय, मोटे तौर पर सोलहवीं सदी का मध्यकाल है। उनका कथन है, "यह साधारणतया विश्वास किया जाता है कि वेमना २५० वर्ष पहले जीवित थे।" उनके जन्म-स्थल के वारे में वे अधिक स्पष्ट हैं।

> वहुत से स्थल उनके जन्म के श्रेय का दावा करते हैं, पर इस वारे में कोई भी इससे अधिक निश्चित धारणा असम्भव है कि मद्रास से उत्तर-पश्चिम में, जो कड़पा जिले की सीमाओं में है, किसी पहाड़ी जंगली प्रदेश में वे पैदा हुए होंगे। यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि उनका जीवन और कार्य कड़पा और कर्नूल जिलों में, जो कड़पा से कुछ उत्तर में है, सम्पन्न हुआ। स्थानीय परम्परा के अनुसार कड़पा जिले के दक्षिण-पश्चिम भाग के एक छोटे ग्राम कटरपल्ली में उनका घर था। वहाँ अव भी एक परिवार है, जो अपने को उनका वंशज समझता है और उन व्यक्तियों की भेंट स्वीकार करता है, जो इस प्रकार कवि का सम्मान करना चाहते हैं।

केम्पवेल वड़े परिश्रमी अनुसंधानकर्ता थे। क्योंकि परम्परा के अनुसार वेमना ने कटरपल्ली में अपने जीवन के अन्तिम वर्ष काटे थे और वहीं अपनी इहलीला समाप्त की थी इसलिए वे उस गाँव को देखने गये। उन्होंने वहाँ एक समाधि देखी। उन्हें वताया गया कि वह वेमना की समाधि है और उसके चौकीदार से भी उसने वातचीत की, जो अपने को वेमना का वंशज समझता था। केम्पवेल ने समाधि के पास एक मन्दिर भी देखा, जिसमें वेमना की लकड़ी की भयंकर मूर्ति थी। वे उन लोगों से भी मिले जो वेमना को अपना भगवान् समझते थे, जो उनकी पूजा तो करते ही थे मगर किसी और को नहीं मानते थे। कटरपल्ली से लौटने के वाद, जो कुछ उन्होंने देखा, और सुना, सुन्दर शब्दों में उन्होंने उसका वर्णन किया।

केम्पवेल को यद्यपि यह वताया गया था कि कटरपल्ली-परिवार में, जो वेमना को अपना पूर्वज समझते हैं, एक पुस्तक है, जिसका नाम 'वेमना चरित्रमु'—(वेमना का इतिहास) है। यह ताड़पत्र की पाण्डुलिपि है और इसकी काफ़ी क्षति भी हुई है। इसकी एक-मात्र एक और प्रति काकिनाड़ा के आन्ध्र सारस्वत के संग्रहालय में है। जाँचने-भालने पर यह मालूम हुआ कि यह 'वेमना चरित्रमु' १८४५ में ही तैयार किया गया था। इसमें वहुत-सी ऐसी कथाएँ हैं, जो 'वेमनयोगीन्द्र चरित्रमु' की कथाओं से भी अधिक विचित्र और असम्भव हैं। और जो कुछ जीवनी-सम्वन्धी विवरण इसमें संकलित हैं, वे किसी और वेमा के

वारे में हैं, जिसको तुङ्ग वेमा कहा गया है। वस्तुतः इसमें तुङ्ग वेमा के सौ से अधिक पद्य हैं।

ग्रियर्सन ने अन्य पाश्चात्य विद्वानों के बाद यह मत व्यक्त किया कि वेमना सोलहवीं शताब्दी के थे। उनका मत, जैसा कि और लोगों का मत है, किंवदन्तियों पर आधारित था।

प्रथम तेलुगु अनुसंधानकर्ता हैं के० वी० लक्ष्मण राव; जिन्होंने वेमना का आलोचनात्मक रूप से अध्ययन किया। वे आन्ध्र में ऐतिहासिक और दार्शनिक अनुसंधान के अगुवा हैं। उनके पदचिह्नों पर चलकर कई अन्य लोगों ने भी वेमना में अभिरुचि दिखाई। इनमें उल्लेखनीय हैं—वंगूरि सुब्बाराव, रालपल्ली अनन्तकृष्ण शर्मा और कवियुग्म शेषाद्रि रमण कवुलु, वेटूरि प्रभाकर शास्त्री, वण्डारू तम्मय्या, चेगण्टि शेषय्या और वेदं वेंकटकृष्ण शर्मा। उन्होंने अपनी ओर से पूरी कोशिश की, पर वेमना के जीवन के इतिहास के वारे में जो अन्धकार था उसको दूर के लिए जो दीप उन्होंने जलाये वे 'मन्द और अनिश्चित' हैं। उन्होंने अपने भिन्न-भिन्न मतों से वेमना को आन्ध्र में हर जगह पैदा किया है और उन्हें पन्द्रहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक हर शताब्दी का वना दिया है।

अब तक जिन तेलुगु विद्वानों ने वैज्ञानिक व तार्किक रूप से वेमना का अध्ययन किया है, वे हैं वंगूरि सुब्बाराव और रालपल्ली अनन्तकृष्ण शर्मा। पहले ने वेमना की आलोचनात्मक जीवनी १९२२ में प्रकाशित की और दूसरे ने १९२८ में आन्ध्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'सर रघुपति वेंकटरत्नम् एण्डोमेण्ट लैक्चर्स' में वेमना को अपना विषय चुना। वेमना के सभी लेखकों में इन दोनों में प्रायः सभी बातों पर सबसे अधिक मतभेद है, विशेषतः वेमना के काल के वारे में।

वंगूरि के मतानुसार वेमना पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में पैदा हुए थे और वे श्रीनाथ के समकालीनों में थे। इस निष्कर्ष के लिए वंगूरि, लक्ष्मणराव के समर्थन का दावा करते हैं। वेमा के वारे में मध्यकालीन कवियों द्वारा दिये गए प्रसंगों को भी वे वहुत महत्ता देते हैं। पर ये प्रमाण उतने विश्वसनीय नहीं हैं। हमने अन्यत्र कहा है कि इस शताब्दी के द्वितीय दशक से तेलुगु-साहित्य-संसार की दृष्टि वेमना के अस्तित्व पर गई। उससे पहले उनकी उपेक्षा ही हुई थी, उन्हें किसी ने कवि भी न माना। जव हालत यह है तो किसी भी पुरातन कवि ने, तुरगाराम कवि और एडपाटियर्र प्रगडा-जैसे विद्वान् कवियों ने भी आदर की दृष्टि से वेमना का ज़िक्र नहीं किया होगा। कोंडवीडु और राजमन्द्री के राजा,

जिनके नामों का 'वेमा' एक अंश है, उदार और साहित्य-पोषक थे और उनमें से कई स्वयं प्रतिष्ठित विद्वान् और कवि भी थे। मध्यकालीन साहित्य में, यदि कहीं 'पूर्व कवि स्तुति' में वेमा का ज़िक्र है तो सम्भवतः वह संकेत इन राजाओं की ओर ही है।

यदि वंगूरि वेमना के काल को और सनातन बनाने का प्रयत्न करते हैं तो रालपल्ली में उनके समय को आगे बढ़ाने की प्रवृत्ति है। रालपल्ली के मतानुसार वेमना अठारहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में रहे होंगे। इस बारे में दुराग्रही हो जाना उचित नहीं है, पर अकाट्य साक्ष्य की अनुपस्थिति में, जो ब्राउन ने अपने प्रारम्भिक लेखों में वेमना का जन्म—१६५२ और मृत्यु—अठारहवीं शताब्दी के प्रथम दशक में बतलाई है वह ही ठीक मालूम होता है।

वेमना का जन्म-स्थल वंगूरि वेमना के पद्यों के अन्तर्साक्ष्य के आधार पर कोंडवीडु बताते हैं। और रालपल्ली कहते हैं कि जब तक हमें इसके विपरीत प्रमाण नहीं मिलते, कोंडवीडु को ही कवि का जन्म-स्थल मान लेना उचित होगा। यह ही बात है, जिस पर उनका मतभेद अधिक नहीं है। पर कई विद्वानों का कहना है कि वेमना ने अपना बचपन कोंडवीडु में बिताया होगा, पर उनका जन्म-स्थल मूगचिन्तपल्ली ही है।

उनका विश्वास है कि वेमना जब छोटे ही थे तो उनके माँ-बाप कोंडवीडु में जा बसे थे। रालपल्ली का अभिमत है कि वेमना कहीं भी पैदा हुए हों पर उनके जीवन का अधिकांश भाग कडप्पा और कर्नूल जिलों में, यानी वर्तमान रायल सीमा में ही बीता।

एक और विषय, जो वेमना के बारे में विवादग्रस्त है, वह है उनकी जाति। रालपल्ली के विचारानुसार वेमना की जाति कापु है, जब कि वंगूरि उनको रेड्डी जाति का बताते हैं। दोनों ही वेमना की साक्षी देते हैं—और वेमना दोनों को ही समान रूप से अनुगृहीत करते हैं, वह कभी अपने को 'कापु' बताते हैं, तो कभी 'रेड्डी'। और वेमना की ओर से यह कोई वाक्छल भी नहीं है, वह एक साथ कापु और रेड्डी हैं। अभी तक, शायद वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ तक, 'कापु' और 'रेड्डी' एकार्थी शब्द थे। उदाहरण के लिए एडगर थर्स्टन की पुस्तक 'केस्टस एंड ट्राइब्स ऑफ साउथर्न इण्डिया' में, जिसका प्रकाशन १९०९ में हुआ था, 'रेड्डी' का कहीं अलग उल्लेख नहीं है। 'कापु' शीर्षक के अन्तर्गत ही रेड्डियों के इतिहास, रीति-रिवाज के बारे में उन्होंने एक लम्बा निबन्ध लिखा है। इसमें 'कापु' और 'रेड्डी' पर्यायवाची शब्द हैं। ब्राउन की 'तेलुगु इंग्लिश् डिक्शनरी' के अनुसार 'कापु' का अर्थ लगानदार, किसान, खेतिहर, गँवार, ग्रामवासी, एक विषय,

एक व्यक्ति और एक निवासी है। इन सबसे अधिक प्रचलित अर्थ है—'किसान' 'रैयत' शब्द, जो सम्प्रति किसान के लिए बहुत प्रचलित शब्द है, तेलुगु का है ही नहीं, यह उर्दू का 'रैयत' शब्द है, तेलुगु वर्तनी में ही कुछ भेद है। अनतिपूर्व ही 'कापु' शब्द विशेष जाति का सूचक बना है। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि वेमना कापु और रेड्डी दोनों ही थे। यदि स्पष्टता पर ही आग्रह हो तो हम कह सकते हैं कि वह रेड्डी कापु थे, यानी ऐसे रेड्डी जो पेशे से किसान थे।

वेमना के मृत्यु-स्थल के बारे में वंगूरि और रालपल्ली के दो भिन्न अभिमत हैं। वंगूरि का विश्वास है कि वेमना ने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष कटरपल्ली में बिताये और वहीं उनकी मृत्यु हो गई। यद्यपि वे स्पष्ट तो नहीं कहते हैं तथापि यह निर्विवाद है कि कटरपल्ली में स्थित समाधि को वेमना की समाधि ही मानते हैं। परंतु इस विषय पर रालपल्ली को गम्भीर सन्देह हैं। केम्पबेल की तरह वे भी एक बार कटरपल्ली गये थे। आन्ध्र-विश्वविद्यालय द्वारा वेमना पर आयोजित व्याख्यानमाला के लिए सामग्री इकट्ठा करने के सिलसिले में वे चालीस वर्ष पूर्व वहाँ गये थे। रालपल्ली कहते हैं कि उस समय कटरपल्ली में स्थानापन्न पुरोहित ने उन्हें बताया कि वेमना का सम्बन्ध मन्दिर और समाधि से कल्पित रूप से जोड़ा गया है। इसलिए रालपल्ली की धारणा है कि वेमना की मृत्यु कटरपल्ली में न होकर, रायलसीमा में अन्यत्र कहीं हुई थी। वे प्रच्छन्न रूप से वेटूरि प्रभाकर शास्त्री द्वारा सूचित परम्परा का समर्थन करते हैं, जिसके अनुसार वेमना ने भी आदि शंकर की तरह एक गुफ़ा में जाकर अपनी इहलीला समाप्त कर दी थी और वेमना के कुछ शिष्यों के मतानुसार यह गुफ़ा कडपा जिले के पामूर ग्राम में है।

ये और अन्य कुछ बातें अब भी बहुत विवादग्रस्त हैं और इस विवाद का तब तक कोई अन्त नहीं होगा जब तक अनुसंधानकर्ता इस चक्राकार तर्क से थक नहीं जाते।

वे मनुष्य थे

वह पुरुष था, सब मिलाकर ही उसको आँको,
उसके सदृश पुरुष मैं फिर न देख पाऊँगा।

—शेक्सपीयर

यदि हम जन्म-तिथि, जन्म-स्थल, पिता का नाम, माता का नाम आदि विवरणों से, जिनके बग़ैर जीवनी-लेखक शायद जीवनी नहीं लिख सकता, बच निकलें, तो वेमना की कृतियों के अन्तर्साक्ष्य के आधार पर उनके जीवन की पुनर्सृष्टि की जा सकती है। वे जीवन के कवि थे। उन्होंने जीवन को स्वानुभव से जाना था। उन्होंने जीवन का हास-परिहास किया था, वे उस पर हँसे थे और उसके साथ भी हँसे थे। उन्होंने जीवन को झेला और वे उसके साथ रोये भी। उत्तम जीवन के साथ संघर्ष किया, कभी उनकी इसमें विजय हुई तो कभी पराजय भी। वे हर समय हर स्थिति में जीवन से प्रफुल्लित रहे। उनके लिए जीवन का अर्थ सत्य के साथ परीक्षण था, अन्वेषण की यात्रा थी। वे जीवन से इस तरह लगातार और इतने विस्तृत रूप से जूझे थे कि उन्होंने अपनी कविता में, अपना ही जीवन नहीं बल्कि साधारण जीवन-प्रक्रिया को भी गहराई के साथ प्रस्तुत किया। हमें उनके वैयक्तिक जीवन की झाँकी कभी इस अभिव्यक्ति में, तो कभी उस विचार में, तो कभी किसी विशेष उपमा में मिलती है। इसके दर्शन कभी-कभी उनके दुराग्रहपूर्ण और प्रत्यक्ष मान्यताओं में भी मिलते हैं। प्रेम, घृणा और दुःखों के मिश्रण को हम उनकी जीवन-कहानी कह सकते हैं। हमें केवल अपनी आँखें खोले रखनी होंगी, मन को सावधान रखना होगा और अप्रत्यक्ष अर्थों को पहचानना होगा। अगर हमने यह किया तो हम पायँगे कि वे अत्यधिक आत्म-अभिव्यक्ति वाले कवियों में से एक हैं।

जिस प्रकार वे अपने को अपने पद्यों में प्रस्तुत करते हैं, उससे यह नहीं ज्ञात

होता कि वे किसी राजकीय परिवार में पैदा हुए थे। उनके जीवन की पृष्ठभूमि में प्रासाद नहीं, खेत हैं; और ये खेत भी बड़े नहीं हैं, इतने कि एक परिवार का गुज़ारा हो जाय। मामूली रिवाजी शिक्षा के बाद, वे खेती में अपने पिता की मदद करने लगते हैं। प्रतिदिन सवेरे वे गाय-भैंसों को चराने ले जाते हैं और शाम को उन्हें घर हाँक लाते हैं। वे कभी हल चलाने में, बुआई या निराई में भी हाथ बँटाते हैं। कभी मचान पर चढ़कर, गुलेल हाथ में लेकर, फसल चुगने वाले पक्षियों को भगाते हैं। वे कभी कटाई में, फटकाने में, ओसाने में सहायता करते हैं, तो कभी गाड़ी में फसल लादकर बैलगाड़ी हाँककर घर ले जाते हैं। जो भी कोई काम उन्हें दिया जाता, उसे वे खुशी-खुशी करते। कभी-कभी काम करते हुए वे गाते भी हैं। उन्हें बहुत-से लोकगीत याद हैं। वे कभी न नाटक देखना चूकते हैं, न कठपुतली का खेल; न गाँव के मन्दिर में रामायण और महाभारत की कथा सुनना ही भूलते हैं। दोनों महाकाव्यों के बहुत-से अंश उन्हें जबानी याद हैं।

सबसे अधिक, हमउम्रों की सोहबत उन्हें भाती है। कभी-कभी वे खेती का काम छोड़ देते हैं, उनके साथ खेल-कूद का इन्तज़ाम करते हैं, गाँव के तालाब में तैरते हैं, तो कभी-कभी पास की पहाड़ियों और घाटियों में घूमने चले जाते हैं। उन्हें उच्च जातियों के दिखावे पसन्द नहीं हैं, वे सबसे मिलते-जुलते हैं। उन्हें पशु-पक्षी भी बहुत प्यारे हैं। पक्षियों में उन्हें कौवे और उल्लू पसन्द नहीं हैं और पशुओं में कुत्ते, सूअर और गधे। वे बिना लाग-लपेट के बोलते हैं, बिना आगा-पीछा देखे निश्चय लेते हैं, हर काम में हिम्मत दिखाते हैं। वे हर दृष्टि से बहिर्मुख हैं। वे न वैयक्तिक अपमान सहते हैं, न सामाजिक अन्याय ही। वे अक्सर गाँव के दबंग लोगों से भिड़ पड़ते हैं। जब वे किसी बात को लेकर लड़ते हैं, तो उसका हल निकालकर ही दम लेते हैं। उनकी इस उद्दंडता को उनका पिता जंगलीपन समझता है।

वेमना माँ-बाप का आदर करते हैं, उनको प्रेम की दृष्टि से देखते हैं। वे माता के लाड़ले हैं। वह जानती है कि वेमना को अच्छा खाना, खूब दूध-दही और मक्खन पसन्द है, इसलिए वह उन्हें खूब खिलाती है। जब कभी पिता उन्हें डाँटते हैं तो वह उनकी तरफ़दारी करती है और स्वयं उनको अलग ले जाकर समझाती है, झगड़े-बगड़े न करने की हिदायत देती है। किशोर-काल के प्रारम्भ तक उनका जीवन निश्चिन्त और सुखी है। फिर उनकी माँ दिवंगत हो जाती है, और उन पर दुःख का पहाड़ आ गिरता है। उनके जीवन में अन्धकार छा जाता है। वे एकाकी और निराश हो जाते हैं।

इससे पहले कि वेमना इस दुःख से मुक्त हो सकें, उनके पिता दूसरी शादी

कर लेते हैं। वेमना पर इसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। इसका अर्थ यह नहीं कि वे चाहते थे कि उनके पिता आजीवन विधुर ही रहें। 'पर उन्होंने इतनी जल्दी क्यों दिखाई ?' वे सोचते हैं, 'क्या उनके हृदय में मेरी माता के लिए सच्चा प्रेम नहीं था ? क्या वे इसी प्रतीक्षा में थे कि कब माँ गुज़रे और कब वे फिर से विवाह करें ? वेमना इस तरह के अप्रिय और क्रूर विचारों को भगाने की चेष्टा करते हैं, पर वे उसका पीछा करते ही रहते हैं, और उनका दुःख और भी बढ़ता जाता है।

वेमना को दुखी, उखड़ा-उखड़ा देखकर उनकी सौतेली माँ सोचती हैं कि वे उससे रूठे हुए हैं। अपने प्राथमिक वैवाहिक उल्लास में उनको यों मुँह फुलाया देखकर, वह बड़ी झुंझलाती हैं। उसकी झुँझलाहट शीघ्र ही क्रोध में परिवर्तित हो जाती है। शुरू में वेमना के पिता की पीठ-पीछे वह दुर्व्यवहार करती है, फिर बाद में वह खुल्लम-खुल्ला ही उनको सताने लगती है। जो कुछ भी वेमना करते उसमें दोष निकालती, उन्हें कोसती। बासी खाना उनको देती। छोटी-छोटी बातों को लेकर तिल को पहाड़ बनाती और उनके पिता से उनकी चुगली करती। जब उनके पिता आकर उनको पीटते तो वह मन-ही-मन खुश होती। जब उस सौतेली माँ का अपना ही एक बच्चा हुआ तो वेमना की स्थिति और विकट हो गई। यद्यपि वे गर्वीले और जोशीले हैं, वे अपनी सौतेली माँ का विरोध कर सकते हैं, पर अपनी स्वर्गीय माता के प्रति जो उनका आदर है, वह उन्हें ऐसा नहीं करने देता, क्योंकि वह स्त्री, जो उनको इतना अपमानित और सता रही थी, उनके पिता के जीवन में, उनकी माँ के स्थान पर आई है।

वेमना अब युवक हो गए हैं। उनका दुःख उन्हें देवदासियों की बाँहों में ले जाता है। क्योंकि कोई भी काम बेदिली से अधूरा करने की उनकी आदत नहीं थी। वे एक बदनाम लंपट हो जाते हैं और कितनी ही बाजारू औरतों के पास जाते हैं। फिर वे उनमें से एक पर फ़िदा हो जाते हैं। वह जवान है, सुन्दर है, और कई कलाओं में प्रवीण भी है। वह गाती है, और 'तोडी' राग में तो कमाल ही करती है। वह वीणा बजाना भी जानती है। गँवार और उद्दंड वेमना के लिए उसके मन में संवेदना है। वह उनको सँवारने का प्रयत्न करती है, उन्हें शिष्ट बनाने की कोशिश करती है। पर देवदासी की माँ को, अपनी लड़की का एक ही नौजवान के साथ, जो खास धनी भी नहीं है, रहना अखरता है। वेमना अपने विलास के दाम दे रहे थे, पर न वह अधिक था न निश्चित ही। एक समय आता है, जब वे उसे वह भी देना बन्द कर देते हैं। फौरन देवदासी की बूढ़ी माँ उनका आना ही बन्द कर देती है। वे लुके-छुपे आने की कोशिश करते हैं, पर वह

चालाक औरत उन्हें भगा देती है। वेमना की तड़पन और बेकसी बढ़ती है। वे उस बूढ़ी खूसट, लालची औरत को कत्ल करने तक की सोचते हैं। और इस बीच देवदासी एक और प्रेमी को अपना लेती है। इस तरह वेमना की निराशा और ग्लानि की सीमा नहीं रहती।

अपने लड़के को कुछ सुधरा देखकर, वेमना के पिता उनकी शादी कर देते हैं। विवाह के प्रथम कुछ वर्ष बड़े ही चैन और आनन्द से कटते हैं। फिर एक बच्चा पैदा होता है और उसके बाद दूसरा। वे सुखी सन्तुष्ट जीवन के सपने लेते हैं। पर पत्नी और सौतेली माँ के निरन्तर झगड़ों को देखकर वे चिंतित रहने लगे। कोई भी दिन, घण्टा-भर भी ऐसा नहीं बीतता जब वे दोनों आपस में न झगड़ते हों। संयुक्त परिवार में रहना उनके लिए असम्भव हो जाता है और वे अपनी अलग गृहस्थी बसा लेते हैं। पर यह करने से उनके कष्ट खत्म नहीं हो जाते, वे और बढ़ जाते हैं। वे देखते हैं कि उसकी पत्नी ठीक तरह घर नहीं सँभालती है, वह आलसी है। खर्चीली है। वह स्वयं भोजनप्रिय है, पर वह जो खाना पकाती है बिलकुल रद्दी है। खाना परोसना तो कतई वह जानती ही नहीं है। वह हमेशा उनको बुरा-भला कहती रहती है। उनको चिढ़ाने के लिए बच्चों को पीटती है। बुरी तरह पाले गए बच्चों ने उसके दुःख को और भी बढ़ा दिया।

संयुक्त परिवार से अलग होकर, वे अपने खेत में बड़े परिश्रम से खेती करते हैं। गन्ना और तिलहन बोकर अच्छी फसलें तैयार करते हैं। फिर घरेलू चिंताओं के कारण खेती की उपेक्षा होती जाती है। खेती की पैदावार धीरे-धीरे कम होती है। बच्चों के बढ़ जाने से घर का खर्च भी बढ़ता जाता है। वे उधार पर गुज़ारा करते हैं। फिर एक साल गन्ने की तमाम फसल कीड़ों के लग जाने के कारण तबाह हो जाती है। उनकी लगाई हुई सारी पूँजी इस प्रकार खाक हो जाती है। महाजन आकर पैसे का तकाजा करते हैं, धमकी देते हैं कि अगर रुपया उनको न दिया गया तो वे उनके घर और खेत की कुर्की करवा देंगे।

इस तरह अपनी विपरीत परिस्थितियों से तंग होकर, वेमना रस विद्या की ओर प्रवृत्त होते हैं। वे उन लोगों की खोज करते हैं जो ये दावा करते हैं कि वे किसी मामूली धातु को सोना बना सकते हैं। एक के बाद एक धोखेबाज उनको ठगता है। अन्त में उनको एक ऐसा गुरु मिला, जिसने दिखाया कि कैसे मानव-जीवन का ही कायाकल्प हो सकता है, कैसे जीवन श्रेष्ठ और उपयोगी बनाया जा सकता है, और यह परिवर्तन मामूली धातु को सोना बनाने से भी कितना अधिक महत्त्वपूर्ण है।

क्या यह भी वेमना की जीवनी की काल्पनिक सृष्टि है? दूसरे शब्दों में,

क्या यह भी एक कथा है, भले ही यह युक्तियुक्त और सम्भव हो ? यह है और नहीं भी है। इस 'कहानी' की हर घटना के लिए वेमना की कविता आधार है। कृषि-सम्बन्धी जानकारी, भोजन में उनकी अभिरुचियाँ, पशु-पक्षियों के लिए उनका प्रेम, कुछ पशुओं की प्रति उनकी चिढ़, संगीतप्रियता, विशेषतः 'तोडी' राग की, और भी वहुत-सी छोटी-मोटी वातों के, उनकी कृतियों में बहुत-से स्पष्ट प्रमाण हैं। परन्तु उनके जीवन की कुछ मुख्य घटनाओं के वारे में प्रमाणों की जरूरत है,—जैसे वचपन में ही उनकी माता की मृत्यु, सौतेली माता द्वारा दुर्व्यवहार, देवदासी का मोह, दुखी गृहस्थी, आर्थिक कठिनाइयाँ, रस विद्या में दिलचस्पी आदि।

वेमना की वाणी में माता के प्रति प्रेम और सम्मान का विशेष स्थान है। वे कहते हैं—"जो अपनी माँ को जानता है, वह भगवान् को जानता है।" परन्तु यह एक साधारण मन्तव्य भी हो सकता है, लेकिन उनका वैयक्तिक अनुभव इस कथन में व्यक्त होता है—"जव माँ जीवित होती है, तभी प्रेम मिलता है, तभी कोई कुछ समझ सकता है, जव वह नहीं रहती तो कोई भी परवाह नहीं करता, जव समय अच्छा हो तभी कुछ वन जाओ।" यदि माता की मृत्यु के बाद, उनके साथ दुर्व्यहार न होता, उनकी उपेक्षा न की गई होती, तो क्या वेमना यह लिखते ? क्या इसमें एक दुःख-भरी कराह नहीं सुनाई पड़ती कि जव उनकी माँ जीवित थी, उन्होंने उसके अनुरूप अपने को योग्य नहीं वनाया ?

उनका एक और महत्त्वपूर्ण पद्य है, जिसका अर्थ इस प्रकार है—"एक सौतेली माता हर बात पर दोष निकालती है, वह माता की सहिष्णुता कभी नहीं दिखा सकती। कभी तुममें अन्तर्दृष्टि विकसित हो तो मानवीय स्वभाव को देखो, गहराई से देखो और परखो !" सिवाय उसके जिसको माता के न होने पर वहुत से कष्ट सहने पड़े हों, सौतेली माँ का दुर्व्यवहार सहना पड़ा हो, और कोई दूसरा यह नहीं लिख सकता।

देवदासी के वारे में वहुत-से खुले संकेत हैं। एक पद्य है—"देवदासी तुमको पसन्द कर सकती है, तुम्हारी प्रशंसा भी कर सकती है, पर इसका अर्थ यह नहीं कि तुम उसकी माँ के अपमानों से भी वच जाओगे। वह कितना अभागा है, जो एक देवदासी के चुंगल में फँस जाता है, जब कि उसकी माता अभी जीवित है।" देवदासी की घटना के प्रथम भाग का यहाँ प्रमाण मिल जाता है, और इस दूसरे पद्य में दूसरे भाग का भी—"जव प्रेमी ठंडा होकर अपनी वेश्या को घृणा में छोड़ देता है तो वह क्यों सोचे कि उस पर क्या बीतती है। पत्तल पर से जव एक वार खा लिया जाता है, तो वह गली में फेंक दी जाती है, क्या परवाह है अगर

वह गन्दी नाली में ही जा पड़े ?" क्या यह निष्कर्ष निकालना ठीक नहीं है कि इस पद्य में वेमना की निजी प्रतिक्रिया ही व्यक्त हुई है जव वह अपने को, अपने आहत अभिमान में यह समझाने का प्रयत्न करते हैं कि वह देवदासी द्वारा नहीं छोड़े गए परन्तु उन्होंने देवदासी को छोड़ा है।

आर्थिक चिन्ताओं के बारे में काफ़ी प्रमाण हैं, वे सबको खवरदार करते हैं कि कोई कभी कर्ज़ न ले। वे कहते हैं—"जिस पर कर्ज़ नहीं है, वह सवसे अधिक अमीर है।"

उनकी कृतियों में ऐसे वहुत-से संकेत हैं, जिनसे जाना जा सकता है कि उनका गार्हस्थ्य जीवन दुखी था। ऐसी वात नहीं कि उन्होंने वैवाहिक जीवन को ठीक ही न समझा हो, या उसे पूरी तरह न आजमाया हो। भगवान् के अन्वेषण के लिए वे अनुभव करते हैं कि माता-पिता, पत्नी, सन्तान सव कोई और हर चीज़ छोड़ दी जानी चाहिए। किन्तु इससे पहले वह वैवाहिक जीवन को ही उत्तम समझते हैं। "कोई क्यों स्वर्ग की अपेक्षा करे, जिसके घर प्रेम करने वाली पत्नी और वच्चे हों ?" यह कहने वाला व्यक्ति अगर वाद के जीवन में, लगातार चुड़ैलों झगड़ैल स्त्रियों के और अयोग्य वच्चों के वारे में लिखता है तो उसको सिवाय वेमेल विवाह के, कोई और चीज़ इतना कड़वा नहीं वना सकती। एक पद्य है, जो हर किसी की जुवान पर है, वे पत्नी की भर्त्सना की तुलना जूते के काटने से करते हैं, टोपी में मधुमक्खी की तरह, आँखों में किरकिरी की तरह, शरीर में काँटे की तरह।

वेमना की जीवनी[१] की सृष्टि में जो चीज वाकी रह जाती है, वह है रस-विद्या के वारे में उनकी अभिरुचि। इसके प्रमाण में वीसियों पद्य हैं। अब भी उनके शिष्य, उनकी कृतियों में से उस गुप्त मन्त्र को ढूंढ निकालने में लगे हुए हैं, जिससे उनका विश्वास है कि किसी भी धातु को सोने में वदला जा सकता है।

वेमना के लिए जीवन फूलों की सेज न थी—एक ऊबड़-खावड़ मार्ग था, जिसमें चढ़ान थी, ढलान थी, और खतरनाक मोड़ थे। वे कई बार लड़खड़ाए, गिरे, फिर उठें, और अपने गंतव्य की ओर चलते ही गए। उनके जीवन में, साधारण आदमी की अपेक्षा कहीं अधिक कठिनाइयाँ आईं, कष्ट और संकट आए, पर उन कष्टों ने उनको वलवान वनाया, परिष्कृत किया और असाधारण वनाया, उसको विस्तृत परिप्रेक्ष्य दिया, उच्च स्वर और साहसपूर्ण मौलिक दर्शन दिया।

---

१. जीवनी की पुनः सृष्टि के कुछ अंशों के लिए मैं श्री रालपल्ली अनन्तकृष्ण शर्मा का आभारी हूँ।

अन्धकार की दुहरी रात

अन्धकार और धुँधलेपन से दुहरी रात में—**मिल्टन**

यदि हमें वेमना को, एक व्यक्ति, एक कवि और दार्शनिक के रूप में पूरी तरह आँकना है, तो हमें उनके समय के बारे में सोचना होगा, क्योंकि उनका जीवन, उनकी कला, उनके विचार उनके अपने युग पर आधारित थे। यह शायद विरोधाभासी सत्य है कि वह प्रतिभा-सम्पन्न कृतिकार ही, जिसका कृतित्व अपने समय पर आधारित होता है और जो अपनी प्रेरणाएँ समसामयिक समाज से लेता है, कालजयी होकर अमरता प्राप्त करता है। जो ऐसा नहीं होता, जिसकी जड़ें अपने समय में नहीं होतीं, वह न यहाँ का है न वहाँ का, हर हवा के झोंके के साथ वह धक्के खाता है और अन्त में सर्वथा भुला दिया जाता है।

वेमना ने, जो अपने युग के बारे में पूर्णतः जागरूक थे, अनुभव किया—जैसा कि रोबर्ट लिण्ड थोमस ग्रे के बारे में कहता है—"कविता एक साहित्यिक व्यायाम नहीं है, परन्तु वास्तविकता का बिम्ब है, यह दूर स्थल और समय के आदर्शों की व्यर्थ प्रशंसा नहीं है, वह एक व्यक्ति के उतनी ही समीप है, जितनी कि उसका श्वास और उसका देश।" और वेमना ने अपने कृतित्व में अपने समय को प्रतिबिम्बित किया। हम पहले ही देख चुके हैं कि वेमना की सारी जीवनी, उनके कृतित्व के आधार पर जोड़ी जा सकती है, इसी तरह हम उनकी सूक्तियों से, कृतित्व से, उनके युग का पर्याप्त प्रामाणिक और सुन्दर चित्रण प्राप्त कर सकते हैं। वह युग पतनोन्मुख था, हर दृष्टि से विपन्न था—साधारण असुन्दर और सांसारिक वस्तुओं में विपन्न, विचार और अभिव्यक्ति में साधारण, सभी दृष्टियों से विरूप। जैसा कि भारत में अन्यत्र पाया गया, यह आन्ध्र के मध्य युग का अन्तिम और निकृष्ट भाग था। यह वस्तुतः "अन्धकार और धुँधलेपन की दुहरी रात थी।"

वेमना के युग की धार्मिक दशा, जिसकी झाँकी उनकी कविता से हमें मिलती है, मोटे तौर पर इस प्रकार है : उग्र सुधारवादी वीर शैव धर्म, उस समय न सुधारवादी था, न उग्र ही। वेमना जन्म से इसी धर्म के अनुयायी थे। इस धर्म का कर्नाटक देश के वसव ने बारहवीं सदी में प्रतिपादन किया था। यह अनेकेश्वर-वाद की निन्दा करता है, वैदिक वलि-प्रथा की भर्त्सना करता है, पोप-लीला को दूषित ठहराता है,जात-पाँत के भेद और लिगों के भेद की उपेक्षा करता है,अस्पृश्यता को गर्हित समझता है, तपस्या के अति कठोर आचरण को अस्वीकार्य मानता है। इसके सिद्धान्त नकारात्मक नहीं है। वे सकारात्मक रूप से, ऐसे ज्ञान का अनुमोदन करते हैं, जिसका आधार अनुभव है। वे ऐसी आस्था के समर्थक हैं, जिनका आधार बोध है। यह अन्तवर्गीय विवाहों द्वारा निर्मित सामाजिक समानता का हिमायती है। पारिवारिक जीवन की पवित्रता, शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा, नैतिक मूल्यों की अभिवृद्धि—ये सब ही इस धर्म के आवश्यक अंग हैं। इसमें मानवतावादी आदर्श हैं, विश्व-भ्रातृत्व की स्थापना का उद्यम है। वसव वीरशैवधर्म का आन्ध्र में प्रतिपादन लाने वाले थे पंडित श्रीपति, पंडित मल्लिकार्जुन, पालकोरिकी सोमनाथ आदि। यह शीघ्र ही दूर-दूर तक व्याप्त हो जाता है। सभी जातियों के लोग इसके अनुयायी वन जाते हैं, इसमें उच्च कुल के ब्राह्मण हैं और अस्पृश्य भी। यह नई विचार-धारा का केन्द्र वन जाता है, सुधारवादी आन्दोलन को उत्प्रेरित करता है—यह एक नये उषःकाल का द्योतक वन जाता है।

समय के साथ, वीरशैवधर्म का वहुत-सा आदर्शवाद समाप्त हो जाता है, वेमना के समय तक आते-आते, इसके मौलिक रूप का कंकाल-मात्र ही रह जाता है। यह अन्य वर्गों और जातियों को तो नष्ट न कर सका, किन्तु अपने-आपमें ही एक वर्ग वन गया। वीरशैवमत धर्मियों की इस तरह वहु विच्छिन्न हिन्दू समाज मं एक और जाति आ जुड़ी। वस्तुतः दो मतावलंवी आये, क्योंकि वीर शैव जात-पाँत के आधार पर दो वर्गों में बँटे हुए हैं, एक आराध्य, जो ब्राह्मण कुल के हैं और दूसरा जंगम, जो अब्राह्मण हैं। यही नहीं, इसके कारण नये कर्मकाण्ड आते हैं, पुरोहितों का नया वर्ग पैदा होता है, कथा-कहानियों की भरमार हो जाती है, और कितने ही अन्धविश्वास जड़ पकड़ते हैं। श्रद्धा के बाह्य रूप को उसके आन्तरिक तत्व या आत्मा की अपेक्षा अधिक महत्ता दी जाती है। यदि कोई लिंग का धारण करता है, माथे पर विभूति लगाता है, निश्चित समय पर शिव के नाम का पारायण करता है, निश्चित तिथियों पर व्रत करता है. कभी-कभी तीर्थ-यात्रा कर आता है, तो समझा जाता है कि उसने अपने धर्म का पालन कर लिया है। धर्म, दूसरे शब्दों में, एक सुव्यवस्थित पाखंड वन जाता है। वेमना को यह

सब असह्य है। वे पूछते हैं, "धार्मिक कर्मकाण्डों के औपचारिक, कृत्रिम पालन का क्या अर्थ है ? शिव की श्रद्धा-रहित पूजा का क्या उपयोग है ? उस भोजन का क्या लाभ, जिसे गन्दे बरतन में पकाया गया हो ?" उदार दृष्टिकोण और दूसरे धर्मों के प्रति सहिष्णुता का प्रतिपादन करते हुए वे कहते हैं, "आप इसको 'कुण्ड'—(तेलुगु में घड़े के लिए कहें या कुम्भ (संस्कृत में) दोनों का अर्थ एक ही है। इसी तरह 'कोण्ड'—(तेलुगु में पहाड़ के लिए) या पर्वत, दोनों ही पर्वत का बोध कराते हैं, फिर यदि आप इसे 'उप्पु' (तेलुगु में नमक) कहें या'लवण' दोनों ही नमक हैं। अनेक नामों के बावजूद, ईश्वर समान है एक है। और जब वे पाते हैं कि उनके वीरशैव साथी उनकी बात नहीं मान रहे हैं, तो वे फूट पड़ते हैं "षडदर्शनों में से कोई भी वीरशैव की बराबरी नहीं कर सकता, धार्मिक पाखण्डियों में लिंगधारियों को कोई भी मात नहीं दे सकता।"

विष्णु सिद्धान्त या वैष्णव मत, जैसा कि प्रायः यह कहा जाता है, सुधारवादी आदर्शवादी आन्दोलन के रूप में प्रारम्भ हुआ, पर वेमना के समय तक आते-आते सुधार की यह आग, चिराग बनकर ही रह गई थी। इसमें भी जात-पाँत, के वर्गभेद बुरी तरह बढ़ जाते हैं, उदाहरण के लिए यह काफ़ी है कि इसके अनुयायियों में 'तेगला' और 'वडगला' एक-दूसरे को विष समझकर घृणा करते हैं। जैसा कि ब्राऊन ने बाद में कहा कि उनके विवाद का विषय था कि मस्तक पर लगाये जाने वाले टीके का क्या रूप हो, जिसे दोनों ही प्रातःकाल स्नान के बाद लगाते हैं। यह विवाद इतना कलहपूर्ण था कि इसके कारण ब्राऊन के ही शब्दों में, "बहुत से झगड़े हुए, और कई मारे भी गए।"

शैव मत और वैष्णव धर्म के कलह तो और भी भयंकर हैं। उनके कारण कई बार युद्ध हुए और निरर्थक रक्तपात हुआ। दो युद्धों के मध्य काल में, तनातनी और आपसी नफ़रत बनी रही—यह एक तरह की सशस्त्र लड़ाई थी। शायद यह अविश्वसनीय लगे कि एक वैष्णवमतानुयायी को शैवमतानुयायी द्वारा छूने पर स्नान से अपने को शुद्ध करना होता है। इसी तरह वैष्णवमतानुयायी का स्पर्श शैवमतानुयायी को अशुद्ध बना देता है। यह नितान्त मूर्खता वेमना को इतनी बुरी लगती है कि वे कहते हैं, "वैष्णवमतानुयायी और शैवमतानुयायी में भेद ही क्या है, सिवाय इसके कि मौत आने पर पहले को जला दिया जाता है और दूसरे को गाड़ा जाता है, तो क्यों भगवान् के नाम पर लड़ते हो ?" वे एक कदम आगे बढ़कर कहते हैं, "हमारे बहुत-से धर्म हैं, पर कोई भी शाश्वत और निश्चित नहीं है। केवल शाश्वत हैं, हमारे अच्छे और बुरे कार्य। अन्तिम विशेषण में सत्य पर किसी धर्म विशेष का स्वत्वाधिकार नहीं है।" शायद यह

सोचकर कि उन व्यक्तियों से तर्क करना ही व्यर्थ है, जिनका धर्म में निहित स्वार्थ है, वेमना जन साधारण को तथाकथित धार्मिक पुरुषों के बारे में आगाह करते हैं—"ऐसे बहुत-से ठग हैं, जो धर्म का व्यापार करते हैं। उनसे सावधान रहो, क्योंकि वे ऐसे सारसों का झुंड है, जो मछली की ताक में हैं।"

जैसे-जैसे शैव मत और वैष्णव मतों की अवनति होती गई, वैदिक बलि-प्रथाएँ उभरने लगीं—पुराने जमाने में बड़े पैमाने पर तो नहीं, फिर भी बलियाँ प्रायः दी जाती थीं। वेमना इस प्रथा को स्पष्ट शब्दों में कुत्सित बताते हैं—"तुम लोगों के उच्च कुलीन होने का दावा किस आधार पर है? यह क्या आहुति के नाम पर निःसहाय पशुओं को मारने में है या उनके मांस को अग्निकुण्ड की अग्नि में भूनकर खाने में है?" वे अपना तर्क जारी रखते हैं, "यदि तुम शेर की तरह बलवान हो, जैसा कि तुम दावा करते हो, क्या तुम्हें अपनी शेर की ताकत बकरियों का गला घोट कर ही दिखानी है?" एक और जगह वह पूछते हैं, "क्या किसी उदात्त लक्ष्य के लिए अपने को बलिदान कर देना सबसे अच्छा बलिदान नहीं है?" कहा जाता है कि जो वैदिक बलियाँ करता है, वह स्वर्ग में अप्सरा रम्भा का सहवास पाता है। इस विश्वास के बारे में वेमना की युक्ति यह है—"यदि पिता-पुत्र, दोनों ही बलियाँ देकर स्वर्ग पहुँच गए, तो क्या वे दोनों एक साथ रम्भा की शैया पर लेटेंगे? क्या वे सगोत्र सम्भोग के अपराधी नहीं माने जायँगे? जिस प्रकार बारम्बार और लगातार तत्कालीन धार्मिक अन्ध-विश्वासों पर वेमना प्रहार करते हैं, उससे यह अनुमान किया जा सकता है कि वे विश्वास कितनी निम्न स्थिति तक पहुँच चुके थे।

उस युग की सामाजिक-राजनैतिक स्थिति भी कोई अच्छी नहीं है। कोई केन्द्रीय शासन नहीं है। केवल छोटे-छोटे राजाओं के छोटे-छोटे सामन्त हैं। वे इतने कमज़ोर हैं कि वेमना कहते हैं कि "कोई भी उत्पाती, बिना दण्ड-भय के राजा के विरुद्ध उपद्रव कर सकता है।" राजा भी, सत्तारूढ़ किन्तु दुर्बल व्यक्तियों की तरह चिड़चिड़े हैं, चंचल चित्त हैं, खुशामदियों की भीड़ के बीच रहते हैं, खुशामद के वे ऐसे चटोरे हैं, जैसे खुशामद ही उनका मुख्य भोजन हो, वे विनोद और विलास का जीवन व्यतीत करते हैं, वे जनता पर खूब अत्याचार करते हैं। जब उनको मालूम हो जाता है कि वह बदला नहीं लेगी। ऐसे ही एक राजा के बारे में वेमना का कहना है, "उसका लड़का धूर्त है, दोस्त चुगलखोर है, वह मूर्ख है, और उसका मन्त्री बेवकूफ़ है सचमुच कभी कोई बन्दर अकेला उतना खुश नहीं होता जितना कि बड़े बन्दरों की सोहबत में।" जब एक निकृष्ट व्यक्ति को सत्ता मिलती है तो वह सभी योग्य व्यक्तियों को निकाल देता है—वह कुत्ता,

जो जूते खाने का आदि हो, गन्ने के रस का स्वाद क्या जाने ?" अन्त में वे सावधान करते हैं, "न राजा का विश्वास करो, न उसकी सेवा ही करो, क्योंकि यह भयंकर नाग के साथ से कम भयंकर और खतरनाक नहीं है।"

इस तरह के दुर्वल और धूर्त राजाओं के दुःशासन में, न जीवन की कोई सुरक्षा है, न सम्पत्ति की ही। डाकू गाँव लूटते हैं और उनको कोई सजा नहीं दी जाती। उनको सम्वोधित करते हुए वेमना कहते हैं, "तुम लोगों को मार रहे हो, घायल कर रहे हो, गाँवों को लूट रहे हो, आज तुम विना दण्ड के घूम-फिर सकते हो, क्या तुम यम के क्रोध से वच सकोगे ?" अन्तिम दिन के न्याय की धमकी या चेतावनी से डाके या कत्ल की ज़िन्दगी के कारण, पक्के दुष्ट या अपराधी, लूट-खसोट या मार-पीट की जिन्दगी से वाज नहीं आते।"

वेमना की इस चेतावनी का भी उन पर कोई असर न हुआ होगा। दुःशासन की अराजकता के साथ और भी पीड़ाएँ आती हैं, जैसे अकाल और छुआछूत की वीमारियाँ, और जीवन ठहर जाता है। कला और शिल्प की अवनति होती है। विद्वत्ता क्षीण होती है। वेमना पूछते हैं, "जब लोगों में भुखमरी हो तो कलाएँ और शिल्प कैसे पनप सकते हैं, कैसे विद्या की वृद्धि हो सकती है ? अधपके मिट्टी के वरतन में पानी नहीं ठहर सकता।"

यह वेमना के लिए और भी गौरव की वात है कि इतने पतनोन्मुख और अन्धकारपूर्ण युग में पैदा होकर भी, उन्होंने इसके विरुद्ध अपनी आवाज उठाई, और विना लाग-लपेट के इसकी भर्त्सना की। यदि कभी उनका स्वर अप्रिय रहा, या उनके शब्द कठोर रहे, या उनकी आलोचना कड़ी रही, तो इसका अर्थ यह नहीं कि वे स्वयं अप्रिय, कठोर या कड़े थे। वे स्वभाव से वहुत ही विनम्र, स्नेह-शील और सहिष्णु थे। वस्तुतः उनकी अपनी संवेदनशीलता ही थी, जिसने उनको अपने युग के पतन के विरुद्ध आवाज उठाने को वाध्य किया। भले ही लोगों ने उनको कपटी और पागल आदि विशेषणों से विभूषित किया हो। इन विशेषणों को उसने उपाधियों के तौर पर स्वीकार किया और अपनी दिव्य दृष्टि के अनुरूप अपना जीवन विताया। वे मध्य युग के अन्तिम कवि और दार्शनिक हैं।

कवि बोल उठा

कवि ने अपना मनोभाव प्रकट कर दिया—**एमर्सन**

अब तेलुगु के साहित्य के पोप वेमना को कवि तो मानते हैं, पर एक छोटा-मोटा कवि ही। उनके मत में, वे अधिक-से-अधिक 'शतक' कवियों में उल्लेखनीय हैं। यह सत्य है कि वेमना के पद्य 'शतक' आकृति में हैं, उनमें शतकों की टेक भी है, जब कभी वे परिवर्तित भी होते हैं, तो यह परिवर्तन स्वल्प है। यदि कविता के रूप को महत्ता न देकर, उसके भाव को परखा जाय, तो वे शतक कवियों से उसी प्रकार भिन्न हैं, जिस प्रकार पनीर खड़िया से। सैकड़ों शतक कवि हैं, वे मोटे तौर पर स्तुतिकार कवि हैं। या तो उन्होंने अपने इष्ट देवताओं की स्तुति की है, नहीं तो धनी आश्रयदाता की प्रशंसा। वे प्रायः उपदेश ही देते हैं, और उनके उपदेश नीति-पुस्तकों के उपदेशों की तरह बासे, बेस्वाद हैं। उनके मन उथले और रूखे हैं, शैली बड़ी मामूली, और कविता-विद्या-दम्भ से भरी हुई है। ठीक इनसे विपरीत, वेमना, अन्तर्भावनाओं में मौलिक हैं, प्रकृति के निरीक्षण में सूक्ष्म हैं, भावात्मक प्रतिक्रियाओं में वे सच्चे और प्रेरक हैं, चिन्तन में कुशाग्र हैं, और अभिव्यक्ति में निर्भीक हैं। यदि उनको शतक कवि कहा जाता है, या जैसे वी० पी० चञ्चय्या और राजा भुजंग राव ने अपनी पुस्तक 'तेलुगु लिट्रेचर' में उनको 'शतक कवि-सम्राट्' कहा है तो इस प्रकार वेमना के साथ अन्याय करना ही है। इसी पुस्तक की भूमिका में डॉ० सी० आर० रेड्डी का कथन बिलकुल समीचीन है, जब वे यह कहते हैं कि "वेमना हमारे साहित्याकाश के सबसे बड़े नक्षत्र हैं।" उन्होंने भले ही पुराण और प्रबन्ध न लिखे हों, पर वे शास्त्रीय कवि हैं। उनकी कविता में शास्त्रीय परिष्कृति है और उनके सन्देश में शास्त्रीय विश्व-व्यापकता। यदि 'हिस्ट्री ऑफ़ इंगलिश् लिटरेचर' के संयुक्त लेखक कज मियेन के शब्दों में कहा जाय तो 'वेमना का साहित्य—श्रेष्ठ शास्त्रीयता से भरा है।' राबर्ट बर्न्स के बारे

में वह लिखता है, "वर्न्स की कविता की विशेषता उसके श्रेष्ठ शासनीयता की उत्कृष्टता है। आलंकारिक अर्थों में उसके साहित्य में एक ऐसी उत्कृष्टता है, जो साहित्यिक उपदेशवादिता से मुक्त है और स्वयं पर्याप्त है।" वेमना भी वर्न्स की तरह कृपक-समाज के हैं, उनकी तरह ही प्रतिभाशाली हैं और उन्होंने उनकी तरह ही उन्होंने भी 'उत्कृष्ट साहित्य' की सृष्टि की है, जो अपने-आपमें पर्याप्त है।

वेमना ने पद्य लिखे नहीं थे, वरन् वे उनके मुख से प्रस्फुटित हुए थे। उनके लिए, वर्ड्सवर्थ की तरह कविता 'शान्त वातावरण में भावनाओं का स्मरण'-मात्र नहीं है। ये ऊष्णोष्ण भावनाएँ ही हैं। वे इतने संकल्पशील और आशुकवि थे कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए, उनके जमने तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे। उनकी अपनी दृष्टि में उनकी भूमिका कवि की न थी, परन्तु रहस्यवादी की थी, प्रवक्ता की थी। इसलिए उन्होंने कविता-शास्त्र पर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने शायद दण्डी, अभिनव गुप्त, हेमचन्द्र, भोज आदि अलंकारशास्त्रियों का नाम ही न सुना हो। पर उनके मुख से कविता फूट पड़ी। वे जन्म-जात कवि थे, वे अपने हृदय की अन्तरतम अनुभूतियों को कविता में ही अभिव्यक्त कर सकते थे। इसी कारण, कभी उनकी कविता जल-प्रलय-सी है, तो कभी ज्वालामुखी-सी, तो कभी प्रभंजन-सी। दूसरी तरफ, वह अत्यन्त परिवर्तनशील है, वह ग्रीष्म के बाद प्रथम वर्षा की तरह है, दक्षिण की ठंडी वयार की तरह है, या उषा-काल के पक्षियों की चहचहाहट की तरह है।

१९५० में आकाश वाणी मद्रास से प्रसारित एक रेडियो-वार्ता में डॉ० सी० आर० रेड्डी ने कहा था, "वेमना प्रकृति के तो कवि हैं ही, वे प्रकृतिसिद्ध प्राकृतिक जन्मजात कवि भी हैं।" उनके आलोचनात्मक मूल्यांकन का कुछ अंश हम यहाँ दे रहे हैं—

> वे बहुत पढ़े-लिखे न थे, किसी भी हालत में पंडित न थे, पर वे गम्भीर चिन्तक थे, संसार की लौकिक और आध्यात्मिक समस्याओं का मर्म जानते थे। उनकी कविता शुद्ध, अकलुषित निर्झर की तरह थी, शैली और चिन्तन में भी नितान्त स्वाभाविक और मौलिक। "केवल तीन पंक्तियों में वे सारी भावनाएँ अभिव्यक्त कर देते हैं। यदि बुद्धि-चातुर्य संक्षेपण में है, तो संसार में उनसे बड़ा कोई बुद्धिमान कवि नहीं है। उनकी सारी उपमाएँ, उत्प्रेक्षाएँ; वन, खेत, ग्रामीण दृश्यों से सम्बन्धित हैं। वे प्रकृति के कवि ही नहीं, प्रकृति-सिद्ध कवि हैं।"

वे भी, जो वेमना के चिन्तन का विरोध करते हैं, यह मानते हैं, कि उनकी

कविता का शब्द-संयोजन असाधारण है। वह सरल है पर सतही नहीं, मधुर है पर चाशनीदार नहीं। इसमें प्रयुक्त भाषा, जैसा कि हम प्रथम अध्याय में कह चुके हैं जिसमें वे बड़े प्रवीण थे, तेजपूर्ण और वैविध्यता-संपन्न है। यह सत्य है कि कभी-कभी उनकी कविता में स्पष्टता की कमी दिखाई देती है, पर यह उन्हीं विषयों के बारे में है, जो रहस्यवादी हैं और जिनका सम्बन्ध रहस्यात्मक या आध्यात्मिक अनुभवों से है। आध्यात्मिक अनुभव वैयक्तिक होते हैं, एक व्यक्ति तो उनका अनुभव कर सकता है, दूसरा नहीं कर सकता। जो उनका अनुभव करते हैं, उनके लिए वे वास्तविक हैं, और जो नहीं करते उनके लिए वे अवास्तविक और दुर्बोध हैं। सभी योगी, चाहे वे हिन्दू हों या ईसाई या सूफ़ी अपने आध्यात्मिक अनुभवों को, बिना प्रतीकों के, अभिव्यक्त नहीं कर पाते। और योगियों की तरह वेमना भी अपने विशेष प्रतीकों का प्रयोग करते हैं—'निद्रा से परे निद्रा', 'ज्ञान के ऊपर ज्ञान', 'अन्तरिक्ष के अन्दर अन्तरिक्ष', 'आभास के अन्दर आभास', 'यवनिका के पीछे का प्रकाश', 'शरीर की आत्मा और आत्मा का शरीर' उनके बहुत-से प्रतीकों में से ये कुछ उदाहरण हैं। साधारण जनता की दृष्टि में वे भले ही अस्पष्ट हों, पर वेमना के पद्य, आजकल के अतियथार्थवाद और कविता, और कल्पित कला से अधिक अस्पष्ट नहीं है। यह न जानते हुए कि कुछ बातों का संकेत मात्र ही किया जा सकता है, उनकी व्याख्या संभव नहीं होती। वेमना के शिष्य उनके इस प्रकार के पद्यों की व्याख्या करने की हास्यास्पद चेष्टा करते हैं।

वेमना ने अपनी कविता के लिए 'आखेलदी' छन्द चुना। यह उनकी प्रतिभा के अनुरूप है। यह उनका अपना आविष्कार नहीं है, बल्कि बहुत ही प्राचीन छन्द है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'नृत्य करती कन्या'। नन्नय्या से लेकर आज तक सैकड़ों कवियों ने इसका उपयोग किया है, पर कोई भी इस छन्द को उतने सुन्दर रूप से नहीं 'नचा' पाया जिस तरह कि वेमना ने कर दिखाया था। कालिदास के लिए जो 'मन्दाक्रान्ता' छन्द था या भवभूति के लिए 'शिखरिणी', तिक्कन्ना के लिए 'कन्द' था, या श्रीनाथ के लिए जिस प्रकार 'सीस' था, उसी प्रकार वेमना के लिए 'आटवेलदी' था। हम अंग्रेजी से भी दो समानान्तर उदाहरण ले सकते हैं। जो कमाल शेक्सपीयर ने मुक्त छन्द में किया था, या पोप ने अपनी पंक्तिद्वय में किया था, लिटन स्टेची का इस बारे में कथन है, "यह पोप के हाथ में अपने स्वभाव की चरम सीमा पर या चरम महत्ता, श्रेष्ठ परिपूर्णता को प्राप्त कर सका।" वेमना के हाथ में 'अटवेलदी' का भी यही महत्त्व था। वेमना से पहले कोई भी तेलुगु कवि इसके नैसर्गिक प्रवाह, सरलता, लय, सुरीलेपन का उपयोग न कर

पाया था ।

वेमना के पद्यों के संग्रहों में हमें बहुत-सी कृतियाँ मिलती हैं, जो 'आटवेलदी' छन्द में नहीं रची गई हैं। उनके मुख्य कृतित्व की तुलना में उनमें समानता भी नहीं है। उनमें न वह सरलता है, न प्रवाह भी, न प्रभाव ही। रालपल्ली का परामर्श है कि ऐसे सब धंधे को नकली समझा जाना चाहिए और वे ठीक हैं।

इस 'आटलवेदी' छन्द का वेमना ने किस चातुर्य से उपयोग किया है, उसका सारांश डॉ० जी० वी० कृष्णा राव के शब्दों में इस प्रकार हैं :

> प्राय: अपने 'आटलवेदी' की प्रथम दो पंक्तियों में वेमना अपने भाव को व्यक्त करते हैं, इसको परिपुष्ट करने के लिए, वह तीसरी में जोरदार उपमा देते हैं और चौथी पंक्ति आभूषण मात्र है—टेक है। इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि सारे पद्य का सौन्दर्य तीसरी पंक्ति 'दृष्टान्त' में है। कभी-कभी अच्छा निशानेबाज भी अपना निशाना चूक सकता है, पर वेमना अपना उपमाओं में नहीं चूकते। उनकी कविता का चातुर्य और महत्ता बहुत अंशों तक इस पर ही निर्भर करती है। उनके उपयोग से इसमें नवीनता आई है, ताज़गी आई है, कभी-कभी यह इस प्रकार सूचित रूप में व्यक्त होता है कि पाठक चकित रह जाता है। यदि कालिदास उपमाओं का कवि है, तो वेमना दृष्टान्तों का।[1]

जन साधारण का खयाल है और डॉ० जी० वी० कृष्णा राव का भी मत है कि वेमना भले ही अपने सारे पद्यों में 'दृष्टान्त' का उपयोग न करते हों, पर उन्होंने अपने अधिकांश पद्यों में इसका उपयोग किया है। परन्तु वर्गीकृत आँकड़ों के अनुसार, उनके पन्द्रह प्रतिशत कृतित्व में ही दृष्टान्त का उपयोग मिलता है। इनमें से कई आवृत्ति-मात्र भी हैं, कहीं-कहीं कुछ शब्दों का हेर-फेर अवश्य हुआ है। और कहीं-कहीं यह भी नहीं हुआ है। वेमना के दृष्टान्त प्राय: इतने उचित, उपयुक्त, प्रभावशाली और आश्चर्यजनक हैं कि ऐसा अनुभव होता है, जैसे वे सदा दृष्टान्त का ही उपयोग कर रहे हों। उनके छन्द-संयोजन के बारे में यहाँ एक बात कही जानी चाहिए। यह सत्य है कि वेमना तर्क में बड़े प्रवीण हैं। पर यह कहना सही नहीं है, जैसा कि कुछ लोगों का विश्वास है, कि उनका प्रत्येक पद्य एक विचार से प्रारम्भ होता है, फिर दूसरी पंक्ति में उसका व्यतिक्रम और तीसरी में संश्लेषण। उनके सौ से अधिक पद्यों में भी यह निश्चित क्रम नहीं है।

---

१. इस उदाहरण में शब्दों को कहीं-कहीं बदला गया है, पर भाव मूल के ही हैं।

यद्यपि अनुवाद में मूल का बहुत-कुछ सौन्दर्य चला जाता है तथापि वेमना की तृतीय पंक्तियों को, जो प्रश्नवाचक हैं, यहाँ उद्धृत किया जा रहा है : "जब तक तुम चिराग नहीं जला लेते, कैसे अन्धकार को हटा सकोगे ? क्या कुत्ते की पूंछ पकड़कर गोदावरी पार कर सकते हो ? क्या एक मच्छर एक हाथी को बचा सकता है ? क्या कोयले को दूध से धोकर सफेद किया जा सकता है ? जब एक बार झील सूख जाती है, तब क्या सारस उसे छोड़कर चले नहीं जाते ? जब एक छोटा लड़का मशाल पकड़ता है तो क्या उसका प्रकाश कम हो जाता है ? भेड़ भेड़िये की मौत का मातम क्यों मनाये ? क्या कुत्ते की दुम सीधी की जा सकती है ? क्या गुड़िया को आप नीति-बोध करा सकते हैं ? इत्रों के ढोने से गधे की हालत तो नहीं बदल जाती ? क्या एक दीवार चोटी से तह तक बनाई जा सकती है ? चाहे गेंद कितनी भी ऊपर फेंकी जाय क्या वह वहाँ रह सकती है ? क्या सोना उतना गूँजता है, जितना कि काँसा ? क्या शीशे में पहाड़ भी छोटा नहीं दिखाई देता ? गोदावरी में गोता लगा लेने से क्या कुत्ता शेर हो सकता है ? कीचड़ में रहने वाला सूअर क्या पनीर पसन्द कर सकता है ? भैंसा भले ही बहुत बड़ा हो, क्या वह हाथी की बराबरी कर सकता है ? पुरुष का काम करने मात्र से क्या स्त्री पुरुष हो सकती है ? करछी को भोजन का स्वाद क्या मालूम ? बड़ का पेड़ बड़ा है, पर क्या इसका बीज छोटा नहीं है ? अगर सिर साफ़ तौर पर मुँडा दिया गया हो तो क्या अन्दर के विचार भी साफ़ हो जाते हैं ? ये और वेमना की अन्य तीसरी पंक्तियाँ आज तेलुगु में कहावतें बन गई हैं ।

वेमना में परिहास-प्रियता की भी प्रतिभा है । गान्धी जी ने एक बार कहा था, "अगर मुझमें परिहास-प्रियता न होती, तो कभी का मैं आत्महत्या कर चुका होता ।" ये शब्द वेमना के बारे में भी सार्थक हैं । उनके सामने इतने महान् लक्ष्य थे और इस तरह सामाजिक सुधारों के कार्य में जूझे हुए थे कि अगर उनमें अपना ही परिहास करने की प्रवृत्ति न होती तो वे भी आत्महत्या कर चुके होते । वे कहते हैं कि "अगर तुम एक कंजूस का काम-तमाम करना चाहो, उसे न जहर देने की जरूरत है, न कुछ और करने की ही, जाकर बड़ा-सा दान माँगो, उसे इससे इतनी चोट लगेगी कि वह तुरंत ठंडा हो जायगा ।" "अगर बाँझ गाय को दुहने की कोशिश की, तो सिवाय लातों के कुछ नहीं मिलेगा, अगर कंजूस से वास्ता पड़ा तो अनुभव इससे कोई अच्छा न होगा । अगर कंजूस के घर में किसी की मौत हो गई हो तो वह जोर से चिल्लायेगा, रोयेगा धोयेगा—क्योंकि उसे अन्त्येष्टि का खर्च उठाना पड़ेगा ।" उन लोगों का परिहास करते हुए, जो यह सोचते हैं कि आध्यात्मिक गुरु एकान्त में ही पाये जा सकते हैं । वे कहते हैं, "यदि

तुम किसी अँधेरी गुफ़ा में, स्वर्ग पहुँचने के लिए किसी गुरु की तलाश में गये, तो कोई जंगली जानवर वहाँ तुमको और जल्दी पहुँचा देगा।" जैसा कि डिकिन्स के बारे में कहा गया है, वेमना का परिहास भी "कुछ हद तक मिशनरी परिहास है"—उसका मूल उद्देश्य सिर्फ़ हँसाना नहीं है, पर एक निश्चित कर्तव्य को पूरा करना भी है।

वेमना के शस्त्रागार में दो और पैने शस्त्र हैं—व्यंग्य और वक्रोक्ति। डॉ० सी० आर० रेड्डी के कथनानुसार, वेमना को वाल्तेयर के इस मत पर पूरा विश्वास था कि तर्क से अन्ध विश्वास को नहीं हटाया जा सकता, क्योंकि अन्ध विश्वास का और तर्क का कोई सम्बन्ध ही नहीं है। इसलिए वेमना तर्क नहीं करते वह चोट करते हैं, घाव करते हैं और पाखण्डों को हास्यास्पद करार देते हैं। वेमना के व्यंग्य और वक्रोक्तियों के बीसियों उदाहरण दिये जा सकते हैं। उन लोगों का खण्डन करते हुए, जो धर्म की आत्मा की उपेक्षा करते हुए, बाह्य कर्मकाण्ड को अधिक महत्ता देते हैं, वे कहते हैं—"क्या बार-बार स्नान करने से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है?—तो उस हालत में, सब मछलियाँ मुक्ति प्राप्त हैं। अगर माथे पर राख मलने से मुक्ति मिलती हो, तो गधा राख में ही लोटता है। अगर शाकाहार से ही शारीरिक पूर्णता मिलती हो, तो बकरी इस विषय में तुमको मात कर देगी। यदि शूद्र का लड़का शूद्र ही हो, तो ब्राह्मणोत्तम के रूप में वशिष्ठ की कैसे पूजा कर सकते हैं? क्या वह शूद्र-स्त्री उर्वशी के पुत्र नहीं थे? भले ही वह स्वर्गीय वेश्या हो? अगर अछूत स्त्री के पति को भी अछूत समझा जाय, तो वशिष्ठ के बारे में तुम कैसे गर्व कर सकते हो? क्या उनकी पत्नी अरुन्धती अछूत नहीं थी? जब तुम कोई वैदिक कर्मकाण्ड करते हो, या तीर्थ-स्थान पर जाते हो, तो मुण्डन करने के लिए नाई सिर पर पानी छिड़कता है और तुम्हारी आत्मा को पवित्र करने के लिए पुरोहित भी जल छिड़कता है। कोई नहीं कह सकता कि पुरोहित के पानी ने चमत्कार किया या नहीं, पर नाई के पानी ने काम किया, यह दिखाने के लिए मुँडा सिर गवाही दे रहा है।" फिर वे पुराणों पर प्रहार करते हैं, "तुम कहते हो कि विष्णु क्षीरसागरशायी है तो उसने —जैसा कि कृष्ण ने किया था, ग्वालों के घरों से दूध क्यों चुराया? क्या इसलिए कि चोरी का माल ज्यादा स्वादिष्ट होता है? बिना किसी प्रवंचना की आशंका किये, राम अपनी नवयुवती पत्नी को छोड़कर, सोने के हरिण के शिकार के लिए चले गए। कैसे एक बिना सोचने वाला आदमी भगवान् हो सकता है? क्या राम ने, जैसा कि आप लोगों का विश्वास है, अग्नि-बाण छोड़कर, समुद्र सुखा दिया था? तब क्यों नहीं समुद्र पार करके वे लंका चले गए? जब रास्ता साफ़ था,

तो उन्होंने पुल क्यों बनवाया ? ब्रह्मा एक को धन देता है, और दूसरे को उदारता। भगवान् की भी क्या बेअक्ली है ?"

इस प्रकार वेमना की शैली में, जैसा कि डॉ० सी० आर० रेड्डी का मत है, "कड़वी दाहकता है, तो व्यंग्य, वक्रोक्ति, परिहास का मिठास भी है।" उसीके विषयों का क्षेत्र भी बहुत विस्तृत है। हर चीज़, जिसका मनुष्य के जीवन से और उसके सुख-सन्तोष से सम्बन्ध था, उनके लिए महत्त्व रखती थी। गेटे के बारे में मैथ्यू आर्नल्ड का यह कथन है—

> उसने कष्ट उठाते हुए मावन जाति को देखा,
> उसने इसका घाव, हर घाव देखा, हर दुर्बलता परखी,
> एक-एक जगह उसने अपनी अंगुली रखी,
> और कहा, 'तुम्हें यहाँ कष्ट है, यहाँ कष्ट है।'

इसी प्रकार वेमना ने भी किया था। उन्होंने न केवल रोग का निदान किया था बल्कि उसके लिए औषधि भी सुझाई थी। जनता की सेवा में वे हमेशा पर्यटन करते रहे। वे गाँव-गाँव, बस्ती-बस्ती, घर-घर घूमते रहे। वे हर जगह मनुष्य को सम्बोधित करके बोले और जब कभी भी बोले पद्य में। वह इस उद्देश्य से नहीं बोले थे कि उनका पद्य लिपिबद्ध हो, इसकी उन्होंने परवाह ही नहीं की कि वे लिपिबद्ध हो रहे हैं या नहीं। फिर भी उनके शिष्यों ने आदरवश, स्नेहवश कुछ को लिपिबद्ध कर लिया। चूंकि वे पंडित न थे, इसलिए जो कुछ उन्होंने ताड़पत्र पर लिपिबद्ध किया, उसमें कई गलतियाँ भी रह गईं। फिर जब उनकी प्रतियाँ बनाई गईं, तो और भी गलतियाँ बढ़ गईं। और जब प्रतिलिपिकार किसी शब्द को न समझ पाए तो उन्होंने अपनी तरफ से कुछ शब्द जोड़ दिए। यही नहीं, उनके प्रशंसकों और निन्दकों ने कुछ ऐसे पद्य, जो उनके न थे, उन पर थोप दिए।

ब्राऊन के बाद, नई प्राप्त पाण्डुलिपियों से, और जन साधारण से, जिनमें वे पद्य प्रचलित थे, कोई तीन हजार पद्य एकत्र किये गए। उनमें से वस्तुतः वेमना के कितने हैं यह सन्देहास्पद है। ब्राऊन के संग्रह में कई ऐसे पद्य हैं जो बाहर से जोड़े गए हैं। जो भी हो, अभी तक वेमना के पद्यों का क्रमबद्ध, आलोचनात्मक संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। वेमना के प्रकाशक, ब्राऊन के संग्रह में कुछ परिवर्तन कर-कराकर, उसको अब तक छापते रहे हैं।

अब समय आ गया है जब कि यह दुःखद स्थिति सुधारी जानी चाहिए। अगर उन पद्यों को, जो आटलवेदी छन्द में नहीं है, सिवाय कुछ कन्दम छन्द के, जो वास्तविक प्रतीत होते है, हटा दिया जाय, और इनमें वे पद्य ही अगर रखे

जायँ, जिनमें पुनरावृत्ति नहीं है, और वे पद्य, जो वेमना के विश्वासों के विपरीत जान पड़ते हैं, नकली समझकर निकाल दियें जायँ, तो सम्भवतः उनके पद्यों की संख्या दो हजार से अधिक न होगी। उनके सम्पादन में, वेमना के पद्यों को संशोधित करने की कोई चेष्टा नहीं की जानी चाहिए। वेमना के पद्य जन-साधारण की भाषा में, जन-साधारण के लिए हैं, इसलिए उनकी बोल-चाल की भाषा को सुरक्षित रखा जाना चाहिए। व्याकरण और पिंगल की अपेक्षा उन्होंने संक्षिप्तता और प्रभाव को ज्यादा महत्त्व दिया और जब उनको लगा कि नियमों को तोड़ना आवश्यक है, तो उनको तोड़ने में वे न हिचके। उन्होंने ये उल्लंघन जान-बूझकर किये थे, इसलिए उनको सुधारने का प्रयत्न नहीं किया जाना चाहिए। अपने जीवन की किसी-न-किसी दशा में, व्याकरण के वितंडावादी पंडितों ने उनके इन उल्लंघनों की आलोचना की होगी, अन्यथा वे यह न कहते—"यह निकृष्ट व्यक्ति शास्त्रीय कवि की तरह लिख नहीं सकता, परन्तु छिद्रान्वेषण का साहस रखता है, कुत्ते के लिए पात्रों का ढेर लुढ़का देना आसान है, पर उनको बनाना नहीं।" अतः यह आवश्यक नहीं है कि वेमना के पद्यों को व्याकरण और पिंगल-सम्मत बनाया जाए, बल्कि आवश्यक है कि आधुनिक और वैज्ञानिक तरीकों से उनके कृतित्व का सम्पादन किया जाय, और उनको प्रकाशित किया जाय।

वेमना के पद्यों में कई ऐसे हैं, जो लगभग अश्लील हैं। समयानुसार वे बड़े कड़वे, तेज और तीखे हो सकते थे। पर उनकी अश्लीलता को अपराधी नहीं ठहराया जा सकता। एक अपने पद्य में वे उनकी निन्दा करते हैं, जो अश्लीलता में आनन्द लेते हैं। वे उनको कीचड़ में लोटने वाले सूअर कहते हैं। तो उनके पद्यों का जो संस्करण प्रकाशित हो, उनमें अश्लील पद्यों को स्थान न दिया जाय।

यदि हमें उनके साथ न्याय करना है, तो हमें उन पद्यों को भी नहीं सम्मिलित करना चाहिए, जिनका सम्बन्ध रसविद्या से है। अपने बुरे दिनों में, जल्दी से जल्दी पैसा बटोरने के लिए, उन्होंने पारसवेदी पर भले ही विश्वास किया हो। यदि उसके प्रति उनका मोह बना रहता तो वे सुधारक न बन पाते, एक ऐसे सुधारक, जिसने हर प्रकार के अज्ञान और अन्ध विश्वास की भर्त्सना की हो। इसलिए हम अनुमान लगा सकते हैं कि रसविद्या से सम्बन्धित पद्य भी नकली हैं। यदि उनको सच भी मान लिया जाय तो उन लोगों को चिढ़ाने के लिए उन्होंने वे लिखे होंगे, जो उन्हें रसविद्या के रहस्य बताने के लिए सताते रहते थे। जो भी हो, इन ऊल-जलूल पद्यों को हटा ही देना चाहिए।

इतना सब करने के बाद भी हम पायँगे कि वेमना की कविता में बहुत-से

सोने के साथ कुछ खोटापन भी है। बड़े-से-बड़े कवि इससे नहीं बच सकते। विशेषत: वे आशुकवि, जो "अत्यावश्यक विचार" को वाणी देते हैं, इससे मुक्त नहीं रह सकते। गुण की दृष्टि से उनकी कृतियों में असमानता रहेगी ही। इसके अलावा हम पहले ही कह चुके हैं, वेमना का बल जीवन पर था, साहित्य पर नहीं। उन्होंने शब्दों का उपयोग एक शिल्पी की तरह नहीं किया था बल्कि एक योद्धा की तरह किया था। जहाँ वे तार्किक नहीं हैं, वहाँ वे उपदेशात्मक हैं, और इस कारण उनके कृतित्व में तत्त्वों की असमानता है। कवि और कविता के बारे में वेमना कहते हैं कि यदि कोई एक भी पद्य ऐसा लिखे, जो असाधारण रूप से महत्त्वपूर्ण हो तो वह कवि है। वे पूछते हैं, "टोकरे भरे चमकदार पत्थरों से क्या फ़ायदा, क्या एक नीलम उनसे कहीं अधिक बहुमूल्य नहीं है ?" और वेमना ने संसार को एक नहीं, सैकड़ों अमूल्य नीलम दिये हैं।

प्रकृति का दार्शनिक

एक ग्रामीण प्रकृति का दार्शनिक अनगढ़,
जन्मजात प्रतिभा-सम्पन्न —होरेस

वेमना यद्यपि विद्वान् नहीं थे, और भारतीय दर्शन के प्रामाणिक प्रस्थान त्रय—(उपनिषद, ब्रह्म सूत्र, एवं भगवद्‌गीता) से भी अपरिचित थे, तो भी वे अपने-आपमें दार्शनिक थे। ऊपर उद्‌धृत होरेस के शब्दों के अनुसार हम उनको प्रकृति का दार्शनिक कह सकते हैं। अपनी मौलिक अन्तर्दृष्टि, और विस्तृत अनुभव के आधार पर उन्होंने एक नहीं, तीन दर्शन प्रतिपादित किये—सामाजिक दर्शन, नैतिक दर्शन और धार्मिक दर्शन। यह सत्य है कि इन तीनों को उन्होंने कोई व्यवस्थित रूप नहीं दिया। उनकी प्रतिभा कुछ ऐसी उत्कट थी और स्वभाव ऐसा उद्‌दण्ड था कि उन्होंने उनके सिद्धान्तीकरण का प्रयत्न ही नहीं किया। यही नहीं, उन्होंने अपने विचारों के विरोधाभासी तत्त्व भी हटाने की कोशिश नहीं की। अगर उनकी ओर उनका ध्यान दिलाया जाता तो शायद वे भी वाल्ट ह्विटमैन की तरह कहते :

क्या मैं अपना ही विरोध करता हूँ ?
कोई बात नहीं, हाँ, मैं अपना ही विरोध करता हूँ,
मैं बहुत बड़ा हूँ, मुझमें बहुत-से लोग हैं।

सामाजिक दार्शनिक के रूप में वे मानवीय समानता के समर्थक हैं। उनका विश्वास है कि जब तक वर्ण-व्यवस्था है, और उससे सम्बन्धित ऊँच-नीच के भेद, प्रतीक और प्रतिबन्ध हैं, यह समानता स्थापित नहीं की जा सकती। वर्ण-व्यवस्था के विरुद्ध उनकी युक्तियाँ इस प्रकार हैं। क्योंकि शूद्रों की तरह, स्त्रियों के लिए भी वेद-पठन निषिद्ध है, इस तरह उनकी स्थिति भी शूद्रों की-सी है। उस हालत में, एक स्त्री का पुत्र या पति, शूद्र के सिवाय और क्या हो सकता है ? यही नहीं,

कहा जाता है, पैदा होते समय हर व्यक्ति शूद्र ही होता है। यज्ञोपवीत पहनने-मात्र से उसकी स्थिति कैसे बदल सकती है ? वस्तुतः महत्त्व जाति का नहीं है, चरित्र का है। चरित्रहीन व्यक्ति 'माल' (अछूत) है। क्या अछूत में भी वही हाड़-मांस नहीं होता, जो आपमें है ? अछूत की आत्मा की क्या जाति है ? चरित्रवान अछूत उच्चतम जाति के व्यक्ति से जो कमीना है, मिथ्यावादी है, कई गुना श्रेष्ठ है। क्यों एक व्यक्ति अपनी ऊँची जाति की डींग मारता है और निम्न जाति की निन्दा करता है। क्या सभी परमात्मा की सन्तान नहीं हैं ? क्या वे सब जन्म और मृत्यु के समय समान नहीं हैं ? वही व्यक्ति भगवान् का हो सकता है, जिसने जाति-पाँति के भेद-भाव को छोड़ दिया हो।

वेमना यह भी जानते हैं कि जाति के सिवाय वर्ग भी विभाजनात्मक शक्ति है। उनका विश्वास है कि जाति से अधिक वर्ग ही, मनुष्य-मनुष्य में अधिक अन्तर पैदा करता है। "एक धनी, भले ही वह निम्न जाति का हो, अधिक प्रभावशाली है और एक ग़रीब भले ही वह उच्च जाति का हो निर्बल है। वह निस्तेज ही रहता है। मूर्ख व्यक्ति भले ही जाति, खानदान और विद्वत्ता की डींग मारें, परन्तु वे धनी के दास हैं। वे धनी में हर तरह के गुण और क्षमता को ढूंढते रहते हैं। वे सौन्दर्य में उनकी मन्मथ से तुलना करते है और बल में भीम से।" वेमना इन बेहूदे लोगों की तो निन्दा करते हैं, पर धन की निन्दा नहीं करते। उनकी दृष्टि में दारिद्र्य, धन से कहीं अधिक खराब प्रभाव पैदा कर सकता है। वे कहते हैं, "धन के कारण माता और पुत्र के सम्बन्ध में भी कटुता आ सकती है। यह भी सत्य है कि केवल धन-मात्र से कोई सुख प्राप्त नहीं कर सकता। यह सब ठीक है, पर धन के बग़ैर रहा कैसे जाय ? यदि कोई स्वयं निर्धनता को पसन्द करे तो निर्धनता उसको शालीनता देती है। पर जब वह अपनी इच्छा के विरुद्ध निर्धन है तो शारीरिक और नैतिक दृष्टि से उसकी स्थिति बिगड़ती जाती है।" एक ग़रीब आदमी न ईमानदार हो सकता है, न साहसी ही। वह स्वाभिमान के साथ अपनी पत्नी और बच्चों का पालन-पोषण भी नहीं कर सकता। वह स्वाभिमान रख ही नहीं सकता। और वेमना की राय में, जो आदमी अपने परिवार को सुख, सन्तोष और सुरक्षा नहीं दे सकता वह दयनीय तो है ही, गर्हित भी है। वे सावधान करते हैं, "निर्धनता एक दावानल है, यह तुमको तो निगलेगी ही, उन सबको भी निगलेगी जो तुम्हारे लिए प्रिय हैं। निर्धनता पाप है।" निर्धनता के बारे में उनका भय बर्नार्ड शॉ के भय के समान है; जो कहता है, "सबसे बड़ा पाप और अपराध ग़रीबी है।"

पर वेमना बर्नार्ड शॉ की तरह निर्धनता को दूर करने के लिए समाजवाद

के वारे में न सोच सके। एक मध्यकालीन व्यक्ति से, भले ही वह कितना ही दूरदर्शी हो, इसकी अपेक्षा भी नहीं की जानी चाहिए। वे निर्धनता के मूल कारण के वारे में नहीं सोच पाते हैं। वे धनियों से कहते हैं कि वे अपने धन में, ग़रीव और जरूरतमन्द को भी हिस्सा दें। वे जानते हैं कि भीख माँगना, अपने को नीच वनाना है। वे कहते हैं कि "भिखारी सवसे खराव आदमी है, पर वह आदमी भिखारी से भी खराव है, जो किसी के भीख माँगने पर, भीख नहीं देता।" वे तुरंत यह भी कहते हैं और सदियों पुरानी घिसी-घिसाई वात दुहराते हैं ? "जव तुम मरते हो, तुम्हारी दौलत तुम्हारे साथ नहीं जायगी। वही तुम्हारे साथ जायगी, जिसका कि तुमने औरों के साथ हिस्सा वँटाया है।"

वसव की तरह वेमना को शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा में विश्वास है। वे कहते हैं कि हर किसी को कोई-न-कोई पेशा अपनाना चाहिए। उन्हें पुरोहित का पेशा विलकुल पसन्द नहीं है। न ही उन्हें व्यापार भाता है। दलाली या कोई और पेशा, जिसमें शोषण की वू हो, उन्हें कतई पसन्द नहीं है। टॉलस्टाय और गाँधी जी की तरह वे भी इस ईसाई सूक्ति का अनुमोदन करते हैं—"पसीने की कमाई से ज़िन्दगी वसर करो !" यही शब्द करीव-करीव इसी क्रम में, उनके एक पद्य में मिलते हैं। उनके लिए आजीविका ही आराधना है और यदि यह शारीरिक कार्य हो तो और भी अच्छा। दूसरे धोवी को नीची नज़र से भी देख सकते हैं, पर वेमना की दृष्टि में वह समाज के सर्वोत्तम सेवकों में से है। वे सव उत्पादकों को पसन्द करते हैं, विशेषतः कृषकों को। क्योंकि उन्होंने अपने को सर्वत्र 'कापू' कहा है। इसलिए सोचने वाले सोचते हैं कि वे भी जात-पाँत की भावना से परे नहीं हैं। परन्तु वेमना का अभिमान जाति का नहीं, कृषि-कार्य का है। इससे पहले कि वे उपदेशक वने, वे किसान ही थे। जिन दो-चार जगहों पर उन्होंने 'रेड्डी' जाति का, जिसमें कि वे पैदा हुए थे, ज़िक्र किया है, वह उतना प्रशंसात्मक नहीं है।

मोटे तौर पर वेमना के सामाजिक दर्शन की यह रूपरेखा है। आधारभूत वातों में यह वसव, ज्ञानदेव, नामदेव, तुकाराम, रामानन्द, कवीर, दादू, नानक, लालदास, रैदास और चैतन्य आदि भारत के मध्यकालीन योगियों के सामाजिक दर्शन के समान है। इन सन्तों ने वस्तुतः क्रान्ति की थी। पर इसके परिणाम उपान्तक और तात्कालिक थे,। क्यों ? 'यह आध्यात्मिक क्रान्ति' जैसा कि धूर्जटीप्रसाद मुखर्जी ने अपनी मौलिक और प्रभावशाली पुस्तक 'मॉडर्न इण्डियन कल्चर' में लिखा है, "भारतीय समाज की आधारभूत सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था के परिवर्तन की अनुपस्थिति में—दर्पण क्रान्ति-सी थी।"

हम वेमना के नैतिक दर्शन को दो स्तरों पर पाते हैं। वे यद्यपि आदर्शवादी थे, तो भी वे मानव-स्वभाव की सीमाओं से अपरिचित नहीं थे। वे जानते थे कि हर कोई योगी नहीं हो सकता। वे यह भी जानते थे कि एक ईमानदार भोला-भाला गृहस्थी, उस व्यक्ति से कहीं अच्छा है, जो बिना योगी की प्रवृत्तियों के योगी बनने की कोशिश करता है या तो वही धूर्त है, नहीं तो मूर्ख। वे जन-साधारण के लिए इस प्रकार के नैतिक मूल्यों का प्रतिपादन करते हैं और दूसरे प्रकार के मूल्यों को उन लोगों के लिए निश्चित करते हैं जो योगी के कष्टपूर्ण और संकीर्ण मार्ग का अवलम्ब लेना चाहते हैं। उनके विचारों में जो विरोधाभास दिखाई देते हैं वे इस कारण हैं कि वे एक ही समय में दो प्रकार के वर्गों को सम्बोधित कर रहे हैं।

जिनमें योगी होने की शक्ति और प्रवृत्ति है, वेमना कहते हैं उनके लिए गार्हस्थ्य एक फन्दा है, माया-जाल है। न पत्नी, न बच्चे ही मृत्यु के समय में साथ जायँगे। काम-वासना का जीवन, मलिन और निम्न है। लौकिक सम्पन्नता अशाश्वत है। एकाग्र चित्त हो, आत्म-ज्ञान के अन्वेषण में सब-कुछ छोड़ देना चाहिए। दूसरों से वेमना कहते हैं—"हर कोई योगी नहीं बन सकता, पर तुम अवश्य उत्तम पुरुष और उत्तम नागरिक बन सकते हो। तरुणावस्था में आज्ञाकारी पुत्र बनो और अध्यवसायी विद्यार्थी। एक अच्छी आजीविका के लिए अपने को शिक्षित करो और जब बड़े होओ तो सुन्दर विनम्र कन्या से विवाह करो, भले ही वह निर्धन परिवार की हो। एक स्नेहशील, समझदार पत्नी को पाना बहुत कठिन है, अगर भाग्य से तुमको एक मिलती है तो तुम्हारा सुख सुनिश्चित है। वह तुमको यह अनुभव करने देगी कि तुम घर-संसार के प्रभु हो। अगर बच्चे भी अच्छे हों, तो सुख भी स्वर्गीय है। ईमानदारी से और बिना आराम के, अपनी और अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निरन्तर कार्य करते जाओ। बिना श्रम के जीवन में कुछ नहीं मिलेगा। क्या 'मल्ली' का पुष्प बिना पानी के खिलता है? सदा दयालु और उदार रहो। अपने द्वार से ज़रूरतमन्द ग़रीब को मत भगाओ। धन का सदुपयोग किये बग़ैर अगर कोई धन इकट्ठा करता है तो वह खेत के उस पुतले की तरह है, जो पक्षियों को भगाने के लिए लगाया जाता है। जिसके चारों ओर सम्पन्नता है, पर वस्तुतः उसका कुछ भी नहीं है। अपने माँ-बाप के प्रति आदर दिखाओ, भले ही प्रसिद्ध और धनी हो जाओ, पर किसी भी हालत में अपने पिता को छोटा न अनुभव करने दो। सत्य के अन्वेषक अगर देखने-भालने में, बोल-चाल में अजीब भी लगते हों तो उसका मज़ाक न बनाओ। गर्वीले और घमंडी न बनो। एक घमंडी मूर्ख सबसे बड़ा

मूर्ख है। अपने दृष्टिकोण में उदार रहो। सम्भाषण में नम्र, कार्य में उदार। तब तुम गृहस्थी होते हुए भी अपने जीवन की आवश्यकताओं की परिपूर्ति पाओगे। एक अच्छा गृहस्थी, वस्तुतः गार्हस्थ्य जीवन का योगी है।"

वेमना स्वानुभव से जानते थे कि काम-वासना की लालसा कितनी भयंकर होती है। वे कहते हैं, "यह सच है कि पुरुष स्त्री के आकर्षण और छल का दास है। एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री की उपस्थिति में, योगी भी हमेशा अपने मन को काबू में नहीं रख पाता। तो भी गृहस्थ के तौर पर, तुम्हें अपनी पत्नी के साथ वफ़ादारी निभानी चाहिए। दूसरे की पत्नी को चाहना, उसकी ओर काम-वासना से देखना भी पाप है। अगर तुम्हारे पास यह शौक़ पूरा करने के लिए पैसा भी हो तो भी देवदासियों से दूर रहो। वे बाहर से कितनी ही सुन्दर हों, पर हृदय से वे गन्दी हैं। वे अस्थिर, लोभी और पाषाण-हृदय की हैं। वे तुमको नींबू की तरह चूसकर फेंक देंगी।" अगर देवदासी को रखना ही हो (यहाँ यथार्थ-वादी वेमना को देखिये) वे कहते हैं, "तो एक ऐसी को चुनो, जो सुन्दर हो, व्यवहार में आकर्षक हो, नृत्य और संगीत में प्रवीण। इससे पहले कि तुम उसके पास जाओ, मालूम कर लो कि उसकी माँ नहीं है।"—उन लोगों को, जो योगी के इस परामर्श से स्तम्भित हो गए हों, यह बताना होगा कि उन्नीसवीं सदी के अन्त में हिन्दू-समाज में देवदासी को रखा जाना प्रतिष्ठा का चिह्न था।

वेमना के नैतिक उपदेशों का संक्षेप इस प्रकार है—हर हालत में अपनी अन्तरात्मा के प्रति सच्चे रहो और बलवान रहो। जब शेर कमज़ोर और रोगी हो जाता है तो कुत्ता भी निर्भय होकर उस पर आक्रमण कर सकता है। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम व्यर्थ ही हर एक पर अपनी ताक़त की आजमाईश करते रहो। बलवान् सहिष्णु और मित्रभाषी होता है। हिंसा से बचना चाहिए। तुम्हारे लिए अहिंसा एक धार्मिक सिद्धान्त हो। कई लोग अपनी मूर्खता में 'महाभारत' को पाँचवाँ वेद समझते हैं। क्या इसका अर्थ यह है कि वे भ्रातृयुद्ध और रक्तपात के पक्षपाती हैं। यदि तुम्हारा जानी दुश्मन भी तुम्हारे हाथ में आ जाय तो तुम्हें उसे नहीं मारना चाहिए। बल्कि तुम्हें उसका भला करने के लिए उसे छोड़ देना चाहिए। "पशु-हत्या मानव-हत्या से कम गर्हित नहीं है। क्या तुम पशु के जीवन को सस्ता समझते हो? जिस पशु को तुम्हें मारना है, वह है तुम्हारे अन्दर का पशु। सब प्राणियों को प्यार करते हुए, बुद्धिमत्ता और शालीनता के साथ जीवन-यापन करो। बूढ़ा हो जाना सठिया जाना नहीं है, बल्कि बुद्धिमान होना है। पर यह न सोचो कि बुद्धिमत्ता पर बूढ़ों का ही स्वत्वाधिकार है। युवक भी इतने बुद्धिमान हो सकते हैं कि वे तुम्हारे मार्ग को प्रकाशित कर सकें।" क्या

मशाल की रोशनी, एक नौजवान के हाथ में जाकर कम हो जाती है ? याद रखो, जो घास खाता है, वह फलों का स्वाद नहीं जानता। जो छोटी-मोटी कलाओं में माहिर है, वह हमेशा जीवन की कला को ठीक तरह नहीं आँक सकता। कलाओं में जीवन की कला सर्वश्रेष्ठ है।

स्त्री के बारे में वेमना के विचार कठोर हैं। उपयोगी तथा उत्तम जीवन-व्यवस्था में उन्होंने स्त्री को निम्न और हीन स्थान दिया है। उनके मत में, स्त्री सब पापों की स्रोत है। वह सिर्से है, डेलिलाह है, और पुरुष की अवनति का कारण है। अच्छा तो यह है कि उससे दूर रहो। यदि यह सम्भव न हो, तो उसको नियन्त्रण में रखो। उसे घर में पृथक् रखना चाहिए और सब तरह से उस पर निगरानी रखनी चाहिए। स्त्री की श्रद्धा और सत्य पर विश्वास करना मूर्खता है। "जिस प्रकार जहाज का समुद्र में मार्ग है और पक्षी का आकाश में, उसी प्रकार स्त्री का भी मार्ग है। जब पति धनी होता है तो स्त्री उसका आदर करती है और बुरी हालत में वह उसके आने पर उठती तक नहीं। उसके लिए पति मृत है, यद्यपि वह जीवित है।" यह सब वेमना के मुख से बड़ा विचित्र-सा लगता है, क्योंकि वे कहते हैं कि माता का आदर होना चाहिए। उसकी देवी के रूप में पूजा होनी चाहिए। जब वे स्त्री की, विशेषतः पत्नी की, निन्दा करते हैं तो वे भूल जाते हैं कि बिना पत्नी हुए, वह माता नहीं बन सकती। जो भी हो, वे स्त्रियों के बारे में बड़े रूढ़िवादी और प्रतिक्रियावादी हैं। परन्तु विलियम एच० केम्पबेल वेमना का समर्थन करते हुए लिखते हैं, "भारत में स्त्रियाँ सुधार की कट्टर विरोधी हैं। उनके सनातनपन्थी, रूढ़िवादी अन्ध-विश्वासों के कारण उनके प्रचार का प्रभाव कम हुआ होगा, उनके प्रयत्नों में रुकावट भी आई होगी।" यह मोटे तौर पर सत्य है, यह मानना होगा। अगर भारत में स्त्रियाँ इतनी पिछड़ी हुई हैं, तो क्या पुरुष इसके दोषी नहीं हैं ? क्या सदियों से उन्होंने उनको स्वतन्त्रता. शिक्षा और ज्ञान से वंचित नहीं किया है ? क्या कोई भी राष्ट्र आधा स्वतन्त्र, आधा दास, आधा शिक्षित, आधा निरक्षर, आधा ज्ञानी, आधा अज्ञानी हो सकता है ? ऐसे देश में अगर दूसरा भाग भार बन जाता है तो इसका दोष पहले भाग को दिया जाना चाहिए।

अपने धार्मिक दर्शन में वेमना यद्यपि वेदों की प्रामाणिकता को नहीं स्वीकार करते हैं, वेदान्ती हैं। किन्तु वे कहते हैं, "वेद वेश्याओं की तरह आकर्षित करते हैं और भटका देते हैं।" उन वेदपाठियों को, "जो बिना अर्थ जाने मन्त्रोच्चारण करते हैं, वे और भी कम आदर की दृष्टि से देखते हैं। वे उनको 'भोंकते कुत्ते' कहते हैं। उनका मन्त्रोच्चारण, उनके लिए अच्छा व्यायाम-मात्र है, और कुछ

नहीं। वैदिक कर्मकाण्ड भी निरुपयोगी हैं। पुराण 'असत्यों की खिचड़ी' हैं। और मूर्ति-पूजा, जो पुराणों के कारण प्रचलित हुई, जीवन के चरम सत्यों के बारे में अचेत कर देती है। और जो गढ़े गए पत्थरों में अपना विश्वास रखते हैं वे 'अज्ञानी' हैं, 'मूर्ख' हैं, 'निश्चेष्ट' और 'पागल' हैं। वे राजा, जिन्होंने बड़े-बड़े मन्दिर बनवाए और उनमें मूर्तियों की स्थापना करवाई, युद्ध में पराजित कर दिए जाते हैं, जब कि मूर्ति-भंजक देश पर शासन कर रहे हैं। यदि मूर्तियाँ ही भगवान् हैं तो उन्होंने अपने पूजकों की रक्षा क्यों नहीं की? और तथाकथित धर्मशास्त्र, न्याय की पुस्तकें नहीं हैं, अन्याय की पुस्तकें हैं। पुस्तकों और पुस्तकीय ज्ञान पर निर्भर रहना मूर्खता है। अगर कोई सर्वशक्तिमान् का साक्षात् अनुभव प्राप्त कर सके तो उसका कुछ अर्थ है, वह ही मुक्ति का एक-मात्र मार्ग है।

बारीकियों में गये बग़ैर यह कहा जा सकता है कि वेमना का धार्मिक दर्शन अद्वैत है, पर उनका मत अन्य अद्वैतवादियों से कुछ भिन्न मालूम होता है। वे वेदों की और धार्मिक पुस्तकों की प्रामाणिकता तो अस्वीकार करते ही हैं, आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध के बारे में भी उनका मत कुछ भिन्न है। वे कहते हैं, "ब्रह्मा को मारो और उसको विष्णु में मिला दो, विष्णु को मारो और उसे शिव में मिला दो, शिव को मारो और उसे अपने में मिला लो। तभी तुम पक्के योगी हो।" क्या किसी और हिन्दू चिन्तक ने यह बात कहने का साहस दिखाया है?

वेमना के दर्शन की व्याख्या डॉ० जी० वी० कृष्ण राव के शब्दों में इस प्रकार है:

> परमात्मा, जो हर व्यक्ति के हृदय में है, मनुष्य से अधिक भिन्न नहीं है। जब उसको भगवान् का साक्षात्कार होता है और वह उसमें तल्लीन हो जाता है, वह अभिमान और काम-वासनाओं से मुक्त हो जाता है, तब वह भगवान् के साथ है। नहीं, बरन् वह स्वयं भगवान् है, परमात्मा है। और वे लोग, जो यह नहीं समझते हैं, उसे मन्दिरों और तीर्थ-स्थलों में ढूँढते हैं—कुछ इस संसार का परित्याग कर देते हैं और इस आशा से तपस्या करते हैं कि कभी-न-कभी, कहीं-न-कहीं—किसी और लोक में उसके दर्शन होंगे, वे बड़ी भ्रान्ति में हैं, और असत्य को पाल रहे हैं। अगर स्वर्गीय सुख यहाँ नहीं मिल सकता तो किसी और लोक में क्या मिलेगा? जो अमृत प्रारम्भ में ही नहीं है, वह अन्त में कहाँ से प्राप्त होगा। इसलिए यह कहना कि परमात्मा इस ऐहिक संसार से दूर कहीं है और मनुष्य की पहुँच से परे है, ग़लत है। वह यहीं है, मनुष्य में है, उसके परिवेश में है, उसे इसको अपने में

खोजना होगा और अनुभव करना होगा। एक साधक अन्वेषक के लिए अपने गाँव से भी बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है, वह क्यों जाय, बशर्ते कि वह मार्ग में लोमड़ियों को गिनना न चाहे।

क्योंकि वेमना के चिन्तन का केन्द्रविन्दु मनुष्य है, इसलिए उनका दर्शन आधारतः मानवतावादी है। डॉ० ईश्वर टोपा अपनी पुस्तक 'सेण्ट वेमना : हिज़ फ़िलासफ़ी' में इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। उनका कथन है कि वेमना 'आत्म संस्कृति' का प्रतिपादन करते हैं। उनके शब्दों में "वेमना का सांस्कृतिक आदर्श मानवीकृत सिद्धान्तों की शोध पर आधारित है। मानवीय व्यक्तित्व के उदात्तीकरण के लिए मनुष्य को स्वयं अपने ही मार्ग से साधना करनी होगी। क्योंकि उसके अपने जीवन में ही उदात्त शक्तियाँ गुप्त रूप से निहित हैं, इसलिए कोई बाह्य अमानवीय शक्ति उसकी सहायता नहीं करेगी। ज़रूरत इस बात की है कि मानव के सुख-सन्तोष के लिए मानवीय गुणों की संस्कृति या विकास को महत्ता दी जाय।"

वेमना के चिन्तन का मूल अंश मानवीय प्रवृत्तियों और आवेगों का उदात्तीकरण है न कि उनका दमन। जब वे यह कहते हैं कि ऐन्द्रिक भावना ही जैविक शक्ति का मुख्य स्रोत है, मानव-स्वभाव की परिचालन शक्ति भी है, तो वे आधुनिक मनोविज्ञान के प्रवर्त्तक फ़ायड के भी चिन्तन का पूर्वाभास देते हैं। वे कहते हैं, "वह कामोन्माद, जो एक सुन्दर कन्या को देखने पर तुम्हारे मन में उठता है, उसको आध्यात्मिक मनोवेग में बदलना होगा। वे परमात्मा से मिलन की यौन-सम्भोग से तुलना करते हैं। वे इसी भाव को दूसरी तरह इस प्रकार भी व्यक्त करते हैं, "जब तक कोई कामी नहीं होता, वह मोक्षकामी भी नहीं बन सकता।" इस भाव पर और बल देते हुए वे कहते हैं, "योगी को परमात्मा के समीप उसी तरह जाना चाहिए, जिस तरह कामावेश में पति अपनी पत्नी के पास जाता है।"

वेमना नागार्जुन और शंकर की तरह बड़े मेधावी न थे, न वे उतने बड़े दार्शनिक या सिद्धान्तवादी ही थे। फिर भी उनका अपना विशेष दर्शन है, जो मनुष्य से और उसके जीवन के प्रत्येक पार्श्व से सम्बन्धित है। इसका सम्बन्ध लौकिक वस्तुओं से उतना ही है जितना कि आध्यात्मिक शक्तियों से। यह उतना ही आदर्शवादी है, जितना कि व्यावहारिक। यह वाञ्छनीय है कि वेमना के दर्शन का दार्शनिकों द्वारा अध्ययन किया जाय ताकि इसके प्रजातन्त्रात्मक, समवादी मानवीय विचारों को और अधिक उभारा जा सके।

जैसा कि डॉ० एल० डी० बार्नेट ने अपनी पुस्तिका 'दि हार्ड ऑफ़ इण्डिया'

में कहा है, वेमना किसी भी मानवीय विषय के बारे में उदासीन नहीं थे। वेमना के मानवीय चिन्तन की बर्नेट की प्रशंसा इतनी भावपूर्ण है कि वह घोषित करता है, "जब हृदयों के अन्वेषक की तुला पर मानव जाति के गुरुओं और उपदेशकों को तोला जायगा तो बहुत-सी उच्च और यशस्वी आत्माएँ तेलंगाना के इस विनम्र महान् व्यक्ति से ही साबित होंगी।"

सच्चा और विरला प्रतिभाशाली

कवियों में सच्ची प्रतिभा विरली है,
आलोचकों में भी सच्ची अभिरुचि विरली है—**पोप**

वेमना हर दृष्टि से सच्चे और विरले प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। छोटे-से गाँव में पैदा हुए, बड़े हुए, पर उन्होंने सारे संसार को अपने ज्ञान का क्षेत्र समझा। विलासी जीवन व्यतीत करने के बाद उन्होंने अपने को नियन्त्रित किया और वे सन्त बने। बिना किसी शिक्षा के उन्होंने भाषा पर इतना अधिकार पाया और उन्होंने उसे नई शक्ति और नया सौन्दर्य दिया। यद्यपि उनमें कोई साहित्यिक महात्वाकांक्षाएँ न थीं, तब भी वे अपने ही युग के नहीं, परन्तु आने वाले सभी युगों के महान् कवि बने। वे न तो अपने देश के दार्शनिक ग्रन्थों से परिचित थे, न दूसरे देशों के ही; पर उन्होंने एक ऐसा दर्शन प्रस्तुत किया, जो सर्वांगीण और साहसपूर्ण था और इतना दूरदर्शी कि उसमें आधुनिक मानवीय गूढ़ार्थ भी निहित थे। एक साथ अकेले कई चिन्तनों के मोर्चों पर उन्होंने युद्ध किया। उन्होंने कई मूर्तियों का भंजन किया, ताकि उनकी जगह सत्य की स्थापना हो सके। उन्होंने अन्ध विश्वास की दीवारें तोड़ीं, ताकि मनुष्य निर्बन्ध हो सके। वे अपने-आपमें तूफ़ान थे। उन्होंने कई लोगों का स्नेह भी पाया; क्योंकि उन्होंने अपनी गम्भीरता को हास्य के माध्यम से ग्राह्य बनाया, गूढ़ चिन्तन को परिहास से बोधगम्य बनाया, अपने सन्देश को व्यंग्य और वक्रोक्ति से आकर्षक बनाया।

उनकी प्रतिभा इतनी असाधारण और अपूर्व है कि दूसरे वेमना की कल्पना नहीं की जा सकती। फिर भी उनमें कुछ ऐसे गुण हैं जो संसार के और महापुरुषों में भी पाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए उनमें बेकन की सुगठित सूक्ति-प्रियता है, अभिव्यक्ति का लाघव है, पर उनकी अनैतिकता नहीं है, उनमें पोप का प्रवाह और चातुर्य है यद्यपि वह उनकी तरह कलाप्रिय नहीं हैं। स्विफ़्ट की

व्यंग्य शक्ति है, पर वह उसकी तरह मानव-द्वेषी नहीं हैं। उनमें रूसो का मनोवेग है, पर उसकी तरह उनमें अराजकता की प्रवृत्ति नहीं है। वाल्तेयर की विडम्बना और साहस है, पर उसकी धूर्तता नहीं। वे शॉ की तरह स्वच्छन्द और हास्यप्रिय है, उनमें टॉलस्टाय के अन्तिम जीवन का नैतिक उत्साह भी है और उसकी विश्व-प्रियता भी। वेमना के निन्दक कह सकते हैं कि उनको देखकर एक ही व्यक्ति, वह भी इतिहास का नहीं परन्तु उपन्यास का, एक चरित्र स्मरण हो आता है—वह है डॉन क्विग्ज़ोट। उनको अपना अभिमत प्रकट करने का अधिकार है, हमें उनके साथ कोई झगड़ा नहीं है। परन्तु 'दि कानसाइज ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी' के अनुसार क्विग्ज़ोट का अर्थ है "उत्साही द्रष्टा, उच्च किन्तु अव्यावहारिक आदर्शों का अनुयायी, जो अपनी निष्ठा और प्रतिष्ठा की तुलना में लौकिक बातों में नितान्त निरपेक्ष है।" इस परिभाषा के कुछ अंश वेमना पर लागू होते हैं, अन्यथा वे असाधारण और अपूर्व व्यक्ति ही न बनते। वे कभी-कभी अपने तर्क और आदर्शवाद को चरम सीमा तक ले जाते हैं। अपने चारों ओर पांखंडियों को तरह-तरह के कपड़े पहनकर धर्मगुरुओं का आडम्बर करते देख, उन्होंने जीवन के अन्तिम समय में वस्त्रों का ही परित्याग कर दिया था। वे कहते हैं कि हम निर्वस्त्र इस संसार में आये, निर्वस्त्र ही यहाँ से जायँगे, तो इस आगमन और निर्गमन के बीच में वस्त्रों को क्यों पहना जाय ? उनकी विचित्रता का दूसरा दृष्टान्त हैं, उनके नारी के प्रति दुहरे विचार। अगर इनको वेमना की कमियाँ या त्रुटियाँ भी मान लिया जाय तो ये वेमना के व्यक्तित्व को रंग और सौन्दर्य देते हैं।

अपने ही देश के कवियों में, वे तमिलनाडु के तिरुवल्लुवर के समीप हैं, हिन्दी के क्षेत्र में कबीर और कर्नाटक के सर्वज्ञ के समान हैं। तिरुवल्लुवर की प्रशंसा में डॉ० जी० यू० पोप का कथन है, "वे विश्व-मानवता के कवि थे।" वेमना भी इसी तरह के कवि हैं। समय की दृष्टि से इन दोनों में पन्द्रह सौ वर्ष का अन्तर था, दोनों दो भिन्न क्षेत्रों के निवासी थे, उनके धर्म भी भिन्न थे, भाषाएँ भी भिन्न थीं, पर सन्देश एक है—मानव की एकता। तिरुवल्लुवर कहते हैं, "जन्म के समय सब मनुष्य बराबर हैं, और बाद में जाकर यदि वे असमान हो जाते हैं तो जाति और धर्म के कारण नहीं परन्तु अपने चरित्र के कारण।" अगर मनुष्य में सद्गुण नहीं है तो वह उच्च कुल में पैदा होकर भी निम्न है, नीच कुल में पैदा होकर भी अगर उसके आदर्श ऊँचे हैं तो वह आदरणीय है।" वेमना भी, जैसा कि हम पहले देख चुके हैं, इन्हीं सत्यों को उद्घोषित करते हैं और अपनी पूरी शक्ति के साथ अभिव्यक्त करते हैं। मनुष्य की एकता और समानता की उनकी परि-कल्पना इतनी महान्, आकर्षक और व्यापक है कि वे कह उठते हैं :

सबको, संसार के सभी लोगों
को एक ही थाली में,
भोजन परोसो,
सब भिन्नताओं को छोड़कर
उनको एक साथ खिलाओ,
हाथ उठाकर उन सबको आशीर्वाद दो
कि वे सब एक होकर रहें।

कबीर की तरह वे एकेश्वरवाद के समर्थक हैं। कबीर कहते हैं कि "वह अल्लाह है और राम भी", और वेमना कहते हैं, "अल्लाह सब बातों में पूर्ण है, और वह भगवान् है।" उनके लिए शिव और अल्लाह दोनों ही एक हैं। एक भगवान् का अर्थ है एक धर्म और एक जीवन। कबीर की तरह वेमना भी इन सत्यों को अधिक महत्ता देते हैं। वेमना का कथन है, "शरीर अनेक हैं, पर वह जीवनी-शक्ति, जो सबको परिचालित करती है, एक है। भोजन अनेक हैं, पर भूख एक है, गायें कई रंग की हैं, पर दूध का रंग एक ही है—सफेद। आभूषणों के रूप अलग-अलग हैं पर सोना एक ही है, जिससे वे बने हैं। भाषा अनेक हैं, पर चिन्तन एक। जातियाँ और धर्म भिन्न-भिन्न हैं, पर जन्म एक ही है। फूल तो बहुत हैं, पर उपासना एक ही। दर्शन अनेक हैं, पर दैवी शक्ति एक ही।" वेमना का एकता का विचार वस्तुतः इतना विस्तृत है कि उसमें सभी प्राणी समा जाते हैं, निष्प्राण भी।

मूर्ति-पूजा के खंडन में कबीर और वेमना एक साथ हैं। कबीर कहते हैं, "अगर पाथर पूजे भगवान् मिले, तो मैं पूजूँ पहाड़" और वेमना इस सम्बन्ध में कहते हैं, "पत्थरों को रंग-बिरंगे कपड़ों से सजाने की क्या ज़रूरत है? और उनको मन्दिरों में रखने की क्या आवश्यकता है? और उनको खिलाने-पिलाने की क्या ज़रूरत है?" शैव मतावलम्बियों को सम्बोधित करते हुए वे कहते हैं, "तुम पत्थर से बने वृषभ की पूजा करते हो पर जीवित वृषभ को भूखा मारते हो। ठीक तरह देखते तक नहीं—क्या चिन्तन की विच्युति इससे बढ़ कर हो सकती है? तुम्हें निर्जीव पूजा नहीं करनी चाहिए, पूजा करनी चाहिए जीवन्त शक्ति की, जो सभी प्राणियों में समानतः व्यक्त हुई है।" धर्म के कर्मकाण्डों पर कबीर की तरह वेमना भी कटाक्ष करते हैं। कबीर कहते हैं, "पानी में डूबने से मोक्ष मिलता हो तो मेंढ़क मुक्त है।" वेमना भी इसी प्रकार का विचार व्यक्त करते हैं, जिसे हम पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं। यद्यपि वे दोनों एक-दूसरे को नहीं जानते थे, पर दोनों का जीवन के प्रति और जीवन की समस्याओं के प्रति एक ही प्रकार का

दृष्टिकोण था, और उनके उपदेशों में भी समानता थी।

स्वभाव में, चिन्तन में, अभिव्यक्ति में वेमना तिरुवल्लुवर और कवीर की अपेक्षा सर्वज्ञ के अधिक समीप हैं। समान पृष्ठभूमि के कारण ही शायद वे अधिक समीप हैं। जवानी में दोनों ही विलासी थे। दोनों ही पहले 'देव दासियों' के दास थे, वाद में दोनों को ही उनसे विरक्ति हो गई। फिर दोनों ही एकाएक विलास के जीवन से धर्म के जीवन की ओर प्रवृत्त होते हैं। पर देशवासियों का विचार तव भी उन पर छाया रहता है और वे उन विचारों को बुरा कहने का मौका नहीं छोड़ते। हालाँकि वे एक क्रूर सामाजिक अवस्था के शिकार हैं। दोनों ही स्त्रियों के प्रति दुराग्रही हैं। वेमना और सर्वज्ञ में कौन पहले हुआ, यह विवादास्पद विषय है। पर रालपल्ली का, जिन्होंने दोनों का ही आलोचनात्मक अध्ययन किया है, विचार है कि इस वात के प्रमाण अधिक हैं कि वेमना ने सर्वज्ञ को प्रभावित किया होगा, अपेक्षतया इसके विपरीत मत के। समानताओं के वावजूद वेमना और सर्वज्ञ एक-दूसरे की प्रतिलिपि नहीं थे, न ध्वनि-प्रतिध्वनि ही। पहले की वनिस्वत दूसरे ज्यादा यथार्थवादी और लौकिक दृष्टि से अधिक संपन्न थे। आधारभूत सत्यों, विचारों और सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति में अवश्य कुछ भिन्नता है, अगर एक किसी वात पर ज्यादा वल देते हैं, तो दूसरे दूसरी वात पर।

प्रो० विनयकुमार सरकार, जो आधुनिक बंगाल के प्रतिष्ठित मनीषी हैं, अपनी पुस्तक 'दि पोजिटिव वैकग्राउण्ड ऑफ़ हिन्दू सोशियोलोजी' में लिखते हैं :

> तमिल कुरल में प्रतिपादित भक्तिमूलक समाजवाद को वेमना अपने पद्यों में क्रान्ति के स्तर पर लाते हैं, भौतिक सम्पत्तियों की प्रभुता की असमानताओं पर उनका व्यंग्य उसी प्रकार तीक्ष्ण है जिस प्रकार वर्ण-व्यवस्था-जनित असमर्थताओं पर उनकी कटूक्तियाँ हैं। हिन्दू प्रत्यक्षवाद में उनका स्थान और पद कवीर और चैतन्य के समकक्ष है, शायद उनसे अपेक्षाकृत ऊँचा ही।

फिर भी वेमना संसार में तिरुवल्लुवर, कवीर और चैतन्य की तरह विख्यात नहीं हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि तेलुगु के पोप उनको हमेशा अपख्यात करने में ही लगे रहे, उनकी उपेक्षा करते रहे। यदि वे अपने दुरुद्देश्यों में असफल रहे, तो इसलिए नहीं कि उनके प्रयत्न में कोई शिथिलता आई हो, वरन् इसलिए कि डूवियो, व्राउन, मेक्डानल्ड, गोवर, केम्पवेल और ग्रियर्सन-जैसे पाश्चात्य विद्वानों ने उनकी दाल न गलने दी। पर यह दुःख की ही वात है कि वेमना को अभी तक

उतना प्रतिष्ठित अनुवादक नहीं मिला, जितना कि तिरुवल्लुवर को राजाजी, कबीर को रवीन्द्रनाथ ठाकुर। सदुद्देश्यों के बावजूद ब्राउन वेमना के साथ पूरा न्याय नहीं कर पाए। वे विदेशी थे और ईसाई, उनकी पृष्ठभूमि भी पृथक् थी, वे वेमना की कविता के अन्तरार्थों में पूरी तरह पैठ न पाए, न उनकी भाषा की सूक्ष्म ध्वनियों को ही आँक पाए। उदाहरण के लिए यहाँ वेमना के एक पद्य का उनका अनुवाद प्रस्तुत है, "यदि गुणवान व्यक्ति की पीठ पर एक फोड़ा भी निकल आए तो हर कोई जान जाता है, किन्तु यदि गरीब के घर विवाह भी हो तो भी उसके बारे में कोई नहीं सुनता है।" अंग्रेजी की अभिव्यक्ति में भी कुछ अवरोध है, और वेमना के साथ भी अन्याय हुआ है। इससे यह भ्रान्ति होती है कि वेमना गुणवान और गरीब की तुलना करते हैं। वेमना इतने श्रेष्ठ कवि हैं कि वे यह मूर्खता नहीं कर सकते। यह सत्य है कि उन्होंने 'पुण्यमु गलवाडु' शब्द का उपयोग किया है, जिसका शाब्दिक अर्थ गुणवान भी हो सकता है। पर वे लोग, जो हिन्दू विश्वासों से परिचित हैं, जानते हैं कि वही व्यक्ति इस जन्म में धनी पैदा होता है जिसने पूर्व जन्म में सुकृत किये हों, पुण्य किये हों। इसलिए इस विशेष सन्दर्भ में इसका अर्थ 'धनी' है। ब्राऊन के अनुवाद के दोष निकालना, जिसने वेमना के बारे में इतना कुछ किया है, जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं, अशिष्टता है। साथ ही हम यह चाहे बगैर नहीं रह सकते कि वेमना को भी रवीन्द्रनाथ ठाकुर और राजाजी-जैसे अंग्रेजी के अनुवादक मिलें, ताकि उनका पाठक-समाज और विस्तृत हो। हाल ही में मीर मोहम्मद खान ने 'दि म्यूसिन्ग ऑफ़ मिस्टिक' नाम की पुस्तक में वेमना के कुछ चुने हुए पद्यों का अँग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया है। यह ब्राऊन के अनुवाद से तो अच्छा है, पर जैसा कि खान स्वयं कहते हैं, "तेलुगु पर मेरा इतना अधिक अधिकार नहीं है कि वेमना की कविता की रचना की सूक्ष्मताओं को पूरी तरह आँक सकूँ।"

वेमना के अनुवाद के लिए जिस प्रकार राजाजी और रवीन्द्रनाथ की जरूरत है, उसी तरह उनके चित्र को बनाने के लिए रेफेल और रेम्ब्रां की भी आवश्यकता है। उन-जैसा निपुण कलाकार ही, उनकी आँखों की ज्योति को, उनके ओठों की उपहासपूर्ण मुस्कराहट को, और उनकी चाल की गति तथा स्फूर्ति को चित्रित कर सकता है। उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पार्श्वों को चित्रित करने के लिए एक निपुण कलाकार को एक नहीं, कई चित्र बनाने होंगे। अभी वे विनम्र हैं तो अगले क्षण कट्टर, तो तीसरे क्षण कदाचित् भूत सदृश। हर मूड के साथ न केवल उनके चेहरे के भाव ही परिवर्तित होते हैं, बल्कि सारा शरीर। वे साधारण कवियों की चौखट में भी नहीं आते हैं, जो हर शब्द को तोलते-मापते हैं, हर

अभिव्यक्ति को माँजते हैं, और श्रेष्ठता का दिखावा करते हैं। वे अन्य दार्शनिकों और पैग़म्बरों से भी भिन्न हैं। उन्हें न पीठ की जरूरत है, न काल्पनिक बुर्जों की ही। उन्हें अपना सन्देश देने के लिए बाजार के चौराहे पर खड़ा होना है, साफ़-साफ़, बिना लाग-लपेट के बोलना है। उनको इसकी परवाह नहीं है कि उन पर कुत्ते भोंकते हैं, या उन पर पत्थर फेंके जाते हैं। वे कुत्तों का इस तरह और इतनी बार ज़िक्र करते हैं कि अनुमान किया जा सकता है कि उनके पीछे कुत्ते छोड़े गए होंगे। उन्होंने सुक़रात और ईसा मसीह के बारे में नहीं सुना होगा; पर वे निश्चय ही जानते थे कि पैग़म्बरों का अपने ही समय में, अपने ही आदमियों द्वारा आदर नहीं होता। वे अपने एक पद्य में कहते हैं कि "जिस प्रकार अपने आहते में लगी जड़ी-बूटी की कोई परवाह नहीं करता, उसी प्रकार पैग़म्बर—ईश्वर के दूत भी अपने लोगों द्वारा आदृत नहीं होते।"

कवि, दार्शनिक, प्रवक्ता, पैग़म्बर और भी कितनी तरह से प्रतिष्ठित, वेमना का सन्देश सर्वकालिक और अन्तर्राष्ट्रीय है। उनके सन्देश का आज, जब कि संसार में एक नैतिक संकट उपस्थित है, लोग उखड़े-उखड़े से हैं, दिशाहीन हैं, और भी महत्त्व बढ़ जाता है। क्या उन्होंने नहीं कहा था कि यदि मनुष्य मनुष्य की तरह रहे तो हमारा संसार स्वर्ग होगा? क्या उन्होंने एक कदम बढ़कर यह नहीं कहा था कि काल्पनिक स्वर्ग की कामना करना और इस संसार को बुरा समझना मूर्खता है? क्या उन्होंने नहीं कहा था कि जिस स्थल पर हम इस समय खड़े हैं वह पवित्र पुण्य स्थलों में पवित्रतम है? उनका धर्म मनुष्य का धर्म है, मानव धर्म है, और उनका सन्देश प्रेम, मानवीय सौहार्द्र और स्नेह का सन्देश है। उनका उद्देश्य एक ऐसे विश्व-भ्रातृत्व की स्थापना है जिसमें जाति, धर्म, सिद्धान्त और सम्प्रदाय, वर्ग और वर्ण के भेद न हों। वेमना का सन्देश हर एक के लिए है, संशयवादी और ईश्वरवादी के लिए भी। उनके उपदेशों का सार उनकी इस उदात्त उद्घोषणा में है, "जो अपने साथ के व्यक्ति के दुःखों को अपना समझता है, वह ही मनुष्य कहलाने योग्य है।"

अनुवाद

अनुवाद में कविता की क्षति होती है। अच्छे-से-अच्छे अनुवाद में, मूल के शब्द स्वर व उसके अन्य सूक्ष्म, सुन्दर तत्त्वों की पूरी तरह रक्षा नहीं की जा सकती। वेमना के पद्यों को यहाँ पढ़ते समय, इस तथ्य को ध्यान में रखना होगा। यह अनुवाद चार्ल्स ई गोवर के छन्दोवद्ध अनुवाद से व चार्ल्स फिलिप के गद्यानुवाद से दिये जा रहे हैं। इनमें न वेमना के मुहावरे वाली शैली ही है, न उसकी लय, और न सुगठित सूक्ति रूप ही। पर आशा की जा सकती है कि इससे वेमना की कविता की विद्युत्-सी शक्ति और गर्जन का सहज अनुमान हो सकता है।

भ्रमपूर्ण धर्म

भले ही वह दिन-रात वेदों का पारायण करे,
श्रवण करे, पापी पापी ही है।
भले ही कोयले को दूध से धोया जाय, तो भी क्या
उसका कालापन दीखता नहीं रहेगा ?
बीसियों धर्म हैं परन्तु एक भी ठीक नहीं है,
अगर उसमें श्रद्धा ही न हो,
श्रद्धा ही हमारी उपासना को भगवान् के लिए
प्रिय वनाती है।
वे शास्त्र पढ़ते हैं, लिखते हैं,
और उनमें निहित सत्य जानते हैं,
परन्तु मृत्यु के बारे में उन्हें शक है,
वे तो मरना ही नहीं जानते !
तुम चेहरे और भुजाओं पर विभूति पोतते हो,
गले में चाँदी की प्रतिमाएँ लटकाते हो

इससे तुम्हारा खजाना भले ही भरे,
मगर आगामी लोक तबाह हो जायगा।
वे चीखते हैं, "तुम गन्दे हो, मुझे स्पर्श मत करो!"
परन्तु कौन यह भेद कर सकता है ?
कौन ऐसा है जो निष्कंलक पैदा हुआ हो,
हर एक के शरीर में पाप का एक मन्दिर है।

मूर्ति-पूजा

तुम भी कैसे पशु हो कि पत्थरों को पूजते हो,
और जो अन्तर का भगवान् है, उसकी परवाह भी
नहीं करते! जिसकी भक्ति-भाव से प्रशंसा की जाती है, कैसे वह
एक निर्जीव व पत्थर सजीव वस्तु से श्रेष्ठ हो सकता है!
कैसी भ्रान्तियाँ हैं तुम्हारे मन की, जो ये स्वप्न
दिखाती हैं कि भगवान् निस्पंद मूर्तियों में बसते हैं ?
क्या एक टूटे हुए पत्थर को, जो न ठीक से सुन सकता है
न देख सकता है,
उसे घर में ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सकता है ?
फिर भी लोग मिट्टी के ढेले से मूर्तियाँ गढ़ते हैं,
भगवान् मानकर उनकी पूजा करते हैं, कैसे वे आँखों से पट्टी बाँधकर
अपने मन के भगवान् का तिरस्कार करने का साहस जुटा पाते हैं ?
कितने मूर्ख हैं, वे पहाड़ की चोटी से एक पत्थर उठा लेते हैं,
हाथ और पैर से उसे लुढ़काकर पटकते हैं, छैनी से
काटते हैं, और हथौड़े से पीटते हैं, और फिर
काँपते हुए स्वर से उसकी प्रशंसा में मन्त्र जपते हैं।
तुम, जीवित बैल को पीटते हो, उसे भूखा मारते हो,
पर जब उसे पत्थर में गढ़ दिया जाता है, तो
उसकी पूजा करते हो, यह भी कैसी पापपूर्ण मूर्खता है
कितना बड़ा धोखा है यह ?
जब वह उपास्य तुम्हारे मन में ही है तो क्यों
पत्थरों के मन्दिरों में जाकर चढ़ावा चढ़ाते हो,
क्या वे 'भगवान्' जो अन्दर-बाहर से सिर्फ़ पत्थर की चट्टान हैं
उनको चख भी सकेंगे ?

जाति

यदि हम चारों ओर देखें तो पायँगे
मनुष्य जन्म से समान हैं, एक ही भातृ-
सम्प्रदाय के हैं, और भगवान् की दृष्टि
में समान हैं।
भोजन, जाति या जन्म-स्थल से मनुष्य
की योग्यता नहीं वदल जाती,
तव क्यों जाति को इतनी महत्ता देते हो ?
यह तो केवल मूर्खता का अविरल प्रवाह है।
निकृष्ट-से-निकृष्ट जाति से भी वदतर वह है,
जो अपनी तुलना में दूसरों को शूद्र मानता है,
उसे नरक से कभी मुक्ति मिलेगी नहीं।
जात-पाँत के झगड़े सब झूठे हैं,
सब जातों की जड़ एक ही है,
कौन इस संसार में निर्धारित कर सकता है कि
किसकी प्रशंसा की जाय और किसकी निन्दा ?
क्यों हम किसी अछूत से घृणा करें, जब वह भी
हमारी तरह पैदा हुआ है, उसमें भी वही हाड़-मांस है,
उसकी कौन-सी जाति है,
जो हम सबके अन्दर बसता है ?

मृत्यु

अमीर मरता है, परन्तु उसका धन रह जाता है,
जब वापिस लौटता है, तो उसे फिर कमाना पड़ता है,
मरते समय वह सब खो देता है,
तब धन कहाँ है, और उसकी आत्मा कहाँ है ?
यदि लोहा टूटता है तो उसकी मरम्मत की जा सकती है,
लुहार उसे झालकर फिर जोड़ देता है
अगर आत्मा ही टूटकर बिखर जाय
तो उसे कौन जोड़ सकता है ?
अगर चीज़ें टूटती हैं, तो नई खरीदी जा सकती हैं,

यदि जीवित व्यक्ति मर जाय तो आश्चर्य नहीं
कि उसकी आत्मा, एक और शरीर में
अपना आसन ढूंढ़ ले !
भले ही कितने ही दिन हम जीवित रहें, कितना ही जानें-समझें,
भले ही हम कितना ही यश क्यों न कमायें, पर हम
एक ही दिन अच्छे रहते हैं, अपनी सब कलाओं
के बावजूद हम मिट्टी में जा मिलते हैं।
पत्नियाँ क्यों हैं और क्या हैं, ये पुत्र और मित्र
और सम्बन्धियों का प्रेम, जब ये प्राण ही
समाप्त हो जाते हैं, क्या हम दासों पर निर्भर रह सकते हैं ?
कोई भी हमें मौत के मुँह से ज़िन्दा नहीं ला सकता।

अच्छी पत्नियाँ

कितना स्वच्छ है गुणवती पत्नी का घर ! वह
अन्धकार में प्रकाश की तरह चमकती है !
वह घर, जिसमें पहली ब्याही हुई पत्नी का राज है
भगवान् के घर का स्मरण कराता है।
यदि विवाह के सहभोज के पूर्व ही प्रेम हो,
तो नई जोड़ी का प्रेम पेड़ की छाँह की तरह
फैलता जायगा, फलेगा-फूलेगा,
बहुत-से फल पैदा करते हुए
अपनी शक्ति के आनन्द में झूमेगा
घर की सच्ची सम्पदा धन नहीं है
सबसे बड़ा आनन्द पुत्र का जन्म है,
यौवन से वार्धक्य तक साथ रहना ही
इस पृथ्वी की सबसे बड़ी सम्पदा है।
यदि वह पति का सच्चा प्रेम अर्जित करे,
तो वह ही उनके जीवन का मधुरतम सुख है, यदि
वह विकर्षित करती है तो उस पत्नी से,
जैसे भी हो, जल्दी से छुटकारा पा लो।
शक्कर से भी मधुर, शहद और मलाई से भी,
या लम्बे गन्ने के रस से भी, कटहल से भी, या

पके अमरूद से भी, वे शब्द मधुरतर हैं,
जो उन अधरों से निकले हों, जिन्हें हम प्यार करते हैं।

बुरी पत्नियाँ

वे पत्नियाँ, जो पति की आज्ञा का उल्लंघन करती हैं
मृत्यु के समान हैं, जहरीली सर्पिणियाँ हैं
राक्षसियाँ हैं, उनका क्या उपयोग है
उनका सर्वनाश हो।
समुद्र में जहाजों के मार्ग की तरह
वायु में पक्षियों की उड़ान की तरह,
पृथ्वी पर स्त्री कहाँ कब जायगी,
कहना कठिन है।
जब पैसा है, तो पत्नी भी अच्छी है,
पैसा नहीं है तो उसका प्यार मर जाता है
तब उसका पति नाम-मात्र है,
वह उसके लिए मृत के समान है।
वे पत्नियाँ, जो अपने पतियों को प्रसन्न
रखने का प्रयत्न करती हैं, वस्तुतः बहुत अच्छी हैं,
वे पत्नियाँ, जो सिवाय अपने स्वार्थ के किसी की परवाह
नहीं करतीं, वे मृत्यु के बाण-सी हैं।
आज्ञा का उल्लंघन करने वाली पत्नियाँ,
दरअसल पत्नियाँ नहीं जकड़न हैं, उनके साथ
रहने से तो अच्छा यही है
कहीं बियावान रेगिस्तान में रहो।

द्विज

जो शूद्र के कुल में पैदा हुए हैं, फिर भी अपने साथियों को
नीची दृष्टि से देखते हैं और अपने को द्विज कहकर
सुरक्षित समझते हैं, जिनके हृदयों में पाप की लालसा है,
वे वस्तुतः अधम शूद्र हैं।
उसके हृदय में अस्पृश्यता का वास है, फिर भी वह अछूतों को
बुरा-भला कहता है, क्या वह भी

द्विज वन सकता है जीवन और जाति को नया बनाकर ? जबकि
उसके पापपूर्ण मस्तिष्क में उत्तम विचार ही नहीं हैं ?
वे अपने को भूपति कहते हैं,
"हम कितने शुद्ध और इतने ज्ञानी हैं, सब शास्त्र पढ़ाते हैं"
फिर भी गरीब-से-गरीब आदमी भी
इन घमंडियों से अच्छा है।
ब्राह्मण सोचता है कि जब वह यज्ञोपवीत
पहनता है तो उसका शूद्रत्व दफ़ा हो जाता है,
वह यह कैसे भूल जाता है कि जब उसकी मौत आती है
तो उसका ब्राह्मणत्व भी समाप्त हो जाता है।
वह अपने घर और पत्नी को छोड़ता है,
लोहे की जंजीरों से अपनी जाँघों को बाँधता है,
अच्छा खाने की बजाय खराब खाना खाता है, मधुर
पेय की जगह कड़ुवा पेय पीता है, पशु की तरह
रहते हुए, क्या वह कोई आनन्द पा सकता है ?

सूझ-बूझ की बातें

कुछ भी धीरे-धीरे न करो, वह कभी पूर्ण नहीं होगा,
कुछ भी जल्दबाजी में न करो, क्योंकि वह जरूर बिगड़ेगा,
क्या बे-पका फल पक जायगा, अगर
उसे जल्दी पेड़ से काट लिया गया ?
जहाज पानी में आसानी से जाते हैं,
पर जमीन पर वे एक कदम भी नहीं हिल सकते,
निपुण व्यक्ति भी तभी तक कुछ है,
जब तक वह अपने क्षेत्र में कार्य-रत है।
अपने नाले में मगर हाथी को मार देगा,
मगर भूमि पर एक कुत्ता भी उसे दबोच लेगा
अपनी ही जगह हर कोई बलवान है।
एक सूअर के दर्जनों बच्चे होते हैं
पर बड़े हाथी का एक समय में एक ही,
क्या एक ही योग्य व्यक्ति काफ़ी नहीं है !
कौन ऐसा अध्यापक है जो चतुर आदमी की मदद न कर सके ?

कोई आदमी, भले हीं वह कितना ही अक्लमन्द हो, मूर्ख को क्या
सिखा सकता है ?
कौन टेढ़ी नदी को सीधा कर सकता है ?

उथला आदमी हमेशा शेखी मारता है,
और जो गंभीर है, वह शान्त विनम्रता पूर्वक
बोलता है। क्या सोने की अँगूठी पीतल
के घंटों की तरह आवाज करेगी ?
महान् गंगा की धारा शान्ति से वहती है, पर एक
छोटा नाला हो-हल्ला करता, कूदता-फाँदता बहता है,
बुरे लोग उतने शान्त नहीं होते जितने कि अच्छे।
क्या वे जो झूठ पसन्द करते हैं, सच्चे लोगों की तरह
फलेंगे-फूलेंगे, क्या भाग्य उन पर मुस्करायेगा, उनके
घर को उभारेगा, यह तो
ऐसा है, जैसे आप टपकने वाले वरतन से पानी खींच रहे हैं।

मानव और भगवान्

जो स्वयं विश्व का अपना बन गया हो, और जानता हो कि
परमात्मा उसमें निवास करता है, और
जिसने अपने अन्तर और वाह्य व्यक्तित्व में उसे विठा लिया हो वह
इस पृथ्वी पर ही पूर्णता प्राप्त कर लेता है।
जाओ और कहो कि मैंने वेमना को लज्जित किया है, जिसने
विष्णु को लज्जित किया, शिव को अपमानित
किया, यहाँ तक कि ब्रह्मा को भी न छोड़ा,
वस, एक ईश्वर ही आदृत हो।
जो अपनी माँ को जानता है, देवी को जानता है,
जो भूमि से परिचित है, स्वर्ग भी जानता है, और
जो भूमि और स्वर्ग दोनों को जानता है, अपने को जानता है,
ब्रह्मा किसका पुत्र है ? विष्णु किसका पुत्र है ?
शिव किसका पुत्र है ? लोग नादान हैं कि इनको
भगवान् वताते हैं।
बहुत-से सिद्धान्त हो सकते हैं, पर वे अशाश्वत हैं,

इस भूमि पर सत्य एक ही है,
सव सिद्धान्तों को छोड़ दो और एक ही ईश्वर को आधार मानो।
हत्या से वचना ही उत्तमता की पराकाष्ठा है, यह भूपति
व्राह्मण कहते हैं, फिर भी वे पशुओं की वलि
देते हैं, उनसे अच्छा तो चाण्डाल है, जो मरे हुए पशुओं का माँस
खाता है।
मनुष्य पत्थरों को शिव समझते हैं, और उनको पूज्य मानते हैं
हैं, पत्थर तो पत्थर हैं, वे शिव नहीं हैं
हम क्यों नहीं उस शिव को पहचानते जो हम
सव में है।
एक ही दृष्टि हो, तो तुम्हारा ज्ञान उसी प्रकार का है,
जैसे एक पुरुष का जो एक स्त्री से सम्पृक्त है, और
तव तुम्हारा हृदय प्रभु की तरह प्रकाशित होगा।
अगर तुम अपने भगवान् को अपने से वहुत दूर समझते हो,
तो वह वहुत दूर होगा, अगर तुम शरीर को उसका निवास
समझो, तो वह ही उसका निवास होगा, यदि तुम
जीवन को उसका वाहन समझते हो, तो ऐसा समझने
वाले, देवताओं की तरह स्थिर हैं।
यद्यपि उसके पास सोने और चाँदी के पहाड़ हैं, तो भी शिव घूम-घूमकर
क्यों भीख माँगता है। कोई चाहे कितना ही महान् हो, उसकी
नज़र हमेशा पड़ोसी की सम्पत्ति पर ही रहती है।
फिर भी वे इस संसार को माया कहते हैं, यह कोई
भ्रम नहीं है, यह तो दिव्यता की सृष्टि है, यदि यह
भ्रान्ति हो, तो मुझे वताओ कि यह दिव्यता कहाँ वसती है ?
उनका सिद्धान्त ग़लत है, जो यह कहते हैं इस जीवन के आनन्दों
को छोड़ देना लाभप्रद है। क्या तुम नहीं जानते कि अगला
लोक वर्तमान जीवन में ही प्रकाशित होता है।

सन्दर्भ-ग्रन्थों की सूची

तेलगु क्षौर अंग्रेजी में वेमना पर और उनके द्वारा लिखी गई कुछ चुनी हुई पुस्तकें

तेलुगु में वेमना की बहुत-सी जीवनियाँ हैं। और वे सभी, कुछ हेर-फेर के साथ, वेमना के बारे में प्रचलित गाथाओं पर आधारित हैं। इस ग्रन्थ-सूची में, इस कारण उनमें से दो या तीन ही दी गई हैं। इसी तरह वेमना के पद्यों के बहुत से भाष्य भी हैं। वे अनिर्वचनीय की व्याख्या करते हैं इसलिए अधिकांश निरर्थक हैं, अतः उनको यहाँ शामिल नहीं किया गया है। वेमना के पद्य-संग्रह भी बहुत हैं। उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की सूची ही यहाँ दी गई है। ये पुस्तकें, जो या तो वेमना पर लिखी हैं, नहीं तो उन्होंने लिखी हैं, तीन भागों में विभाजित की गई हैं—तेलुगु, तेलुगु-अंग्रेजी और अंग्रेजी।

तेलुगु

१. वेमना योगीन्द्र चरितमु, ले० आर० पूर्णाचार्युलु, मसुलिपट्टम १९१३

२. वेमना सूक्ति रत्नाकरमु ४०३५ पद्य, सं० आर पूर्णाचार्युलु, मसुलिपट्टम १९१३

३. श्री वेमना योगी जीवितमु, ले० पंचाग्नुलु आदिनारायण शास्त्री, वाविल्ल रामस्वामी शास्त्रुलु एण्ड सन्स, मद्रास १९१७

४. पोतना, वेमनालु युगमु, ले० दिगवल्ली वेंकट शिवराव, १९२४

५. महायोगी वेमना कवि, ले० नेदनूरि गंगाधरम्, सी० वी० कृष्णा बुक डिपो, मद्रास (अदिनांकित)

६. वेमना ज्ञानमार्ग पद्यमुलु—३००२ पद्य, सी० वी० कृष्ण बुक डिपो मद्रास (अदिनांकित)

७. वेमना—सर आर० वेंकट रत्न एण्डोमेंट लैक्चर्स, ले० रालपल्ली अनन्त कृष्ण शर्मा, आन्ध्र विश्वविद्यालय, १९४७, पुनः मुद्रित

८. कवित्व तत्त्व विचारमु, ले० सी० आर० रेड्डी, आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्तेयर, १९४७, पुनः मुद्रित
९. वेमना, ले० वेंगूरि सुब्बाराव, कमला कुटीर नरसपुरम्, १९५१ पु० मु०
१०. शतक वांग्मय सर्वस्वमु भा० १, ले० वेदम वेंकट कृष्ण शर्मा मद्रास, १९५४
११. दि वर्सेस ऑफ वेमना, टीका सहित २७२८ पद्य, वाविल्ल रामस्वामी शास्त्रुलु एण्ड सन्स मद्रास, १९५५ पु०, मु०
१२. शतक कवुलु चरित्रमु, ले० वेन्गुरि सुब्बाराव, कमला कुटीर नरसपुरम्, १९५७ संस्करण,
१३. वेमना पद्यमुलु, ५०१० संग्रहकर्ता, नेदनूरि गंगाधरम्, अद्देपल्ली एण्ड कं० राजमन्द्री, १९६०
१४. वेमना नीति पद्य रत्नावली, १११६ पद्य, सी० वी० कृष्ण बुक डिपो मद्रास, १९६१, पु० मु०
१५. आन्ध्र कवि तरंगिणी, भाग ६, ले० चागण्टि शेषय्या, हिन्दू धर्म शास्त्र ग्रन्थ निलयमु, कपिलेस्वरपुरम, १९६१ संस्करण
१६. समग्र आन्ध्र साहित्यमु, भाग १२, ले० आरुद्र, प्र, एम० शेषाचलं एण्ड कं०, मद्रास, १९६८

तेलुगु-अंग्रेजी

१. दि वर्सेज ऑफ़ वेमना ६९३ पद्य, अनुवादक, सी० पी० ब्राऊन, वी० रामस्वामी शास्त्रुलु एण्ड सन्स, मद्रास, १९११, पु० मु०
२. वर्सेज ऑफ़ वेमना—तेलुगु मूल और अंग्रेजी अनुवाद, १२१५, ले० सी० पी० ब्राऊन, आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकादमी, हैदरावाद, १९६७
३. दि म्यूसिन्ग ऑफ ए मिस्टिक, ले० महमूदअली खान, हैदरावाद, १९६६

अंग्रेजी

१. हिन्दू मेनर्स, कस्टम्स एण्ड सेरिमनीज़, ले० जे० ए० डुवोइज, ऑक्सफोर्ड १९५३, पु० मु०,
२. 'वेमना, ए साउथ इण्डियन पोयट', ले० विलियम हॉवर्ड केम्पबेल, मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज मेगजीन, १८९८
३. 'वेमना', ले० आर० एम० मेक्डनाल्ड, मद्रास जरनल ऑफ लिटरेचर एण्ड साइन्स १८६६
४. दि फोकसांग्स ऑफ सदर्न इण्डिया ले० चार्ल्स ई० गोवर, हिगनबोदम एन्ड

कं० मद्रास, १८७१
५. सम माइल स्टोन्स इन तेलुगु लिटरेचर भाग २, दि एज ऑफ वेमना, ले० जी० आर० सब्रमय्या पन्तुलु, वी० नरसिंहेश्वर गुप्ता मद्रास, १९१५
६. तेलुगु लिटरेचर, ले० पी० टी० राजु, पी० ई० एन० बम्बई १९४४
७. तेलुगु लिटरेचर, ले० पी० चञ्चेय्या और राजा एम० भुजंग राव कलकत्ता, (अदिनांकित)
८. 'आन वेमना', ले० सी० आर० रेड्डी, रेडियो वार्ता, ए० आई० आर० मद्रास १९५०
९. सेण्ट वेमना : हिज फ़िलॉसफ़ी, ले० ईश्वर टोपा, हैदराबाद तेलुगु अकादमी, हैदराबाद, १९५०
१० वेमना : हिज पोयट्री एण्ड फ़िलॉसफ़ी, ले० जी० वी० कृष्णाराव श्री वी० आर० नार्ल को उनके इक्यानवें जन्म-दिवस पर समर्पित 'हॉफ़ वे' में प्रकाशित, १९५८
११. दि हार्ट ऑफ़ इण्डिया ले० एल० डी० वर्नेट, लंदन, १९२४
१२. वेमना : दि तेलुगु पोयट एण्ड सेण्ट, ले० सी० रामकृष्ण एण्ड सी० ए० नटेसन एण्ड कं०, मद्रास (अदिनांकित)
१३. वेमना थ्रू वैस्टर्न आईज, संपादक व संग्रहकर्ता, वी० आर० नार्ल एम० शेष पंत एण्ड० कं०, मद्रास, १९६९

शब्द-संग्रह और टिप्पणियाँ

अभिनव गुप्त : १००० ई० के आस-पास, दार्शनिक और काव्य-शास्त्र का प्रामाणिक विद्वान्

अद्दंकि : इस समय गुण्टूर जिले का एक ग्राम, यह कभी रेड्डी राजा, प्रोलय वेमा (१४ वीं सदी) की राजधानी थी।

अद्वैत वेदान्त : आदर्शवाद और एकेश्वरवाद का दर्शन, भारत में इसके प्रथम प्रणेता थे गौडपाद, और इसके सबसे अधिक यशस्वी भाष्य-कार थे शंकर।

आन्ध्र : आन्ध्र और तेलुगु पर्यायवाची शब्द हैं, जो राष्ट्र, देश और भाषा के सूचक हैं। आन्ध्र प्राचीन राष्ट्र है, जिसका प्राचीन धार्मिक ग्रंथ एतरेय ब्राह्मण में वर्णन है। इनकी भाषा द्राविड़ कुल की है। यह राज्य—आन्ध्र प्रदेश, वर्तमान भारत के सत्रह राज्यों में से एक है, और यह देश के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इसका क्षेत्रफल २७५२८० वर्ग किलोमीटर है, और जन-संख्या १९६१ की जन-गणना के अनुसार ३५९८३४७७ है।

आन्ध्र सारस्वत परिषद् : एक साहित्यिक शोध-संस्था, प्रथम १९११ में मद्रास में इसकी स्थापना हुई, फिर इसके कार्यालय और पुस्तकालय काकि-नाड़ा ले जाए गए। इसके पोषकों में सबसे अधिक उदार थे पिथापुरं के महाराजा श्री राव वेंकट कुमार महीपति सूर्या-राव। इसके पुस्तकालय में करीब पाँच हजार ताड़पत्र-पाण्डु-लिपियाँ हैं।

अप्पकवि : छन्द और व्याकरण के लेखक काकनूरि अप्पकवि सत्रहवीं सदी के थे। संस्कृत ग्रंथ 'आन्ध्र शब्द चिन्तामणि' का, जिसका लेखक नन्नय माना जाता है, अनुवाद करते हुए इन्होंने उसमें नई सामग्री जोड़ी।

बसव : वीरशैवधर्म के संस्थापक। इस धर्म ने, उन सब बन्धनों— जाति और वर्ग के विरुद्ध आन्दोलन किया, जो मानव-समाज को विभक्त करते हैं। ये मैसूर राज्य के बगेवाड़ी में एक ब्राह्मण कुटुम्ब में बारहवीं सदी के प्रथम दशकों में पैदा हुए। कालान्तर में वे भारत के धार्मिक और सामाजिक सुधारकों में गिने जाने लगे।

बसव पुराण : बसव की जीवनी, जिसे बारहवीं सदी में पाल्कुरिकी सोमनाथ ने पद्य में लिखा था।

ब्राऊन चार्ल्स फिलिप (१७६८-१८८४) : मद्रास सिविल सर्विस के सदस्य थे। इनको तेलुगु, राष्ट्र, भाषा और साहित्य से विशेष प्रेम था और इन्होंने इनके लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। तेलुगु व्याकरण, तेलुगु-अंग्रेजी और अंग्रेजी-तेलुगु शब्दकोषों के प्रकाशन के अतिरिक्त इन्होंने सैकड़ों ताड़पत्रों, पाण्डुलिपियों को एकत्र किया। शास्त्रीय पंडितों को, शास्त्रों को एकत्र करने, उनको सम्पादित करने और मुद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया। इन्होंने अपने सतत कार्य व लगन से वेमना के यश की नींव डाली।

कडप्पा : रायल सीमा का एक जिला, और जिले का मुख्य नगर भी।

कर्नूल : यह रायल सीमा के एक जिले का सदर मुकाम है। जिले का नाम भी इसी पर है। अक्तूबर १९५३ और अक्तूबर १९५६ तक आन्ध्र राज्य के निर्माण पर और विशाल आन्ध्र प्रदेश के बनने से पूर्व, यह आन्ध्र की राजधानी थी।

देवदासी : शाब्दिक अर्थ है देवताओं की दासी। ये मन्दिरों को समर्पित कर दी जाती थीं, इनका काम नृत्य और गायन था। इनको गुज़ारे के लिए बिना कर के जमीन दी जाती थी। पर वे प्रायः वेश्या-वृत्ति से अपनी आय की वृद्धि किया करती थीं। कुछ देवदासी प्रवीण नर्तकी और गायिकाएँ थीं। अब कानून द्वारा तरुण युवतियों का मन्दिरों को समर्पित किया जाना निषिद्ध है।

डुबोय, जे० बी० फ्रेञ्च धर्मपिता (१७७०) : ईसाई मिशनरी के लिए कार्य करते हुए इन्होंने दक्षिण भारत में ३१ वर्ष विताये। ये साधारण जनता में, स्थानीय पोशाक में, स्थानीय रीति-रिवाजों का पालन करते हुए, एक साधारण

व्यक्ति के रूप में रहे। इनकी पुस्तक 'हिन्दू मैनर्स, कस्टम्स एण्ड सेरिमोनीज' में १७९२ से १८२३ तक के काल के भारत के काफ़ी प्रामाणिक चित्र मिलते हैं।

एर्रप्रगडा एडपाटी, (१२८०-१३५०) : तेलुगु के मुख्य कवि, जो प्रोलय वेमा रेड्डी के दरवार में भी थे। इन्होंने महाभारत के तृतीय पर्व का, जिसे नन्नय ने अधूरा छोड़ दिया था और तिक्कन्ना ने जिसे छुआ भी न था, तेलुगु अनुवाद पूरा किया और इन्होंने बड़ी कुशलता के साथ इस अन्तर को पाटने का पूर्ण प्रयत्न किया है। वह नन्नय की ही शैली में प्रारम्भ होता है और सहज रूप से तिक्कन्ना की शैली में चलने लगता है। महाभारत के तेलुगु अनुवादकों को तेलुगु कविता के कवित्रय के रूप में सम्मान दिया जाता है। एर्रप्रगडा ने और भी ग्रन्थ लिखे; जिनमें मुख्य है हरिवंश का तेलुगु अनुवाद। इनको 'प्रवन्ध परमेश्वर' की उपाधि मिली थी।

गंडिकोटा : इस समय यह कड़प्पा जिले का एक छोटा कस्वा है, जहाँ एक पुराना किला है। परम्परा के अनुसार माना जाता है कि कभी वेंमना का भाई इस किले का किलेदार था।

ग्रियर्सन सर जार्ज अफ्राहम (१८५१-१९४१) : अनेकों भाषाओं के विद्वान। १८७३ में के इंडियन सिविल सर्विस में दाखिल हुए और १९०३ में ये इससे निवृत्त हुए। अंग्रेजी और हिन्दुस्तानी के अतिरिक्त भारत की वहुत-सी भाषाएँ जानते थे, इनको लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया का सुपरिंटेण्डेण्ट नियुक्त किया गया और इस पद पर रहते हुए उन्होंने महान् कार्य किया।

गुण्टूर : यह एक जिले का सदर मुकाम है, और जिला भी इसीके नाम पर है।

इनकोण्डा : इसकी ठीक वर्तनी है विनुकोण्डा। आन्ध्र के इतिहास में इस कस्वे का और इसके किले का ज़िक्र मिलता है। यह इस समय गुण्टूर जिले में है, और तालुके का सदर मुकाम है।

जोन्स सर विलियम (१७४५-९४) : एक ब्रिटिश न्यायाधीश। १७८३ में इनको कलकत्ता के सुप्रीम कोर्ट में न्यायाधीश नियुक्त किया गया। अगले वर्ष ही बंगाल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना में इसका बड़ा हाथ रहा।

कई यूरोपियन और एशियन भाषाओं के अधिकाधिक पंडित थे और इन्होंने तुलनात्मक शब्द-शास्त्र के विज्ञान को प्रारम्भ किया। इन्होंने हिन्दू और मुस्लिम कानूनों पर तो पुस्तकें लिखीं ही, साथ ही कालिदास के नाटकों का भी अनुवाद किया। ये वहुत प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति थे। इनके आकस्मिक निधन से भाषा-शास्त्र को काफ़ी क्षति हुई।

काकतीय साम्राज्य : इस साम्राज्य की स्थापना, ग्यारहवीं सदी के प्रथम दशकों में, वेतराजू ने की थी। इसकी राजधानी थी वारंगल। इस साम्राज्य की इतिश्री हुई प्रतापरुद्र के साथ, जिसको दिल्ली सुल्तान गियासुद्दीन तुगलक के लड़के उलग खान ने युद्ध में पराजित किया। १३२२ में इसको कैदी वनाया गया। अपने उत्थान-काल में यह साम्राज्य करीव-करीव सारे दक्षिण में व्याप्त था, त्रिचिनापल्ली तक।

कर्नाटक : कन्नड और कर्नाटक पर्यायवाची हैं। जैसा कि आन्ध्र के वारे में है, वैसे यह भी जाति, भाषा, क्षेत्र का सूचक है। कर्नाटकों का अपना राज्य है—मैसूर; जो आन्ध्र के दक्षिण-पश्चिम में है।

कोण्डवीडु : एक कस्वे के किले और क्षेत्र का नाम। राजा अनवेटा वेमा रेड्डी (१३५३-१३६४ ई०) और उसके उत्तराधिकारियों के समय में राजधानी के तौर पर मध्ययुगीन आन्ध्र के इतिहास में इसका विशेष स्थान है।

कुरल : सवसे अधिक महत्त्वपूर्ण तमिल शास्त्र, तमिल-भाषी इसको पंचम वेद मानते हैं। यह सूक्तियों की पुस्तक है, जो तीन भागों में विभक्त है। प्रथम भाग का सम्वन्ध नैतिकता से है, दूसरे का धन और शासन-कला से, तीसरे का प्रेम से। इसमें कुल मिलाकर १३३० दोहे हैं। तिरुवल्लुवर इसके रचयिता हैं।

लक्ष्मण राव के० वी० (१८७७-१९२८) : प्रसिद्ध अनुसन्धानकर्ता और इतिहासकार। तेलुगु में आपने होम लाइब्रेरी यूनिवर्सिटी प्रारम्भ की। कई साहित्यिक, जीवनियाँ, इतिहास, और विज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित कीं। तेलुगु में एक बृहत् विश्वकोष की योजना भी बनाई। वे अभी इसका तीसरा भाग भी पूरा न कर पाए थे कि अचानक

ही उनकी मृत्यु हो गई।

लक्ष्मीनरसिंह चिलकमर्त्ति (१८६७-१९४५) : कवि, नाटककार, उपन्यासकार, जीवनी-लेखक, निबन्धकार, हास्य-लेखक लक्ष्मीनरसिंह वीरेश-लिंगम् के शिष्य थे। इन्होंने अपने गुरु की साहित्यिक और धार्मिक सुधारों में सहायता की। १९१० में वे अन्धे हो गए थे, पर अन्तिम समय तक वे अनवरत लिखते रहे।

लाल दास : कबीर से प्रभावित होकर इन्होंने एक पन्थ की स्थापना की, जिसको 'लालदासी' कहा जाता है। ये अलवर में पैदा हुए थे। इनके माता-पिता 'मेव' थे। इनकी जन्म-तिथि अज्ञात है। मृत्यु १६४८ में हुई।

मुकुट : इसका अर्थ टेक भी हो सकता है।

माला : आन्ध्र के अछूतों की एक जाति—एक को माला कहा जाता है और दूसरे को मादिगा।

मल्ली : एक तरह की चमेली, पौधा भी।

मल्लिकार्जुन (पंडित) : एक काकतीय सम्राट् प्रोला द्वितीय (१११०-५८) के समकालीन थे। ये बड़े विद्वान् और वाग्योद्धा थे। सार्वजनिक वाद-विवादों में अपनी वाक्शक्ति से इन्होंने बौद्ध मतावलम्बियों को पराजित किया था। इनकी पुस्तक 'शिवतत्त्व सार' शैव दर्शन पर तो अच्छा प्रबन्ध है ही, इसमें साहित्यिक तत्त्व भी निहित हैं।

मसुलिपट : कृष्णा जिले का सदर मुकाम, यह छोटा बन्दरगाह भी है। राजनैतिक और व्यापारिक प्रमुखता के कारण, सत्रहवीं सदी में, यहाँ पोर्तुगीज, डच, फ्रेन्च और अंग्रेजों में काफ़ी तनातनी रही। मसुलिपटं मछली पटनं—(मछलियों का नगर), का कुछ विकृत रूप है। प्राचीन ग्रीक भौगोलिकों ने इसे 'मसेलिया' या 'मैसोलिया' भी कहा था।

मूग चिन्त पल्ली : यह वेमना का जन्म-स्थल समझा जाता है। पर इस नाम से नेल्लूर जिले में दो गाँव हैं, गण्टूर, कडप्पा और चित्तूर जिलों में एक-एक, इनमें से कौन-सा वेमना का जन्म-स्थल था, यह अब भी विवादास्पद है।

मुखर्जी धूर्जटी प्रसाद (१८९४-१९६१) : अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त समाज-शास्त्रज्ञ, जो लखनऊ विश्व-विद्यालय से सम्बधित थे। ये कुशाग्र बुद्धि के थे। समझ-बूझ भी मौलिक थी, चिन्तन में विरली अर्थवत्ता थी। ये बंगाली और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं के निष्णात लेखक थे।

नागार्जुन : बौद्ध धर्म का दार्शनिक। यू० एस० एस० आर० के अकादमी ऑफ साइन्सेज के प्रोफेसर स्टेचरबेटस्की के मतानुसार वे मानवता के महान् दार्शनिकों में से एक हैं। इनका काल ईसा की पहली सदी है। बौद्ध दर्शन में इन्होंने माध्यमिक वाद का प्रतिपादन किया। इन्होंने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष आन्ध्र के श्री पर्वत में व्यतीत किये। यह क्षेत्र अब नागार्जुन कोण्डा कहलाता है।

नन्नय्या : ये पूर्वी चालुक्य वंश के राजा राज नरेन्द्र के राजकवि थे। इस राजा ने ग्यारहवीं सदी में समुद्र-तटवर्ती आन्ध्र का शासन किया। इसकी राजधानी थी, राजमन्द्री। राजाज्ञा पर इन्होंने महाभारत का तेलुगु अनुवाद प्रारम्भ किया, पर पूरा करने से पहले ही इनकी मृत्यु हो गई। प्रथम दो पर्व, और तीसरे पर्व के कुछ अंशों का ही ये अनुवाद कर सके। इनको पाँच और कृतियों का लेखक भी माना जाता है, जिनमें तेलुगु का व्याकरण भी है। पर यह विवादास्पद है। उसी तरह यह दावा भी विवाद का विषय है कि ये तेलुगु के आदिकवि थे। कुछ भी हो, उपलब्ध तेलुगु कृतियों में इनकी कृति पहली है, इसलिए इनको 'वागानुशासन' भी कहा गया है।

नेल्लूर : इसका प्राचीन नाम है विक्रमसिंहपुर, और आज यह एक ज़िले का, जो इसी नाम का है, सदर मुकाम है। तिक्कन्ना, यद्यपि गुण्टूर जिले में पैदा हुए थे, पर उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग इसी नगर में व्यतीत किया।

पूर्व कवि स्मृति : इसका अर्थ है परवर्ती कवियों की प्रशंसा, और यह परम्पराबद्ध काव्य-कृतियों का 'आवश्यक' विधान है। यद्यपि इसका कोई विशेष महत्त्व नहीं है, फिर भी उस समय के बारे में कुछ सामग्री मिलती है, जब यह लिखी गई थी। यद्यपि इस देश का इतिहास बहुत लम्बा है, पर यहाँ 'इतिहास बोध' कम ही रहा है।

पोप डॉ०जी०यू० : एक ईसाई मिशनरी, जिन्होंने तमिल भाषा में प्रकाण्ड पाण्डित्य प्राप्त किया। १८८६ में इन्होंने लन्दन से 'कुरल' का अनुवाद प्रकाशित किया। बाद में तमिल के एक और ग्रन्थ 'तिरुवाचकम्' का अनुवाद भी प्रकाशित किया।

प्रबन्ध : यह एक पद्यात्मक कृति है, जिसमें नगर, नदी, पर्वत, ऋतु, वन, सरोवर आदि का वर्णन आवश्यक है। यह राजा, रानियों, राजकुमार और राजकुमारियों के जीवन से सम्बन्धित है—उनके ऐन्द्रिक विलास का भी इसमें विस्तृत वर्णन होता है। इसमें आखेट और युद्ध का होना भी आवश्यक है। चूँकि इसमें इतनी सारी 'आवश्यक' बातों का होना जरूरी है, इसलिए जब यह एक कुशल कवि द्वारा नहीं लिखा जाता है तो प्रायः कृत्रिम और क्षोभकारी हो जाता है।

प्रभाकर शास्त्री (१८८८-१९५०) वेटूरि : अनुसन्धानकर्ता और आलोचक। आपने बीसियों, ताड़पत्र पाण्डुलिपियों व अन्य पाण्डुलिपियों का संग्रह सम्पादन और प्रकाशन किया। कुछ प्राचीन ग्रन्थों के लिए जो भूमिकाएँ आपने लिखीं वे बहुत महत्त्वपूर्ण कही जाती है।

पोतना (१४००-१४७५) : ये तेलुगु के गण्यमान्य कवि हैं। इन्होंने महा-भागवत का तेलुगु में अनुवाद किया। ये स्वशिक्षित थे और सादा जीवन व्यतीत करते थे। इन्होंने राज्याश्रय कभी न चाहा। इन्होंने अपनी कृति को अपने इष्ट देवता को समर्पित किया। गाम्भीर्य और माधुर्य इनकी कविता के विशेष आकर्षण हैं।

राजमन्द्री : यह राजमहेन्द्रवर का विकृत रूप है। यह गोदावरी के बाएँ तट पर स्थित है। इसकी स्थापना या तो अम्मराजु प्रथम (९२१-९४५) ने की नहीं तो अम्मराजु द्वितीय (९४५-९७० ईसवीं) में की। यह पूर्वी चालुक्यों की राजधानी थी। बाद में, यह कोडवीडू रेड्डी राजाओं की एक शाखा की भी राजधानी रही। क्योंकि इसका सम्बन्ध नन्नया और वीरेशलिंगम् से है, इसलिए आन्ध्र के साहित्य के इतिहास में इसका विशेष स्थान है।

राजाजी (१८७९) : यह 'चक्रवर्ती राजगोपालाचारी का' संक्षिप्त रूप है। ये भारत के मूर्धन्य राजनेताओं में हैं, और गान्धी जी के घनिष्ठ

सहयोगियों में भी। ये मद्रास के मुख्य मन्त्री थे, भारत के गृह मन्त्री, बंगाल के राज्यपाल और भारत के अन्तिम गवर्नर जनरल भी रह चुके हैं। ये अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और गंभीर लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं। १९५९ में काँग्रेस पार्टी से इस्तीफ़ा देकर इन्होंने स्वतन्त्र पार्टी की स्थापना की।

रालपल्ली अनन्त-कृष्ण शर्मा : तेलुगु, तमिल, कन्नड, संस्कृत और पालि के विद्वान्। ये अच्छे संगीतज्ञ भी हैं। यद्यपि धार्मिक और सामाजिक बातों में वे कुछ-कुछ कर्मकाण्डी हैं, पर वे असहिष्णु नहीं हैं। स्पष्ट एवं तीखा लिखते हैं। इन्होंने आन्ध्र विश्वविद्यालय में वेमना पर व्याख्यान दिये। पालि से 'गाथा सरस्वती' का अनुवाद किया। साहित्यिक आलोचना भी लिखी हैं। जन्म १८९३ में हुआ। ये मैसूर के महाराजा कॉलेज में १९१२ से १९४९ तक अध्यापक थे। अब तिरुपति में रह रहे हैं।

रामकवि तुरगा : एक विद्वान् कवि। क्रुद्ध होने पर वे बुरा करने पर भी उतारू हो जाते थे। वे अपशब्दों के धनी थे। इनका समय सोलहवीं सदी का उत्तरार्द्ध है।

रामस्वामी चावली वेंकट (१७६५-१८४०) : यह चावली भ्राताओं में से एक हैं, जो अंग्रेजी में प्रथम लिखने वाले भारतीयों में से एक है। यह कलकत्ता के 'लिटरेरी एण्ड एण्टिक्वेरियन डिपार्टमेण्ट' में मुख्य अनुवादक थे। इनकी प्रथम पुस्तक थी 'विश्वगुणादर्श' अथवा 'मिरर ऑफ मण्डेन क्वालिटीज़'। यह वेंकटाचारी के संस्कृत प्रवन्ध का अनुवाद था, जो १८२५ में प्रकाशित हुआ। इनकी अगली मौलिक पुस्तक थी, 'बॉयोग्राफिकल स्केचेज़ ऑफ डेक्कन पोयट्स'। यह १८२९ में प्रकाशित हुई। अपने समय में शायद इनको काफी मान्यता मिली थी, क्योंकि इन्होंने अपनी दो पुस्तकें उनकी स्वीकृति पर दो प्रसिद्ध ब्रिटिशों को समर्पित की हैं—वे हैं सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ जज सर एफ० डब्ल्यू० मकेनाटन और गवर्नर जनरल लॉर्ड बिलियम बेण्टिक।

रायल सीमा : आन्ध्र का पठारी भाग। इसमें चार जिले हैं—चित्तूर, कडपा, कर्नूल और अनन्तपुर। यहाँ प्रायः अकाल होता रहता है।

रेड्डी डॉ० सी० आर० (१८८०-१९५१) : मूर्धन्य शिक्षा-शास्त्रज्ञ, जो कभी-कभी राजनीति में भी हिस्सा लेते थे। ये कई वर्ष तक आन्ध्र विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे थे। कुछ समय के लिए वे मैसूर विश्वविद्यालय के भी उपकुलपति रहे। हास्यप्रियता और हाज़िरजवाबी के कारण ये प्रभावशाली वकता भी थे। वे प्रमुख साहित्यिक आलोचक भी थे।

सरकार विनयकुमार (१८८७-१९४९) : बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति, जिन्होंने बंगाली और अंग्रेजी में लिखा और अच्छा लिखा। अर्थशास्त्रज्ञ और समाजशास्त्रज्ञ के तौर पर इनको अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति भी मिली। जब इनकी पुस्तकें अन्य भाषाओं में अनूदित हुईं तो कई विश्व-विद्यालयों की उपाधियाँ भी इन्हें मिलीं।

सर्वज्ञ : इनका वास्तविक नाम 'पुष्पदत्त' था। ये एक ब्राह्मण के एक शूद्र विधवा से उत्पन्न पुत्र थे। इनके उपदेश वेमना के उपदेशों के ही समान हैं। ई० पी० राइस के मतानुसार इनका काल १६०० है, पर निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

शतक : स्वतन्त्र सौ पद्यों का संग्रह, जो प्राय: एक ही छन्द में लिखे जाते हैं। शतक का मुख्य अंश है उसका मुकुट—यानी टेक या पद्य की अन्तिम पंक्ति, जिसमें उस व्यक्ति व देवता का नाम होता है, जिसको सम्बोधित करके पद्य लिखे जाते हैं। मुकुट ही उपयुक्त छन्द का निर्धारण करता है।

स्मिथ विंसेण्ट ए० (१८४८-१९२०) : इण्डियन सिविल सर्वेण्ट। ये सेवा में १८७१ में आए। भारतीय इतिहास और संस्कृति के क्षेत्र में ये करीब पचास वर्ष तक अनुसन्धान करते रहे। इनकी बहुत-सी रचनाओं में अशोक की एक पूरी जीवनी है। 'दि अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया—१९०४' और 'हिस्ट्री ऑफ आर्ट इन इण्डिया एन सीलोन' आदि प्रमुख हैं। इनकी अन्तिम मुख्य पुस्तक थी, 'दि ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया', जो १९१८ में प्रकाशित हुई।

सोमनाथ पोल्कुरिकी : यह तेलुगु, कन्नड़ और संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित और लेखक थे। ये वीरशैवमत के प्रचारकों में मुख्य हैं। 'बसव पुराण' के अतिरिक्त इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं 'पंडिताराध्य चरित्र' और

'अनुभव सार'। ये बसव के शिष्य थे।

श्रीनाथ (१३६५-१४४०) : एक विनोदी, विलासी व्यक्ति; जो राजा-महाराजाओं के मित्र थे और महान् कवि थे। संस्कृत और तेलुगु पर इनका समान अधिकार था। विलास और सम्पन्नता की तड़क-भड़क की ज़िन्दगी के बाद बाकी जीवन इन्होंने बेगानेपन और ग़रीबी में गुज़ारा।

श्रीपति पंडित : शैव मत पर लिखने वाले पहले तेलुगु लेखकों में से एक। बारहवीं सदी के प्रथमार्द्ध में इन्होंने 'शिव दीपिका' पुस्तक लिखी।

श्री शैलं : राष्ट्रीय महत्ता का एक तीर्थ-स्थल। शैव मतावलम्बियों का विश्वास है कि शिव के बारह पवित्र लिंगों में से एक लिंग यहाँ स्थित है। जो यात्री यहाँ आये, उनमें शिवाजी भी थे। अब यहाँ एक बड़ी जल-विद्युत्-योजना कार्यान्वित हो रही है।

टैगोर रवीन्द्रनाथ (१८६१-१९४१) : कालिदास और भवभूति के बाद भारत के सबसे बड़े कवि। साहित्य-सेवा के लिए इनको १९१३ में नोबल पुरस्कार मिला।

तमिलनाडु : तमिलभाषियों का प्रदेश, जो आन्ध्र के ठीक दक्षिण में है। यह कन्याकुमारी तक फैला है। यह दक्षिण के राज्यों में सबसे अधिक समृद्ध है। यद्यपि यह आन्ध्र प्रदेश से क्षेत्रफल में छोटा है, पर इसकी आबादी ३३६८६९५३ (१९६१ की जनगणना के अनुसार) है।

तेलंगाना : सारी तेलुगु भूमि आन्ध्र को यूरोपियनों द्वारा उन्नीसवीं सदी के अन्त तक तेलंगाना कहा जाता था। पर बाद में इसमें कुछ परिवर्तन आया—अब सिर्फ़ हैदराबाद के नौ जिलों को ही तेलंगाना कहा जाता है, जो हैदराबाद रियासत के खत्म किये जाने पर आन्ध्र में मिला दिये गए थे।

तेलुगु : यह आन्ध्र का पर्यायवाची पद है, आन्ध्र की तरह यह प्रदेश, भाषा और निवासी का द्योतक है। इतिहासकार अभी तक यह निर्णय नहीं कर पाए हैं कि आन्ध्र और तेलुगु शुरू में एक थे या दो भिन्न प्रदेश।

तिक्कन्ना : तेरहवीं सदी के कवि और शासक। ये तेलुगु कवियों में सबसे

महान् हैं। 'कवि ब्रह्मा' हैं। महाभारत का चौथे पर्व से लेकर अन्त तक इन्होंने तेलुगु में अनुवाद किया। चूँकि वे दार्शनिक नहीं थे, परन्तु शासक थे, इसलिए इन्होंने 'भगवद्गीता' तो छोड़ दी, पर महाभारत के उन अंशों का, जिनका सम्बन्ध शासन और युद्ध से है, बखूबी अनुवाद किया। जब समीपवर्ती राजा ने इनके राजपोषक मनुमासिद्ध को राज्य से वंचित कर दिया तो वारंगल के सम्राट् गणपति देव की मदद से इन्होंने राज्य-अपहर्ता को भगा दिया।

तिरुवल्लुवर : वे जैन हों या न हों, पर कुरल का लेखक तिरुवल्लुवर निस्सन्देह निम्न जाति के थे। वस्तुतः जिस नाम से आज वे जाने जाते हैं, वह उनका वास्तविक नाम नहीं था। उसका अर्थ है, जो वल्लुवर जाति का है और वल्लुवर उच्च जाति के नहीं हैं। उनका समय अनिश्चित है, भिन्न-भिन्न विद्वानों की भिन्न-भिन्न रायें हैं, ईसा के पूर्व पाँचवीं सदी से तीसरी सदी तक।

वंगुरि सुब्बाराव (१८८६-१९२३) : इन्होंने एक छोटे-मोटे उद्योगपति और व्यापारी के तौर पर जीवन प्रारम्भ किया। फिर ये साहित्यिक अनुसन्धान के क्षेत्र में आये। इनकी प्रकाशित पुस्तकों में वेमना पर एक जीवनी भी है। शतक कवियों पर एक प्रबन्ध और तेलुगु साहित्य का इतिहास।

वीरेशलिंगम् कन्दकूरी (१८४८-१९१९) : आधुनिक भारत के महान् पुत्रों में से एक हैं। धार्मिक और सामाजिक सुधारक। तेलुगु भाषा के लिए इनकी सेवाएँ बहुत अपार और विभिन्न हैं। इन्होंने तेलुगु में पहला उपन्यास लिखा, पहला नाटक, पहला व्यंग्य, पहली जीवनी, पहली आत्मकथा और भी कितनी ही पहली पुस्तकें। साहित्य अकादेमी ने 'भारतीय साहित्य के निर्माता' माला में उन पर एक पुस्तिका प्रकाशित की है।

वेंकट रत्न सररघुपति (१८६२-१९३९) : मूर्धन्य शिक्षा-शास्त्री, सामाजिक सुधारक, धार्मिक उपदेशक, वीरेशलिंगम् के तरुण समकालीन। इन्होंने देवदासियों, अछूतों और निम्न जातियों के उद्धार के लिए विशेष कार्य किया। वे मद्रास विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी थे।

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
54681
Date 8.7.76

साहित्य एकादेमी राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था है, जिसकी स्थापना भारत सरकार ने सन् १९५४ में की थी। यह एक स्वायत्त संस्था है, जिसकी नीतियाँ अकादेमी की परिषद् द्वारा निर्धारित होती हैं। परिषद् में विभिन्न भारतीय भाषाओं, राज्यों और विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि होते हैं। अकादेमी के प्रथम अध्यक्ष थे श्री जवाहरलाल नेहरू और वर्तमान अध्यक्ष हैं डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या।

साहित्य अकादेमी का प्रमुख उद्देश्य है भारतीय भाषाओं की साहित्यिक गतिविधियों का समन्वयन और उन्नयन करना और अनुवादों के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध उत्तम साहित्य को समग्र देश के पाठकों तक पहुँचाना। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए साहित्य अकादेमी ने एक विस्तृत प्रकाशन-योजना हाथ में ली है। इस योजना के अन्तर्गत जो ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं उनकी सूची साहित्य अकादेमी के विक्रय-विभाग से प्राप्त की जा सकती है।